दान-धारा

[पूर्णियाँ जिले में ३१-१-'६१ से ९-२-'६१ तक दिये प्रवचन]

•

विनोबा

•

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन:
राजघाट, वाराणसी

प्रकाशकीय

पू० विनोबाजी ने काशी से असम के रास्ते मे ३१-१-’६१ से ९-२-’६१ तक बिहार के पूर्णियाँ जिले मे ‘दान दो इकट्ठा, बीघे मे कट्ठा’ अभियान के प्रसग मे जो प्रवचन किये, वे प्रस्तुत पुस्तक मे ४ खण्डो मे सकलित है। बिहार की उदारता से गद्गद होकर पूर्णियाँ जिले से विदाई के समय बाबा ने एक शब्द का प्रयोग किया है—‘दान धारा’। वे कहते है कि “गगा की अखड धारा से दान धारा कम महत्त्व की नहीं। दान की यह प्रक्रिया यहाँ की हवा मे ही है।” बीघा कट्ठा अभियान के रूप मे बाबा इस दान धारा को अखड प्रवाहित रखना चाहते है, जिसका अपने-आपम बहुत महत्त्व है। बिहार के लिए तो ये प्रवचन मूल्यवान् है ही, सारे भारत को इनसे उद्बोधन प्राप्त होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

•

अनुक्रम

१. स्वागत-प्रवचन तथा प्रार्थना-प्रवचन

२. शान्ति सैनिकों से

३. ग्राम-स्वराज्य सघन क्षेत्र के कार्यकर्ताओं से

४. कार्यकर्ताओं से

१

स्वागत-प्रवचन
तथा
प्रार्थना-प्रवचन

दिल खोलकर दान दीजिये

अब हम पूर्णियाँ जिला पार कर 'असम' जायेंगे। 'असम' यहाँ से इतना नजदीक है कि यहाँ से पत्थर फेंकेंगे, तो वह 'असम' पहुँच जायगा। बीच में पाकिस्तान आता है। हम उम्मीद करते हैं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच राहें खुल जायँ। परस्पर आवागमन, आना जाना खुल जाय। ऐसे दिन आयेंगे और हम उन्हें लाना चाहते हैं।

पूर्णियाँ में पूर्ण काम हो

हम 'असम' में रहेंगे, तो पूर्णियाँ के नजदीक ही हैं। अभी तो हम पूरब का ध्यान करेंगे। हम आशा करते हैं कि पूर्णियाँ मे आप पूर्ण काम करेंगे। आपका नाम ही बता रहा है कि इस जिले मे कैसा काम होना चाहिए और कितना होना चाहिए। तीन लाख का कोटा था। एक लाख पूरा हो गया, अब दो लाख की देर है। खुश्क जमीन हो, तो बीघे मे एक कट्ठे से काम चलेगा, लेकिन तर जमीन हो, तो बीघे में दो कट्ठा देना चाहिए। जमीन गीली हो तो दिल भी गीला और बड़ा होना चाहिए। हम चाहते हैं कि पूर्णियाँ जिले में ढाई सौ शांति-सैनिक हों। वे दिल से तगड़े और अच्छे सेवा परायण हों। वे जमीन माँगने का काम करें और प्रेम की जमात बनाये। दंगा-फसाद का मौका आये तो मर मिटें, मारे नहीं। हमें जगह जगह, घर घर शान्ति-पात्र रखने हैं, पुरानी जमीन का बँटवारा करना है। ये तीन-चार बातें तीन दिसम्बर के पहले आपको पूरी करनी हैं। हम भारत के सामने हमेशा बिहार का चित्र रखते हैं और बिहार में भी 'पूर्णियाँ' का। यहाँ धीरेन्द्रभाई और वैद्यनाथ बाबू ये डबल इंजन लगे हैं। वैद्यनाथ बाबू जुटाने का काम करते हैं, तो धीरेन्द्रभाई धक्का देकर आगे ले जाने का काम।

भूमिहीनों पर नदियों की भी कृपा !

आज यहाँ हमने देखा, यह 'आश्रम' आपने बनाया है। खुली हवा है। थोडी जमीन भी है। हम चाहते हैं कि ऐसे आश्रम जगह-जगह हों। यहाँ लोग भी प्यार से आते हैं, यह देख हमें उत्साह होता है। सारे बिहार में नमूने का जिला आप बनाइये। यहाँ काम होता है, तो उसका परिणाम चारों ओर—पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बंगाल, असम, सिक्किम, सब पर—होगा। आप यह काम पूरा करने का संकल्प करें, तो यहाँ का प्रेम दूर तक फैलेगा। इसलिए दिल खोलकर दान दीजिये। दान देने से आप रक्षण ही पायेंगे, नुकसान नहीं। बिहार में तो हमने मजा ही देखा। यहाँ कुछ लोगों ने जमीन दान दी, तो नदियों ने भी पाट बदले और उस जमीन को तर बना दिया। गंगा या दूसरी किसी मैया की अकृपा का एक भी किस्सा नहीं हुआ है। शाहाबाद से सिताब-दियारा तक हमने भगवान् की कृपा ही इस कार्य पर देखी। चाहे आप इसे भोलापन मानिये। हिन्दुस्तान के लोगों में यह भोलापन है, मुझमें भी वह है। भले ही आप इसे गलत मानिये। लेकिन लोग श्रद्धा से ही गंगा के किनारे की जमीन भी देने आते हैं। जाहिर है कि भूमिहीनों पर गंगामैया की कृपा है। तुलसीदासजी ने लिखा है, मैंने तो गरीबी ग्रहण नहीं की, लेकिन भगवान् गरीबों की रक्षा करने में मशहूर हैं। अमीर के भी रक्षक व बन सकते हैं, बशर्ते अमीर गरीबों की सेवा करें।

हम चाहते हैं कि इस जिले में इस तरह से व्यापक काम आप करें।

—स्वागत प्रवचन

मौवाल्पोडा
२१-'६१

'हाथ दिये कर दान रे' : २ :

हमने बिहार में अपना कार्यक्रम जाहिर किया है। 'राम लक्ष्मण-जानकी, जय बोलो हनुमान की' इस मंत्र में हमारा पूरा कार्यक्रम आ जाता है। चरखा, तकली, हाथ कुटा चावल, गन्ने का गुड़ ये

हमारे 'रामजी' हैं। धनुष पींजने का काम धनुर्धारी 'राम' करेंगे। आप जानते ही हैं कि सीताजी मिट्टी से निकली थीं। तो यह भूमिदान का काम 'सीताजी' हैं। हम चाहते हैं कि बेकार तालीम न हो, काम के साथ ज्ञान और ज्ञान के साथ काम हो। इसका नाम है—नयी तालीम और यही लक्ष्मणजी हैं। और हनुमान् हैं शांति-सेना। पीला साफा पहने शांति-सैनिक हमारे हनुमान् हैं।

गांधी का काम पूर्णियाँ मे पूरा हो

हमें बडी खुशी हुई कि दस हजार की बस्ती पूर्णियाँ मे एक-एक आश्रम बन रहे हैं। ऐसे ढाई सौ आश्रम पूर्णियाँ जिले में बनें। वहाँ शांति-सैनिक हो। ढाई सौ सैनिक गाँव गाँव पहुँचें, लोगों की शिकायतें सुनें, भूदान प्राप्त करें और बाँटें। एक एक आश्रम मे तीन-तीन आदमी हों, जो *अपने-अपने क्षेत्र मे घूमने का काम करे। कुल पूर्णियाँ जिले में पूर्ण काम* हो, यही एक शब्द इस जिले मे हम इस्तेमाल कर रहे हैं। गांधीजी का कुल काम पूर्णियाँ मे पूर्ण होगा, तो यह जिला एक सिरे पर होने पर भी हिन्दुस्तान के बीच आ जायगा।

यह काम शान्ति-सैनिक करें

श्री देवरभाई ने लिखा था कि "इस जिले में तरह-तरह के काम करनेवाली संस्थाएँ हैं, लेकिन भूमि-हीन मजदूरों की तरफ देखनेवाला कोई नहीं है।" आखिर यह काम कौन अपनायेगा? यह काम शांति सैनिकों को करना चाहिए। गाँव गाँव के भूमिहीन और भूमिवान् एक हों। यदि योजना शक्ति और श्रम शक्ति एक हो जाय, तो गाँव का किला मजबूत बनेगा, गाँव में लक्ष्मी बढ़ेगी। इसलिए हमने जाहिर किया : "दान दो इकट्ठा, बीघे में कट्ठा।" गाँव का आपस में प्रेम बने। गाँव में सङ्कल्प हो कि खादी ग्रामोद्योग तथा शांति-सेना का काम करेंगे, बहनों की सेवा करेंगे, रामायण का प्रचार करेंगे।

सर्वोदय-पात्र का काम आसान

सर्वोदय-पात्र का काम आसान है। मुट्ठीभर अनाज रोज डालने में

कोई कठिनाई नहीं होती है। वैसे मुट्ठीभर अनाज तो चिड़ियाँ यों ही खा जाती हैं। एक दिन हम घूमने जा रहे थे। सुबह का वक्त था। मचान पर किसान बैठा था। हमने देखा, खेत में चिड़ियाँ फसल खा रही थीं। हमने पूछा : "अरे भैया, तुम जागते हो न? चिड़ियों को उड़ाते क्यों नहीं?" उसने कहा : "सुबह का वक्त है, खाने दो। उनका भी फसल पर हक है। राम प्रहर है, खाने दीजिये।" मुझे लगा कि यह किसान उपनिषद् बोल गया। परमेश्वर का शब्द वह बोला। यह है हिन्दुस्तान के किसान के दिल की उदारता। वह विश्वास करता है कि इस तरह पक्षी उसकी फसल खायेंगे, तो उससे बरक्कत ही होगी, नुकसान नहीं। जो गाया की चिंता करते हैं, वे क्या भूमिहीनों की परवाह नहीं करेंगे? लेकिन माँगनेवाले चाहिए। प्रेम के हक से माँगो। हमारा दावा प्रेम का ही हो। गंगा हमें यही सिखा रही है कि तुम देते जाओ। भगवान् की कृपा और गंगा की कृपा स्पष्ट है। जो इसे नहीं देखता, वह अन्धा ही है। देनेवाले का कभी नुकसान नहीं होता। 'हाथ दिये कर दान रे।' बन्दरों को भगवान् ने हाथ दिये हैं। लेकिन वे छीनना जानते हैं, पेड़ को उखाड़कर फेंकना जानते हैं। उनके हाथों को इतना ही मालूम है। उनके हाथों को देने की विद्या हासिल नहीं है। जिस किसीको भगवान् ने थोड़ी-सी दौलत दी है, उसे दूसरे को देना चाहिए। आखिर, इस दुनिया में कब तक रहना है? तुलसीदासजी कहते हैं : 'अजहुँ तोहिं तजैंगे पामर, तू न तजै अब ही तें'। इसलिए आसक्ति छोड़ो। तुम इसे नहीं छोड़ोगे, तो ये तुम्हें अवश्य ही छोड़ देंगे।

'काज कहा नर तनु धरि साजा'

हम यह नहीं कहते हैं कि आसक्ति छोड़कर बाबा के पीछे चलो। जैसे मधुमक्खी फूल को तकलीफ दिये बिना थोड़ा सा रस ले लेता है, वैसे ही बाबा मधुमक्खी है। वह आपसे थोड़ा ही लेना चाहता है, ज्यादा नहीं। आपका और भूमिहीनों का प्रेम बढ़े, यही वह चाहता है। एक हाथ से देना है और हजार हाथ से पाना है। भगवान् देता है पचास-

गुना। भगवान् व्यापारी नहीं है। वह भर-भर के देता है। आप एक कट्ठा देंगे, तो भर भर के पायेंगे। 'काज कहा नर तनु धरि साजा।' नर-देह सार्थक हो, इसलिए देना चाहिए। बीघे में कट्ठा आप नहीं देते हैं, तो होगी 'ठट्ठा'।

हम धर्म सिखाने आये हैं

आज ही हमने एक दान वापस लौटाया, क्योंकि वह बीघे में कट्ठे के हिसाब से नहीं दिया था। हम धर्म का काम कर रहे हैं। अगर आश्रम के लिए जमीन लेते, तो आपका उपकार मानते और जितनी जमीन आप देते, उतनी ले लेते। लेकिन हम तो भूमिहीनों का हक माँगते हैं और धर्म सिखाने आये हैं। यही समझाने के लिए आज हमने वह दान वापस लौटाया है।

सावाझोड़ी — प्रार्थना-प्रवचन
२१-५-'६१

लोक-जीवन में एकरस हों : ३ :

हमें कोई आशा नहीं थी कि इस गाँव मे हम इतनी जल्दी आ सकेंगे। धीरेनभाई इसी साल यहाँ आये हैं। अभी एक साल भी पूरा नहीं हुआ है। हम 'असम' के रास्ते पर हैं और खुशी की बात है कि यहाँ हमारा आना हुआ।

यह हमारी आश्रम-यात्रा

कार्यकर्ताओं ने और हमने भी सोचा कि इस यात्रा मे हमें अपने आश्रम देखते जाना चाहिए, इसलिए यह हमारी आश्रम यात्रा चली है। साधना केन्द्र, समन्वयाश्रम, सोसोदेवरा, खादीग्राम—जहाँ पहले धीरेन-भाई रहते थे और जहाँ अब राममूर्तिजी रहते हैं—इन सब आश्रमों मे हमारा जाना हुआ। उसके बाद हम यहाँ आये हैं। थोड़े दिन में हम 'रानीपतरा' आश्रम जायेंगे। कल भी एक छोटा सा आश्रम हमने

देखा। हमसे कहा गया कि दस हजार की आबादी की बस्तियों में एक-एक शान्ति सैनिक हो और उसका आश्रम हो, यह तय किया गया है। उसके अनुसार कुछ आश्रम जिले में बने हैं। अगर जिलेभर में ऐसे सौ-दो सौ आश्रम बनते हैं, तो विचार पहुँचाने का बहुत सुन्दर साधन बनेगा।

सर्वजनाधार = परमेश्वर का आधार

धीरेनभाई इस खयाल से यहाँ आये हैं कि लोक जीवन में एकरस हो जायँ। सर्व-जन-आधार यानी परमेश्वर का आधार रहे। परमेश्वर को हम जन-रूप में देखते हैं। उसकी सेवा हम करेंगे। वह जो कुछ खिलायेगा, हम खायेंगे, वह खुद भूखा होगा, तो हम भी भूखे रहेंगे। वह भरपेट खायेगा, तो हम भी भरपेट खायेंगे। यानी योग क्षेम का इन्तजाम जनतारूपी भगवान् करेगा, ऐसा सोचकर वे यहाँ आये हैं। इसमें परीक्षा उनकी नहीं, आपकी-हमारी हो रही है। जब कि एक निश्चय करके वे यहाँ आये हैं, तो उनके आसपास के जवानों को मस्ती में खपना चाहिए।

कार्यकर्ता गुणी हों

कुछ दिन पहले एक जवान से हमारी बातें हुईं। 'आगे वह क्या काम करेगा' इस पर चर्चा हुई। हमने उससे कहा कि "अगर कुछ कठिन जिन्दगी बसर करनी है, तो धीरेनभाई से तुम्हारा परिचय है ही, वहीं जाओ। हम यह नहीं चाहते कि किसी कार्यकर्ता की ताकत टूटे या वह कमजोर बने। हम सबको हिम्मत देना चाहते हैं।" उस जवान ने वही सोचा और यहाँ आने की उसने हिम्मत की है। हम चाहते हैं कि ऐसे पचासों कार्यकर्ता लोगों में घुल-मिल जायँ। लोगों के लिए मर-मिटने की तैयारी रखें, तो वे खमीर का, यानी जोरन का काम करेंगे और दूध का दही बनायेंगे। इस तरह सोचकर जो यहाँ आयेंगे, वे समाज को अच्छी चीज देने के लिए ही आयेंगे। गरीबी में निभना एक गुण है, सादगी से रहना भी एक गुण है और आपत्ति में भी

भगवान् का नाम लेकर जूझना एक गुण है। ये सब गुण कार्यकर्ता में होने चाहिए। देहातों में अक्सर हम देखते हैं कि कहीं किसीको कुछ बीमारी हुई, तो फौरन वे डॉक्टर के पास नहीं पहुँचते। ये सब गुण हमें सीखने चाहिए। गुणों की लेन-देन करनी होगी।

अशिक्षित शिक्षित बनें, शिक्षित अशिक्षित

इसका मतलब यह नहीं कि हममें गुण ही गुण हैं। गुण-दोष सबमें होते हैं। जो यहाँ आते हैं, त्याग की भावना से आते हैं। उनकी लालसा होनी चाहिए कि अपने गुणों का लेन-देन करते रहें। हमें अशिक्षितों को शिक्षित और शिक्षितों को अशिक्षित बनाना होगा। शिक्षितों के पास नाहक ज्ञान ज्यादा होता है, उसे वे छोड़ें और अशिक्षितों के पास पुराने गलत खयाल होते हैं, वे भी उसे छोड़ें, भूलें। दोनों के पास छोड़ने तथा रखने की चीजें हैं।

यहाँ बाहरी शासन की जरूरत न पड़े

अभी लोग बोल रहे थे कि 'विश्व का मंत्र जय जगत्'। इस तरह का व्यापक ज्ञान देहात के लोगों में हो। यह सब हमें करना है। इसलिए धीरेनभाई यहाँ आये हैं। हमें यह जरूर इच्छा होती है कि ऐसे स्थान में हम रह जायें और सब मिलकर सारा समाज ऊपर उठायें। यदि यहाँ बाहरी शासन की जरूरत नहीं होगी, तो दुनियाभर के लोग यहाँ देखने आयेंगे।

बलिया —स्वागत-प्रवचन
१२-'६१

हमारे गाँव स्वावलम्बी बनें : ४ :

[प्रवचन की शुरुआत में 'सबसे ऊँची प्रेम सगाई' भजन गाया गया।]

लोगों की ताकत बढ़ाने के तीन प्रयोग

अभी आप लोगों ने और हमने महात्मा सूरदास का एक सुन्दर

भजन सुना। भजन में प्रेम की शक्ति का जिक्र किया गया है। भगवान् श्रीकृष्ण 'हस्तिनापुर' गये थे। बातचीत के लिए कौरव-पाण्डवों के बीच तैयारियाँ चल रही थीं। भगवान् कृष्ण कहाँ ठहरें, इसके लिए जगह ढूँढने की चर्चा चली। धृतराष्ट्र की आज्ञा से बादशाह का राज-महल तैयार था। लेकिन भगवान् ने कहा : "नहीं, हम विदुर के घर ठहरेंगे। गरीब के घर जायँगे।" वहाँ उन्हें खाने में सिर्फ तरकारी मिली और वह उन्होंने खायी। क्यों? इसलिए कि विदुर की महिमा को, भक्त की शक्ति को भगवान् बढ़ाना चाहते थे। भगवान् के लिए जगह की कमी तो थी नहीं। राजमहल ही उनके लिए रखा था। लेकिन अगर वे महल में ठहरते, तो भक्त की महिमा नहीं बढ़ती। भगवान् की महिमा तो लोग गाते ही हैं। लेकिन विदुर के घर वे रहे, तो सब लोग समझ गये कि विदुर की भक्ति की महिमा है। इस तरह भक्त की ताकत बढ़ाने का काम भगवान् ने किया।

गोलमेज सम्मेलन (राउण्डटेबल-कान्फ्रेन्स) के लिए महात्मा गांधी इंग्लैण्ड गये थे। उनके लिए भी वहाँ महल तैयार था। वे तो हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि बनकर गये थे। बादशाह ने उनसे बातें कीं। लेकिन गांधीजी ने महल में रहना कबूल नहीं किया। लंदन में जो गरीब बस्ती थी, जिनकी उपेक्षा होती थी, जो लंदन का सबसे गरीब हिस्सा था, वहाँ वे ठहरे। इसमें उनका हेतु यही था कि गरीबों की ताकत बढ़नी चाहिए।

यही काम अभी धीरेनभाई यहाँ कर रहे हैं। लोग उनसे पूछते हैं कि धीरेनभाई का सम्बन्ध तो सरकार से है और दूसरे बड़ों से भी। वे कहीं से भी पैसा ला सकते हैं। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने लोगों के आधार पर रहने का तय किया है। यह इसलिए नहीं कि लोगों पर कोई भार पड़े, बल्कि इसलिए कि लोगों की ताकत बढ़े। लोगों की ताकत बनानी है, तो लोगों में घुल मिल जाना चाहिए। धीरेनभाई यह कोशिश कर रहे हैं। एक जमाना आयेगा, जब लोग इसके भी गाने गायेंगे।

यह गुलाम गाँवों का आजाद देश न बने

सन् १९१६ में हम गांधीजी के पास थे, तभी वे कहते थे कि "हमें बिलकुल देहात में बस जाना है। देहातों की ताकत कैसे बढ़े, यह हमें सोचना है।" हम उनके आश्रम में ४५ साल पहले थे। उनकी यह सूझ कितनी महत्त्व की थी, कितनी कारगर थी, उसका अब हमें अनुभव हो रहा है। लोगों के पास जाकर उन्हींके साधनों से दौलत और ताकत कैसे बन सकती है, यह हम बताना चाहते हैं। ऊपर से सरकार की मदद मिल सकती है, लेकिन इससे गाँव के लोग गुलाम बनेंगे। तब यह गुलाम गाँवों का एक आजाद देश होगा। आज हर बात में लोग सरकार की तरफ ताकते हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा, तो लोग देखते-देखते गुलाम बन जायँगे। देश कभी आधार नहीं रख सकेगा। दिल्ली और पटना-वालों का ध्यान लड़ाई में ही रहेगा। गाँव के लोग क्या देख पायेंगे? देश को कौन बचायेगा? इसलिए स्वराज्य में यह जरूरी है कि गाँव-गाँव अपनी ताकत पर खड़ा हो। यदि गाँव की ताकत नहीं बढ़ी, तो लोग आलसी बने रहेंगे और गाँव का नुकसान ही होगा। सरकार भी जितनी मदद हर गाँव को दे सकती है, देगी। जहाँ धीरेनभाई बैठे हैं, वहाँ पैसे का प्रवाह बहता आयेगा। जिनको जमीन नहीं मिली है, उनको हम जमीन बाँट दें, तो वातावरण अच्छा बनेगा।

दौलत कैसे बढ़े ?

धीरेनभाई ने कहा कि मेरी खोज चल रही है। दौलत तीन बातों से बनती है। एक, अपने दोनों हाथों का उपयोग करना सीखें। दूसरी, प्रेम से दोनों हाथ जोड़े जायँ और तीसरी, सबकी अक्ल का उपयोग हो। सबकी अक्ल, सबका प्रेम, सबके हाथ। आज तो हाथ एक दूसरे को काटते हैं, तो ताकत बढ़ने के बजाय घटती है।

सरकार को आधार न बनायें

आज देश में एक दूसरे की ताकत एक-दूसरे से टकरा रही है,

इसलिए देश को ताक़त का लाभ नहीं मिल रहा है। मान लीजिये, आपकी १० सेर ताक़त है और मेरी १५ सेर। जब ये दोनों मिलेंगी, तभी देश को लाभ होगा। यदि दोनों टकरायेंगी, तो १० सेर के बजाय ५ सेर बचेंगी। यदि दोनों जुट जायँ, तो देश को २५ सेर का लाभ होगा। कुछ लोग हाथ पर हाथ धरे पड़े रहते हैं और बड़े बड़े लोग श्रम टालने की कोशिश करते हैं। दोनों हाथों का उपयोग नहीं करते। सबकी बुद्धि इकट्ठा होगी, तो दौलत बढ़ेगा, मानव धर्म बढ़ेगा। इसीलिए धीरेनभाई यहाँ आये हैं। हमारी भी इच्छा है कि पूर्णियाँ जिले में पूर्ण काम हो। जवान इसमें कूदें। पीले साफे पहनकर गाँव गाँव और घर घर जाकर जो सेवा करनी पड़े, करें। जिले में ऐसे ढाई सौ कार्यकर्ता यदि खड़े हो जायँ, तो ग्राम स्वराज्य की घोषणा कर सकते हैं। सरकार की मदद मिलेगी, लेकिन मुख्य आधार हमारा अपना होना चाहिए। सरकार को आधार न बनायें। वर्धा जिले में हम काम करते थे। एक गाँव में ग्राम-स्वराज्य की बातें हो रही थीं। वहाँ हमारा काम देखकर वर्धा के जिलाधिकारी ने कहा कि हम भी आपको मदद देना चाहते हैं। मैंने उनसे कहा . कुल वर्धा जिले के हर गाँव को जितनी मदद आप दे सकते हैं, उतनी ही दीजिये। बाकी सब काम गाँववाले ही करेंगे।

लोक-शक्ति जाग्रत हो

हम चाहते हैं कि लोक शक्ति जाग्रत हो, लोगों में प्यार और विश्वास बढ़े। उसके लिए हमने छोटी सी तरकीब बतायी। हरएक को थोड़ा सा त्याग करने का मौका मिलेगा। जिसके पास पाँच बीघा जमीन है, वह पाँच कट्ठे का दान दे। बची ज़मीन में पूरी खाद डालने से, पूरी मेहनत करने से उतनी ही फसल आयेगी। इसमें किसीका कोई नुकसान नहीं होगा। गाँव में सबका प्रेम बढ़ेगा। आज गाँव की ताकत नहीं बन रही है। इन दिनों राजनीतिक दल भी गाँव-गाँव में टुकड़े करते हैं। एक-दूसरे के खिलाफ लड़ते हैं। जिस गाँव में फूट पड़ गयी,

वह गाँव कभी तरक्की नहीं कर सकता। हम इसी फिक्र में हैं कि सबके हृदय में प्रेम जगे। समानता तो धीरे धीरे होगी। इसलिए हम उसकी माँग नहीं करते। सबके दिल में प्रेम फौरन होना चाहिए। इसके लिए पानी से सबक लें। जिस तरह कहीं गड्ढा हो जाय, तो पानी की बूँदें उसे भरने के लिए फौरन दौड़ पड़ती हैं और पानी की सतह कायम रहती है। चावल के ढेर में गड्ढा पड़ेगा, तो उसे भरने के लिए चावल थोड़े ही अन्दर जायगा? चावल के थोड़े से दाने उसे भरने के लिए दौड़ेंगे, लेकिन उससे गड्ढा पूरा नहीं होगा। गाँव में किस तरह काम करना चाहिए, इसकी यह मिसाल है। आज ये गड्ढे बढ़ रहे हैं। हमें इन्हें भरना है। इसलिए हमने बीघे में कट्ठे की बात कही है।

मसला भगवान् ही हल करेंगे

सबसे पहले गाँव में प्रेम बनाने की बात है। हम चाहते हैं कि कुल बिहार में पहले प्रेम पैदा हो। उसके पीछे मसला हल होगा। आखिर मसला कौन हल करेगा? भगवान् ही कर सकते हैं। श्रीबाबू गये। हम भी जायँगे। हमारा ही मसला हल हो जायगा। आज भी हमारा मसला इस गाँव में हल हो जा सकता है। तब तो 'मन की मन ही माँहि रही'। मतलब, मसला हल करनेवाले भगवान् हैं।

श्रीबाबू की याद

श्रीबाबू गये। बिहार में वह सबसे बड़ी हस्ती थी। उन्होंने ४० ४५ साल लगातार देश का काम किया, बावजूद बुढ़ापे के और बीमारी के। वे बहुत भक्तिवान् और श्रद्धावान् थे। रोज सुबह दो घंटे पूजा में बिताते थे। उनके हृदय में गरीबों के लिए हमदर्दी थी। गरीबी का वर्णन करते हुए उनकी आँखों में आँसू आ जाते थे। उनका और हमारा स्नेह सम्बन्ध था। इस बार जब हम बिहार में आये, तो पहले ही दिन वे हमसे मिलने के लिए आये थे। डेढ़ घंटा दिल खोलकर बातें कीं। दिल छिपाना वे जानते ही नहीं थे। उनका हृदय साफ था।

स्वच्छ तालाब में पानी के नीचे कंकड़ भी दीखते हैं, ऐसा ही उनका स्वच्छ दिल था।

हमारे लिए तो उन्होंने जो किया, वह हम भूल नहीं सकते। चांडिल में हम बीमार थे। उस वक्त हम दवा लेना नहीं चाहते थे, वह हमारा सिद्धांत था। हमारी बीमारी बढ़ रही थी। श्रीबाबू हमसे मिलने आये। उनको बहुत दुःख हुआ। उन्होंने कहा : "आप हमारे प्रान्त में आये हैं। आपकी बीमारी बढ़ रही है और आप दवा नहीं ले रहे हैं, यह हमसे बरदाश्त नहीं होता।" यह कहते समय उनकी आँखों में आँसू थे। वे आग्रह न करते, तो हमने दवा न ली होती। उनके आँसू हमने देखे और दवा लेना स्वीकार किया।

अभी हाल की बात है, जब वे मुझसे मिलने आये, तो मैंने बीघे में कट्ठावाली बात उनके सामने रखी। उनका आशीर्वाद हमें मिला था। उनके दिल में यह बात जँच गयी थी। यदि वे रहते, तो उनकी मदद हमें बहुत मिलती, लेकिन वे गये, फिर भी उनकी वासना यहाँ पड़ी है। वे चाहते थे कि यह काम हो।

आखिर हम भी जानेवाले हैं। इन आठ-दस सालों में हमारे कई साथी गये। किशोरलालभाई, जाजूजी, गोपबाबू, लक्ष्मीबाबू, यदुनाथ सिंहजी, कुमारप्पा, इस तरह सभी साथी जा रहे हैं। सबको जाना ही है, इसलिए हमने कहा कि मसला तो भगवान् ही हल करेगा, लेकिन हम हमारे जीवन में कोशिश करते रहें।

बड़हिया —प्रार्थना प्रवचन
१-२-'६१

हमारा सम्पर्क आता है। पुराने जमाने में हिमालय अलंघ्य माना जाता था। हिमालय दो देशों को अलग करता था। पहाड में रास्ते होते थे, जहाँ से व्यापारी और धर्म प्रचारक जाते थे। बौद्ध लोग भी इसी तरह आते जाते थे। भगवान् बुद्ध हिन्दुस्तान के एक महान् पुरुष थे। वे अकेले ही गये। वहाँ जाकर उन्होंने लोगो को धर्म विचार समझाया। बुद्ध के साथ धर्म और अहिंसा गयी। तलवार नहीं गयी, व्यापार नहीं गया। इधर चीन में धर्म प्रचार में तलवार आयी और वहाँ साम्राज्य बना। हमारा धर्म वहाँ गया, तो उसके साथ प्रेम भी गया। इसका परिणाम अच्छा ही हुआ।

अन्दरूनी ताकत बढाने का प्रयोग

किन्तु आज विज्ञान के युग में हिमालय ने दोनों देशों को अलग करने का काम करने से इनकार कर दिया है। इस जमाने में दोनों का संपर्क जरूरी है। वह संपर्क चाहे प्रेम से हो या द्वेष से। आज देश देश का सम्पर्क होना लाजिमी है, फिर वह द्वेष का हो या प्रेम का।

नरम जीवन की आदत रही, तो आप लडाई नहीं लड सकेंगे, न हिंसा की और न अहिंसा की। अहिंसा की शक्ति से राष्ट्र की शक्ति बढानी है, तो सरकारी सेना बढाने की जरूरत नहीं पडेगी और सीमा की सेना काफी होगी। अन्दर की ताकत बढेगी, तभी हिन्दुस्तान का उद्धार होगा। इसके लिए क्या करें? गाँव की ताकत बढायें। गाँव की ताकत बढाने के लिए जरूरी है कि गाँव में कोई दुःखी न हो, कोई भूमिहीन न रहे, इसीलिए हमने बिहार को यह नया प्रयोग दिया है।

सियासी पार्टियों से सावधान !

सियासी पार्टियाँ गाँवों में फूट डालती हैं। इससे देश का अत्यन्त नुकसान होता है, इतनी भी अकल वे नहीं रखतीं। चुनावों के लिए आग लगाने चली जाती हैं। इसलिए हम कहते हैं कि सियासी पार्टियों से सावधान! राजनीतिक पार्टियों में झगडा है, भाषा में झगडा है, जाति पाँति में झगडे हैं। यहाँ तक कि ग्राम पचायत में भी झगडे होते हैं।

परिणामस्वरूप गाँव की ताकत कमजोर होती है। ग्राम-भावना नहीं होती है कि गाँव एक परिवार है। यह ग्राम-भावना निर्माण करनी होगी। एक बाजू ग्राम भावना हो, दूसरी बाजू में जय जगत्।

जमीन के टुकड़े हो जायँ, पर दिल जोड़िये

आप लोगों ने २२ लाख एकड़ पुरानी जमीन दी है। उसके बँटवारे का काम है। वह पूरा होना चाहिए। हमने नया मन्त्र दिया है, 'बीघे में कट्ठे की माँग करो और सबसे दान लो'। जितने जमीन मालिक हैं, सब बीघे में कट्ठे के हिसाब से दान दें और उसके साथ साथ जमीन का बँटवारा भी करें, तो मालिक और मजदूरों में प्रेम भाव पैदा होगा। सवाल होता है कि इससे जमीन के टुकड़े होंगे? मै कहूँगा कि सरकार कानून बदले। किसान मर जाता है, तो उसके लड़कों मे जमीन का बँटवारा होता है। फिर अब नये कानून में लड़कियों का भी जमीन पर हक माना गया है। इस गाँव की लड़की उस गाँव में जायगी और उस गाँव की लड़की इस गाँव में आयेगी, तो उसका भी हक होगा। इस तरह अब 'सेन्ट्रीमेण्ड लार्डशिप' बढ़ेगी और जमीन के टुकड़े भी होंगे। फिर टुकड़े बनने का आक्षेप सिर्फ भूदान के लिए ही क्यों? सरकार सहकारी कानून बनायेगी, तो भूदान की भी जमीन उसमें आयेगी। भूदान से जमीन के टुकड़े पड़ते हैं, तो पड़ें। लेकिन हमारा उद्देश्य दिल जोड़ने का है। हम जमीन का दान देते हैं, अपने हिस्से में से टुकड़ियों को देते हैं, तो प्रेम बढ़ता है, दिल जुड़ता है।

हम शांति के लिए मर मिटने को तैयार हों। एक दिन मरना तो है ही, फिर मौके पर क्यों न मरें। मौत तो भगवान् जब चाहता है, आती है।

दूसरी बात यह सिखानी होगी कि आपस मे वाद-विवाद पैदा हो, तो उससे क्षोभ पैदा नहीं होना चाहिए। समाज के सामने अक्षोभ वृत्ति से अपनी चीज रखनी चाहिए। यह सारी जिम्मेदारी शांति सेना को उठानी पडेगी।

चार बुनियादी बातें

इस तरह हमने चार बुनियादी बातें कहीं, जो सारे ग्राम स्वराज्य की नींव हो सकती हैं: १. जो भूमिहीन हैं, उनको जल्द से जल्द जमीन मिलनी चाहिए। गाँव का एक परिवार बन जाना चाहिए। २. गाँव में ग्रामोद्योग खडे किये जायँ और बेकारों को काम दिये जायँ। ३. गाँव की रक्षा के लिए शांति सेना खडी करें और नित्य नैतिक विचार सिखायें। ४. गाँव के झगडे गाँव के बाहर न जायँ। बापू कहते थे कि मनुष्य का अभिमान खतम हो गया, तो रामराज्य बन गया। ग्रामराज्य में झगडा हो, तो फैसला गाँव में ही हो, बाहर न जाय। रामराज्य में तो झगडा होगा ही नहीं।

कुकरौन —स्वागत प्रवचन
२ २-'६१

पैसे की खेती, अक्ल की खोती : ६ :

आज बडा आनन्द आ रहा है। भगवान् की कृपा बरस रही है। हम सब उसमें नहा रहे हैं। हम चाहते हैं कि इस गाँव में पूरा प्रेम प्रकट हो। उसके लिए आपको, गाँव को एक परिवार बनाना पडेगा।

पक्का माल गाँव में बने

आज होता यह है कि गाँव के लोग सारा पक्का माल बाहर से खरीदते हैं। खरीदने के लिए पैसा चाहिए, तो फिर तम्बाकू भी बाते

हैं। हम चाहते हैं कि आपके गाँव में गन्ना होता है, तो गुड भी यहाँ बने। कपास होता है, तो कपडा भी गाँव में बने। गाँव में मिट्टी है, तो मिट्टी के बर्तन, घडे आदि गाँव में ही बनें। गाँव गाँव स्वावलम्बी हों। ऐसे स्वावलम्बी आजाद गाँवों का आजाद देश मजबूत होगा। यह सब सोचने की बात है। लेकिन आज हम देखते यह हैं कि मुजफ्फरपुर जिले में, जो गंगा नदी के किनारे पर है, तम्बाकू बोयी जाती है। गुटूर जिले में बहुत अच्छी जमीन है, गोदावरी का किनारा है, वहाँ भी तम्बाकू बोते हैं। गुजरात मे खेडा जिले की बहुत अच्छी जमीन में तम्बाकू बोयी जाती है। इस तरह होता है, तो पैसे को ज्यादा कीमत दी जाती है। जहाँ पैसा आया, वहाँ मनुष्य अक्ल और ममत्व खोता है। इस पर गाँव के हित की दृष्टि से आपको सोचना चाहिए।

यह दिव्य अभिषेक

इस बारिश में आपको और हमें बहुत आनन्द हो रहा है। इसे हम परमेश्वर की कृपा मानते हैं। बारिश में हम नाचे-कूदे हैं, भजन किया है, फिर भी कोई तकलीफ नहीं हुई। हम बीमार नहीं हुए। आसमान से जो बारिश होती है, उसमें बडी ताकत होती है। जब कभी राजाओं के अभिषेक होते हैं, तो उसके लिए दस-बीस नदियों का पानी लाया जाता है। लेकिन यह तो सीधा अभिषेक है, दिव्य अभिषेक है। आप और हम तो आज बादशाह की हैसियत में आ गये हैं। इस पानी में मिट्टी मिली नहीं होती। नदी के पानी में मिट्टी होती है। यह तो स्वच्छ, शुद्ध अभिषेक है, इसलिए छाता बन्द कर इसका आनन्द लो।

[इसके बाद बाबा ने सभा को एक भजन सिखाया और कहा कि हम सब गायेंगे और जरा नाचेंगे। राजाराम, राजाराम, सीताराम, सीताराम। राम लक्ष्मण जानकी, जय बोलो हनुमान की।]

बिहार मे हमारी यह दूसरी पद-यात्रा है और पूर्णियाँ में तीसरी बार आ रहे हैं। यहाँ कुल पचीस हजार एकड जमीन बँटी है। हर आदमी के पीछे एक एकड भी मानें, तो पचीस लाख एकड से कम जमीन नहीं होगी। उसमें से पचीस हजार एकड बँटी, तो यह एक प्रतिशत रहा। इसमें दरभंगा महाराज की भी जमीन है। लेकिन इस वक्त हम जनता की ताकत बढ़ाना चाहते हैं। इसलिए कोई दिये बिना न रहे। जनता ने प्रेम से मसला हल किया, यह आप दुनिया को दिखा दें। बीघे में कट्ठा के हिसाब से पूर्णियाँ में पचीस हजार एकड जमीन होगी। फिर पचीस लाख एकड जोत की जमीन है। इसमे सवा लाख एकड जमीन बँटेगी, तो बीसवाँ हिस्सा मिलेगा। उससे ताकत पैदा होगी। थोडा-थोडा बहुतो ने दान दिया, तो जिसे हम नारायण शक्ति कहते हैं, वह प्रकट होगी। इसलिए जब से हमने बिहार में कदम रखा, हमने बीसवाँ हिस्सा माँगना शुरू किया है।

यह बच्चे की माँ से माँग

लोग पूछते हैं कि "आप इतना नीचे क्यो उतरे ? पहले छठा हिस्सा माँगते थे, अब तो आप बीसवाँ हिस्सा माँगने लगे !" हमने कहा : "बच्चे को उठाने के लिए माँ नीचे झुकती है। हमे जनता को ऊपर उठाने का काम करना था और काम को आगे बढ़ाना था। हम आशा है कि इससे कार्यकर्ता मिलेंगे और उनके जरिये जमीन मिलेगी। जो जमीन देगा, वह कार्यकर्ता होगा। अगर जमीन नहीं दे सका, तो वह कार्यकर्ता नहीं हो सकेगा। दस हजार ग्राम पचायत के सभासद हैं, ऐसे सभासद ही अक्सर जमीन के मालिक होते हैं। ये दस हजार लोग बीघे मे कट्ठा जमीन देते हैं, तो दस हजार कार्यकर्ता हमें मिलेंगे। वे इस क्षेत्र में जमीन माँग सकते हैं। जमीन माँगने के लिए उनकी जबान खुल सकती है। सो दो सौ कार्यकर्ता हमे मिले हैं। अगर हमें पंचायत के लोग

मिलते हैं, तो बहुत बडा काम इस जिले मे होगा और लोक-शक्ति प्रकट होगी। लोगों को ऊपर उठाना है, तो हर मालिक स दान मिलना चाहिए। प्रेम से ही दान मिलना चाहिए, दड से या कानून से नहीं। बच्चा माँ के पास कुछ माँगता है। उस प्रेम की माँग को माँ 'ना' नहीं कह सकती। उसके पास जो, है वह उसे दे देती है। उसके पास नहीं है, तो उधार माँगकर देती है। प्रेम से दान नहीं मिलेगा, यह कहना मनुष्य स्वभाव के खिलाफ जाना है। इसलिए हम आशा करते हैं कि पूर्णियाँ में पूर्ण काम होगा।

सहरा —स्वागत प्रवचन
२-२-'६१

'दान दो इकट्ठा, बीघे में कट्ठा' : ८ :

अभी यहाँ लोगों ने हमें मान पत्र दिया, जो पढ़ा नहीं गया। हमें मान-पत्र नहीं, दान पत्र चाहिए। बिहारवालों ने तय किया था कि बत्तीस लाख एकड जमीन प्राप्त करेंगे। उनका यह प्रस्ताव पूरा नहीं हुआ है। अभी दस बारह लाख एकड जमीन चाहिए। इतने दान पत्र हमें दें, तो हम ही कुल बिहार को मान पत्र देंगे कि बिहारवालों ने बहुत अच्छा काम किया है।

अभी एक भाई मिले थे। कह रहे थे कि दरभंगा के महाराज की जमीन जो वितरित की गयी थी, उस पर काश्त हुई और फसल भी आयी। लेकिन देनेवाले मालिक ने कहा कि हम मालिक हैं, हम अपनी नहीं देंगे। वह झगडा कोर्ट में गया। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि बीच में बाँटनेवाला आया। मालिक खुद जमीन दे देता, तो वह झगडा पैदा न होता। इसलिए इसके आगे हमने यह तरीका अपनाया है कि अच्छी जमीन का हिस्सा दे और खुद बाँटे। इस तरह से गाँव में प्रेम बढ़ेगा। हमारी माँग इतनी छोटी है कि कोई नहीं कहेगा कि यह कठिन है। छोटी सी चीज से भगवान् प्रसन्न होता है, तो उतना हम जरूर करें।

केवल धर्म ही साथ जायगा

हम तो कहते हैं कि कोई 'ना' कहनेवाला होगा, इसका खयाल भी नहीं कर सकते। हम हमेशा कहते हैं कि मरने के लिए अगर सौ प्रतिशत लोग हैं, तो देने के लिए सौ प्रतिशत क्यों न हो? आखिर मरनेवाले अपने साथ क्या ले जायेंगे? मकान, खेत, दौलत, बीबी-बच्चे, यहाँ तक कि शरीर भी यहीं छोड जाते हैं। साथ जो ले जायेंगे, वह तो है 'धर्म': 'धर्मस्तिष्ठति केवल:'। जिस धर्म का आचरण हम करते हैं, केवल वही साथ जाता है। सिर्फ धर्म ही मनुष्य के साथ जाता है। हमारा प्रियतम सखा धर्म है। 'धर्मो रक्षति रक्षितः।' हम धर्म की रक्षा नहीं करेंगे, तो धर्म हमारी रक्षा नहीं कर सकता।

हम आपको एक आसान धर्म बता रहे हैं—दिल खोलकर दान देने का और यह छोटा सा ही दान है। इस दान-धर्म की महिमा बहुत बडी है। दान धर्म से मनुष्य की रक्षा होती है। नदी का पानी आगे-आगे बढ़ता है। काशी में गंगा है, तो काशी उसे पकडे नहीं रखती, आगे ढकेलती है। पटना भी गंगा को पकडे नहीं रखता, मुँगेर की तरफ भेजता है और मुँगेर समुद्र की तरफ पानी भेजता है। इस तरह समाज में दान चले। एक से दूसरे के पास जमीन जाती रहे। अपने से जो नीचा है, जो दुःखी है, उसके पास दौडे जाना चाहिए। 'लखपति स_

को मदद करने के लिए दौड़े, सहस्रपति अपने से नीचे के पास दौड़े। दसपति भी दान देने के लिए आठआना-पति के पास निकल पड़े। इस तरह हम एक दूसरे को और दूसरा तीसरे को देते ही चले जायँ, तो दान-गंगा बहती ही रहेगी। यह देने की बात समाज में जारी रखेंगे, तो समाज की रक्षा होगी। देनेवाला मरने के बाद शांति पायेगा।

'द द द' मंत्र त्रिदोष निवारक

शास्त्रकारों ने कहा है दम, दान, दयामिति—दमन करो, दान करो, दया करो। इन्द्रियों पर काबू रखो। भोग में इन्द्रियाँ क्षीण होंगी। उपनिषद् में कहानी है—आसमान में जो मेघ गर्जना होती है, उसमें बादल बोल रहे हैं—'दाम्यत, दत्त, दयध्वम्'। बादल बोल रहे हैं—द, द, द—दमन करो, दान करो, दया करो। बादल एक दूसरे के साथ टकराते हैं और यही कहते हैं कि मिल्कियत रखना अधर्म है। उपनिषद् की उस कहानी में देवों को कहा जाता है कि तुम भोग परायण हो, इसलिए दमन करो। मनुष्य को कहा जाता है कि तुम लोभी हो, इसलिए दान करो और राक्षसों को कहा जाता है कि तुम क्रूर हो, निठुर हो, इसलिए दया करो। मनुष्य में भी कुछ भोगी होते हैं, कुछ लोभी और कोई क्रूर। ये तीनों रोग होते हैं। उनके लिए यह 'द' का मन्त्र है।

ज्ञान से देता है, देने में सबका भला है। ग्राम-स्वराज्य होगा, यह समझकर जो देता है, वह भी अच्छा है; लेकिन 'श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया अदेयम्'—श्रद्धा से दो, लेकिन अश्रद्धा से मत दो। अब इससे ज्यादा क्या कहा जाय?

इस गाँव में कुछ ब्राह्मण भी हैं। यह मंत्र सुनाने का काम ब्राह्मणों का है। लेकिन ब्राह्मण पहले खुद माया छोड़ेंगे, तभी तो उनकी जबान में ताकत आयेगी। इसलिए वे भी कुछ-कुछ दें। फिर शादी है, धर्म-कार्य है, कुंभ मेला है, मृत्यु है, जन्म है—हर बात में दान का मौका है। किसीके घर लड़का पैदा हुआ, तो जाकर कहिये, "भाई, आनन्द का प्रसंग है, आप दान नहीं देंगे?" शादी में भी जाकर आप दान माँग सकते हैं। किसीकी मृत्यु हुई, तो वहाँ जाकर कह सकते हैं: "भाई, दान दो, तो धर्म होगा, मृतात्मा को शांति मिलेगी।" कलियुग में यह आसान धर्म है। 'कलौ दानं च नामं च' यहाँ वह दान और भी आसान बनाया गया है—'बीघे में कट्ठा'। आज का यह आसान राम-मंत्र है। तो राम बोलो और दरवाजा खोलो।

इकट्ठा दान क्यों?

'बीघे में कट्ठा' मन्त्र के साथ और एक बात हमने जोड़ दी है, 'दान दो इकट्ठा'। सब मिलकर दान दें। योगी अकेला ध्यान करता है, तो भगवान् उसके ध्यान में नहीं आते। भगवान् कहते हैं:

'नाहं वसामि वैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद॥'

—भगवान् कहते हैं कि हम योगी के हृदय में रहने के लिए बँधे नहीं हैं और न वैकुण्ठ में ही मैं मिलूँगा। लेकिन हे नारद! जहाँ मेरे भक्त इकट्ठा होते हैं, भजन करते हैं, वहाँ मैं निश्चय ही रहता हूँ। इसीलिए हमने कहा, 'दान दो इकट्ठा'। हमने बहुत आसान कर दिया है। अब आप और मजदूर सब मिलकर एकदिल हो जायँ। कभी-कभी सितार, तबला, बाजा इन सबका मेल नहीं बैठता। ऐसा बे मेल

संगीत नहीं चाहिए। लोहार, सोनार, बढ़ई, सब एक हो जायँ, तो कुल जीवन ही भजन हो जायगा।

सहरसा
३-२ '६१

—प्रार्थना-प्रवचन

आज का राम-नाम : बीघे में कट्ठा : ९ :

लोग हमेशा हमसे पूछा करते हैं कि अगर हम व्यापक प्रचार करते जाते हैं, तो गहराई कम पड़ती है, जब कि आन्दोलन में गहराई होनी चाहिए। इसी तरह गहरे काम करते जाते हैं, तो दूर तक हवा नहीं फैलती। इस स्थिति से छुटकारा कैसे हो? हम इसे गलत विचार मानते हैं। जिस काम में सबका सहयोग लेते हैं, उससे बढ़कर अधिक गहराई और शुद्धि नहीं हो सकती। मैंने देश को 'जय जगत्' मंत्र दिया। वह मन्त्र कुल ४० करोड जबानें बोलीं और ८० करोड कानों ने सुना। इतनी बात के लिए अगर कुछ करोड रुपयों का खर्च होता, तो भी हम उसे कम मानते। संतों ने हमें राम नाम का मन्त्र दिया। ऋषियों ने यज्ञ, याग, तपस्या बतायी। राम-नाम से जो शुद्धि हुई, वह किसी वेद उपनिषद् से नहीं हुई। वेद और उपनिषद् अपने में बड़े ग्रन्थ हैं। गांधीजी इतना काम करके गये, फिर भी जब भगवान् के पास जाने का क्षण आया, तो वे 'राम नाम' ही लेकर गये। वह राम नाम मरे हुए को, जीवितों को, छोटे बड़ों को, भाई बहन को हर हालत में काम देता है। हमारे संतों ने राम नाम जगह जगह लिया है और कहा : कोई भी काम करते हुए राम का नाम लो। इस तरह उन्होंने काम किया, तब लोगों के जीवन में धर्म पैठा।

महिमा अधिक है। राम से बढ़कर पराक्रम 'राम-नाम' ने किया है। सारा पराक्रम, सारा धर्म और पावित्र्य इस 'राम-नाम' को लाया है। इसमें जितनी गहराई है, उतनी वेद में भी नहीं है। नारद ने पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग की परिक्रमा की। शत कोटि रामायण के लिए झगड़ा हुआ, तो शंकर भगवान् ने ३३-३३ करोड़ बाँटा। एक करोड़ रह गया, तो ३३-३३ लाख कर बाँटे। एक लाख बच गया, तो ३३-३३ हजार कर बाँटे। एक हजार बच गया, तो एक हजार दल के ३००-३०० करके बाँटे। सौ शेष रह गये, तो ३०-३० बाँटे। दस रह गये, तो उसमें से ३-३ बाँटे, तो एक श्लोक बचा। वह श्लोक अनुष्टुप् छंद का था, जिसमें ३२ अक्षर होते हैं। इसलिए १० १०-१० अक्षर बाँटे, तो आखिर दो अक्षर बचे। अब शंकर भगवान् ने कहा : "हमें भी कुछ मिलना चाहिए।" तो बचे हुए दो अक्षर याने 'राम' यह नाम उन्होंने अपने लिए रख लिया। कवि कहता है : "शंकर भगवान् ने मक्खन लिया और बाकी सब लोगों को मट्ठा मिला।"

व्यापकता से शुद्धि में गहराई

हम जो यह बात बिहार में समझा रहे हैं कि 'बीघे में कट्ठा', वह राम नाम है। हर मालिक देता है, तो इतनी बुलंद ताकत पैदा होती है, जिसकी कोई तुलना नहीं हो सकती। यज्ञ, याग और तप, ये बड़े नल के समान हैं। नल आखिर नल ही है, जो एक ही जगह पानी देता है। लेकिन बूँद बूँद बारिश से कुल जमीन तर हो जाती है। मतलब यह कि जब जब हर मालिक 'बीघे में कट्ठा' दान देगा, तो उससे नारायणी शक्ति प्रकट होगी। 'राम नाम' ने जितना बड़ा काम आध्यात्मिक क्षेत्र में किया, उतना ही बड़ा काम सामाजिक क्षेत्र में 'बीघे में कट्ठा' करेगा। उसमें पावित्र्य आयेगा, शुद्धि की गहराई आवेगी। समुद्र में नाले और नदियाँ आती हैं। शास्त्रकार कहते हैं : "समुद्र स्नान से सब नदियों का स्नान हो जाता है।" हम भी कहते हैं कि इस मंत्र से भी व्यापकता आयेगी और उसके विस्तार से शुद्धि बढ़ेगी। ज्यादा विस्तार जहाँ होता है, वहाँ

आत्म-शुद्धि भी होती है। मन्त्रों के लिए कुछ नियम होते हैं। जैसे गायत्री मंत्र है। सूर्य का जब उदय होता है, तब वह बोला जाता है। वह बीमार के काम का नहीं है। लेकिन 'राम नाम' तो बीमार के भी काम का है। बैठे हुए, सोये हुए, बिना स्नान के, याने कहीं भी 'राम नाम' का मन्त्र जप सकते हैं। यहाँ तक कहा गया है कि "राम-नाम से सभी पाप खतम हो जायँगे।" इसी आधार पर आज का समाज टिका है। गीता सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है, लेकिन सब लोग नहीं जानते। 'राम-नाम' सबको मालूम है। जो धर्म सबको लागू होता है, उससे शुद्धि बढ़ती है। इसलिए यह नहीं कह सकते कि जहाँ व्यापकता है, वहाँ शुद्धि नहीं होती।

सत्त्वगुण की पटरी

उपनिषद् ने कहा "डर से भी दे दो।" रजोगुण, तमोगुण दुनिया में हैं ही। होना यह चाहिए कि सत्त्वगुण की पटरी हो और रजोगुण का इंजन हो। दान की पटरी सात्त्विक है, इसलिए दान माँगते जाओ, तो मिलता जायगा। उसमें किसी भाई की इच्छा हुई कि इस काम में हम अपना 'फोटो' निकालें, अखबार में दें, कुछ प्रतिष्ठा मिले, तो भले वह चाहे, इसमें हमारा क्या बिगड़ता है ? जब बच्चा कुछ अच्छा काम करता है, तो उसकी पीठ थपथपायी जाती है। उससे बच्चे को प्रोत्साहन मिलता है। बच्चे के समान जिनका दिमाग है, उनका हम अभिनंदन अवश्य करें। अवश्य ही यह रजोगुण है, लेकिन उससे कोई नुकसान नहीं होगा। दान का भी क्या होता है ? जब एक देता है, तो उसे देख उसके पीछे पीछे सब देने लगते हैं, जिसे यहाँ की भाषा में 'भेड़िया धसान' कहते हैं। इतना निश्चित है कि यह गलत मुकाम पर नहीं पहुँचेगा। पटरी 'सत्त्वगुण' की है, इसलिए इसमें किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है।

राजापुरा
४-२-'६१

—स्वागत प्रवचन

आश्रम संस्था अपने देश की विशेषता है। यह शब्द भी अनूठा है। 'श्रम' शब्द से ही 'आश्रम' शब्द बना है। 'आ' शब्द व्यापकता सूचक है। सब प्रकार के व्यापक श्रम जहाँ समत्वपूर्वक किये जायँ, वह 'आश्रम' है। ऐसे आश्रम प्राचीन काल से भारत में चले आये हैं। ये प्रयोग स्थान हैं और ऐसे स्थानों में जो अनुभव आते हैं, उन्हें व्यापक बनाने और उनका समाजीकरण करने के लिए हिन्दुस्तान में चार आश्रमों की कल्पना निकली। हर मनुष्य को इन चार आश्रमों में से जाना पडता था। आश्रम ऋषियों के प्रयोग स्थान होते थे। उसमें आध्यात्मिक और आधिभौतिक दोनों प्रकार की खोजें हुआ करती थीं। बहुतों का खयाल है कि हिन्दुस्तान में सिर्फ आध्यात्मिक खोज हुई, लेकिन यह भ्रम है। वास्तव में उसके साथ भौतिक प्रयोग भी हुए। शायद हिन्दुस्तान ही पहला देश है, जहाँ कृषि की प्रथम खोज हुई। 'देवास्-आयन्-परशुर बिभ्रन्' यानी 'देव आये, उन्होंने हाथ में कुल्हाडी ली, जंगल काटा और खेती की'—इस तरह का जिक्र वेद में आता है। इसलिए इसे पुण्य भूमि माना है। याने इसके आगे पशुवत् जीवन जीने की जरूरत नहीं। हम मृगया नहीं करेंगे, सृष्टि का सेवा करेंगे और जो प्रसादरूप फल मिले, उसे लेंगे। इसलिए भारतवर्ष को हमने पुण्य भूमि माना।

आश्रम की लोकप्रियता

इस जमाने में इस आश्रम भावना को विशेष प्रोत्साहन महात्मा गांधी ने दिया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में टाल्स्टॉय के नाम से आश्रम चलाया। हिन्दुस्तान में वे महात्मा गोखले की 'सर्वण्ट्स ऑफ इण्डिया सोसाइटी' में गये, तो उन्हें स्वतन्त्र प्रयोग करने की सूझा। यद्यपि महात्मा गोखले के लिए उनके मन में श्रद्धा थी, फिर भी नये-नये स्वतन्त्र प्रयोग करने की उनकी इच्छा हुई। इसलिए उन्होंने साबरमती के नजदीक एक आश्रम स्थापित किया। तब से देश में कई आश्रमों को

प्रोत्साहन मिला। बिहार में आश्रम संस्थाएँ अधिक बनीं और आश्रम शब्द भी प्रिय हो गया। छोटा-सा ऑफिस हो, थोड़ी सी जमीन हो, तो भी उसे वहाँ 'आश्रम' कहते हैं। इस तरह आश्रम-विचार हिन्दुस्तान में बहुत लोकप्रिय हो गया।

हमें 'सुख' मिला, 'दुःख' नहीं

जिस आश्रम में हम आये हैं, वह एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। सारा भारत हमने देखा। रचनात्मक काम करनेवाली, क्रान्ति का काम करनेवाली अच्छी-अच्छी संस्थाएँ देखीं, जिसमें इस आश्रम की भी गिनती होती है। इसकी रिपोर्ट पुस्तकाकार में छपी है। लेकिन वह आप यहाँ के लोगों के चेहरे से भी पढ सकते हैं। पूर्णियाँ जिले में हमारे प्रवेश करने से वातावरण में जो फर्क हुआ है, उसे हम महसूस कर रहे हैं। लोगो में सहानुभूति तो है ही, लेकिन कार्यकर्ताओं का लोक-जीवन में प्रवेश भी हुआ, यह हमने देखा। इससे हमें खुशी हुई। बीच में हमारा चलना ज्यादा हुआ। ४। से १० बजे तक का समय रास्ते में गया, लेकिन हमें खुशी है। संस्कृत में 'ख' शब्द का अर्थ आकाश होता है। जहाँ आकाश सुलभ हो, वहाँ 'सुख' है और जहाँ आकाश कम हो, सुलभ न हो, वहाँ 'दुःख' है। सुख और दुःख दोनों शब्दों से 'आकाश' बना है। संस्कृत भाषा की यह खूबी है कि इसमें शब्द भाववाचक होते हैं। तो लोगों को हमें ज्यादा चलना पडा, इसलिए दुःख है, लेकिन अपने खयाल से हमें सुलभ आकाश मिला, तो सुख ही हुआ और आनन्द की अनुभूति हुई।

इस जिले में धीरेन्द्रभाई जैसे स्वनाम प्रतिभावान्, निरंतर प्रयोग करनेवाले, प्रयोगनिष्ठ सर्वोदय के नेता बैठे हैं, इसे सौभाग्य मानना चाहिए। जिला इससे लाभ उठाये, तो 'पूर्ण' काम होगा, ऐसा लगता है। इस जिले में हम भी तीसरी बार आये और इस बार हमने छोटा-सा मंत्र बताया। हमें खुशी हुई कि यह मंत्र हमने लोगों के भजन में भी सुना। जब हम आ रहे थे, तो लोग बड़ी मस्ती में गा रहे थे—

'सीता-सीता राम बोलो, बीघा कट्ठा दान दे दो।' इस तरह जहाँ भजन में किसी चीज का प्रवेश हो, वह परिपूर्ण होकर रहेगी।

कलि में लोग नारायण परायण

कलियुग में लोग नारायण परायण होंगे, यह भविष्यवाणी 'भागवत' ने की है 'कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणा.'। जो भगवान् नर-समूह में होते हैं, उन्हें 'नारायण' कहते हैं। व्यास भगवान् ने महाभारत में परमेश्वर के हजार नाम गिनाये हैं। भारत में ये नाम पाँच हजार साल से चले आये हैं। एक एक नाम विशेष अर्थ रखता है। जो भगवान् नर समूह में अधिष्ठित है, वह नारायण है। सारांश, कलियुग में लोग मूर्ति पूजा के पीछे नहीं लगेंगे, नारायण परायण बनेंगे। कृतयुग (सत्ययुग) में लोग सत्य, तपस्या, ध्यान और चिंतन प्रधान रहेंगे। त्रेतायुग में कर्मकाण्ड, यज्ञ-यागादि करेंगे। द्वापर में 'हरे अर्चा' याने हरि की मूर्ति की पूजा करेंगे और कलियुग में नारायण परायण होंगे। समूह के विवेक (कॉनशेन्स) में जो भगवान् है, उसकी पूजा, उपासना करनेवाले भक्त कलियुग में होंगे। कलि का अर्थ पाप नहीं। कलि याने इकाई (यूनिट)। कलन साधन? याने मापने का साधन। दो कलि याने द्वापर, तीन कलि याने त्रेतायुग, चार कलि याने कृत युग। कलियुग में साधन आसान होगा। लोग दुर्बल नहीं होंगे, निर्मल होंगे। दूसरे तीनों युगों में साधना ज्यादा करनी पड़ती है। पानी में खड़ा होना, एक पाँव पर सालों खड़े रहना आदि बहुत कठिन तपस्या करनी पड़ती है, क्योंकि इन्द्रियों का बहुत ज्यादा जोर, वासनाओं का बहुत ज्यादा जोर होता है। इन तीनों युगों में लोक मानस उतना निर्मल, पवित्र नहीं होता। किन्तु कलियुग में बहुत आसान साधन बताया गया है। 'कलौ दान च नाम च'—कलियुग में दान करना और नाम-स्मरण करना ही धर्म है।

समूह-साधना के प्रथम आचार्य : प्रह्लाद

उड़ीसा में मानदाता कैसे दाखिल हुए? हमने कहा. "भाइयो,

लोगों में जाओ, नाचो-कूदो। 'भक्ताः नृत्यन्ति गायन्ति' भक्त नाचते, गाते, खेलते और हँसाते हैं। ऐसा ही तुम करो, तो ग्राम-दान हासिल होगा।" वहाँ के साथियों ने ऐसा ही किया और इतने ग्रामदान हासिल हुए। यह समूह-साधना भक्तों के लिए बतायी गयी है। इस साधना के प्रथम आचार्य प्रह्लाद थे। उनके सामने नरसिंह मूर्ति प्रकट हुई। बहुत ही भयानक रूप प्रकट हुआ। हिरण्यकशिपु का संहार हो चुका था। कहते हैं, भगवान् का वह रूप देख प्रह्लाद के गुरु नारद मुनि की वीणा पर रात-दिन चलनेवाली अँगुली भी दो क्षण के लिए रुक गयी। वे ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, ब्रह्मचारी थे, तीनों लोकों में उनका निर्बाध प्रवेश था; लेकिन वे भी भयभीत हो गये। लक्ष्मी देवी भी यह देख भयभीत हो गयीं कि आज भगवान् ने कौन सा रूप ले लिया! लेकिन प्रह्लाद को भय नहीं मालूम हुआ। उसने कहा: 'नाहं बिभेमि'। भगवान् ने उससे कहा: "मैं तुम्हे मुक्ति देने के लिए तैयार हूँ।" लेकिन उसने साफ कह दिया: 'नैतान् विहाय कृपणान् विमुमुक्षुरेकः।' "ये जो दीन लोग हैं, कृपण हैं, उन्हें छोड मैं अकेला मुक्ति नहीं चाहता।" इस तरह सामूहिक साधना के प्रथम आचार्य दुनिया में प्रह्लाद हो गये। नारद मुनि प्रह्लाद के गुरु थे, लेकिन भक्तमाला में प्रथम नाम शिष्य का है: 'प्रह्लाद, नारद, पराशर'। महात्मा गांधी कहते थे, सत्याग्रही का नमूना प्रह्लाद है। सामूहिक साधना के भी आचार्य प्रह्लाद हैं। वह सबको समझाता रहा कि सब इकट्ठा होकर भगवान् की आराधना करते रहो। मैं कहता यह था कि कलियुग में नाम-स्मरण हमें सरलतम साधन मिला है।

नाम लेते चलो, दान देते चलो

दूसरी बात है दान की। नाम लेते जाओ और दान देते जाओ, तो और कोई काम करने की कलियुग में जरूरत नहीं। इस वक्त हमने यही चीज लोगों के सामने रखी। 'दान दे दो इकट्ठा', चुपके-चुपके नहीं! यह कोई चोरी का माल थोड़े है? कलियुग की माँग है। भक्त

जहाँ इकट्ठा भजन करते हैं, वहाँ भगवान् होते हैं। इसलिए दान दो। दान देकर कोई पद-प्राप्ति का काम नहीं करना है। इसलिए यह मत सुनाइये कि फलाने ने इतना दान दिया। पिछली यात्रा में हमने 'विष्णु-सहस्रनाम' सुना था। मतलब, दाताओं के हजार नाम सुने थे। उसमें हमारे रोज पौने दो घंटे बीतते। कुछ दिन वह चला। उसके बाद हमने उसे बंद कर दिया। अब हम सुनना चाहते हैं कि फलाने गाँव ने इतना दान दिया। गाँव के हर मालिक ने इतनी जमीन दान में दी। इस तरह सामूहिक जाग्रति होनी चाहिए। छोटी-सी चीज जब समूह करता है, तब एक ताकत पैदा होती है।

तिथि तय कर काम पूरा करें

हम कहना यह चाहते हैं कि हमारे सभी आश्रमों—भारत सेवक समाज, रचनात्मक संस्थाएँ, नयी तालीम के सब विद्यालय—की कसौटी है बीघे में कट्ठा। 'बीघे में कट्ठा' का मंत्र ये सब लोग उठायें और सब काम में लग जायें। हमने तो यह कहा है कि दाता खुद जमीन बाँटे। बीच में जो पुरोहित पैठा था, उसे हमने निकाल बाहर कर दिया। परिणामस्वरूप मालिक और मजदूर में प्रेम-भावना पैदा होगी। मालिक अपने मजदूर को जमीन दे सकता है। हम चाहते हैं कि सब मिलकर इस काम को पूरा करें। लॉर्ड माउण्टबैटन एक तारीख मुकर्रर कर भारत से चले गये। उनके कमरे में उनके सामने दीवाल पर हमेशा कैलेंडर रहता था। वे रोज एक एक दिन काटते। सारी ब्रिटिश सेना चली गयी, लेकिन हमारे नेताओं के आग्रह से लॉर्ड माउण्टबैटन रह गये। यह इंग्लैण्ड के इतिहास में स्वर्णाङ्कित रहेगा। जब से हिन्दुस्तान का कब्जा ब्रिटेन ने छोड़ा, तब से उसकी नैतिक ताकत बढ़ी है। मतलब यह कि जैसे अंग्रेज एक तारीख मुकर्रर करके यहाँ से हट गये, वैसे ही हम भी एक तारीख मुकर्रर कर अपना काम खतम करें। हमने एक तारीख दी है—तीन दिसम्बर, जो राष्ट्रपति (राजेन्द्रप्रसादजी) की जन्म-तिथि है। अगले साल जिम्मेवारी से अलग होकर वे बिहार में आयेंगे।

उनके मार्ग-दर्शन में आगे का काम चलेगा। इसलिए 'बीघे में कट्ठा' का काम करेंगे। दस-बारह लाख एकड़ जमीन प्राप्त करेंगे और बाँटेंगे, तो लोगों के दिलों को जोड़ने का काम होगा।

घर-घर शांति पात्र (सर्वोदय-पात्र) रहे

हम इस काम में बहुत उत्साह और आनन्द महसूस करते हैं। 'अब हम अमर हो गये, कभी नहीं मरेंगे' ऐसी उम्मीद हममें होनी चाहिए। ऐसे रमणीय आश्रम जहाँ हों, वहाँ ऐसे काम होने चाहिए। यहाँ दूसरे बहुत सारे काम हुए और हो रहे हैं। हमें उसमें कोई उज्र नहीं, बशर्ते उसके लिए स्वतन्त्र सेवक खड़े हों। आखिर सरकार भी अपनी ही है, लेकिन हमारे स्वतन्त्र सेवक खड़े होने चाहिए। इसीलिए हमने शांति-पात्र की बात रखी है। जब हम कर्नाटक में थे, तब राष्ट्रपति ने सुना कि हमने शांति पात्र का विचार रखा है, तो उन्होंने इसका आरम्भ अपने घर में किया। मैंने इसे इशारा समझा। अगर हमारा हर देहात के साथ संपर्क होता, तो हर घर में शांति पात्र रखवाते। लेकिन हमारा संपर्क नहीं, और यहाँ तक कि हमने इसकी जानकारी भी नहीं पहुँचायी। अगर गाँव गाँव यह खबर पहुँचती, तो उसका परिणाम क्या होता, देखते। यह काम आपको करवाना है। उन्हींका एक नाम है, जो बिहार को एक बना सकता है। दस साल से उन्होंने जितनी तटस्थता से काम किया, किसी तरह का पक्षपात नहीं किया, यह बहुत कठिन काम है।

स्तान पर हो सकता है और उसके जरिये हम अपना काम सीमा तक पहुँचा सकते हैं।

रानीपतरा
४-२-'६१
—प्रार्थना-प्रवचन

भूदान की प्रतिज्ञा पूरी करें : ११ :

[प्रवचन के समय बारिश जोर से बरस रही थी।]

कितनी भी बारिश बरसेगी, तो भी हमारी यात्रा नहीं रुकेगी, क्योंकि भगवान् की यह इच्छा है कि इस दास का शरीर इसी कार्य में समाप्त हो। इसलिए उस पर भरोसा रखकर हम जा रहे हैं।

हम सरकार को सरकार को सुनायें

आज एक भाई ने हमसे सवाल पूछा कि आप सरकार की नीति की आलोचना करते हैं, तो सीधे राज्यकर्ताओं को ही क्यों नहीं समझाते? अगर उनमें परिवर्तन हो जाय, तो आपकी इच्छा के अनुसार समाज बन जायगा। लेकिन यह बात लोकतन्त्र के विरुद्ध है। जहाँ वोट देकर पाँच साल के लिए आप उन्हें चुनते हैं, वहाँ तो पहले लोगों पर ही असर होना चाहिए, बाद में सरकार पर। इसलिए यह सोचना ही गलत है कि सरकार पर पहले असर डाला जाय। आम जनता 'सरकार की सरकार' है। आज जो राज्यकर्ता हैं, उनमें से कई लोग हमारे परिचय के हैं। कुछ हमारे मित्र भी हैं। उनके लिए हमारे मन में स्नेह है और आदर भी। वे गांधीजी के साथ भी रहे हैं। उनकी बातें भी उन्होंने सुन रखी हैं। लेकिन उन्होंने गांधीजी की कुछ बातें नहीं सुनीं। गांधीजी ने कहा था कि कांग्रेस 'लोक सेवक संघ' बने। यह गांधीजी की बात उन्होंने नहीं मानी। उनका अपना दिमाग बना है। पश्चिम से जो विचार आया है, उससे हमारी ताकत बनती है, ऐसा वे मानते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि उनके कुल विचार गांधीजी के

विचार के विरुद्ध हैं। पर उनका अपना सोचने का एक ढंग है। फिर वे आपकी और मेरी बात सुनेंगे, यह मृग जल की आशा है। इसलिए लोकशाही में लोगों से ही कहना चाहिए।

हम सोच विचारकर सीधे जनता में जाकर उसे समझाना चाहते हैं। पहले ऊपरवालों के नहीं, नीचेवालों के विचार बदलने चाहिए। इसीलिए हम आपके पास आते हैं। जनता जैसा चाहे उस प्रकार का समय ला सकती है, यह हमारा विश्वास है। हमारी यात्रा विचार समझाने के लिए ही हो रही है। बाबा का विचार लोगों ने नहीं माना, तो बाबा का कुछ नहीं बिगड़ता। अगर माना, तो भी उसको कोई सुख नहीं होगा। उसको सुख इसी बात में है कि विचार देते जायें।

हाथ देने के ही लिए

इस सभा में काफी आदाता आये हैं। दुनिया में इसके आगे दाता और आदाता के सिवा तीसरा कोई रहनेवाला ही नहीं है। अदाता कोई रहनेवाला नहीं है। कोई आज देनेवाला है, तो कोई कल। हर किसीको देना ही है। गरीब से गरीब भी देगा। भगवान् ने हाथ देने के लिए ही दिया है।

भूदान की प्रतिज्ञा मत भूलिये

शिकायत की जा रही है कि कुछ लोगों ने जमीन देते समय खाता खसरा नहीं दिया। उनकी जमीन ढूँढ़नी पड़ती है। क्या उनका दिमाग कमजोर है? 'वे दान तो दे चुके, पर गलती हुई, ऐसा महसूस करते हैं'— यह सोचना और खयाल करना बहुत बड़ी गलती करना है। तुलसी-दासजी ने लिखा है

'रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाइ बरु बचन न जाई॥'

जो वचन दिया है उससे मुकरना नहीं चाहिए, यह यहाँ की जनता अच्छी तरह जानती है।

बिहार में ३२ लाख एकड़ प्राप्त करने का संकल्प हुआ था। हम

अपने साथियों को कह रहे हैं कि उस प्रतिज्ञा को पूर्ण करने की कोशिश कीजिये। दादाभाई नौरोजी ने प्रतिज्ञा की थी कि स्वराज्य लेकर रहेंगे। लोकमान्य तिलक ने सन् १९२० में उसे दुहराया और कहा : "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।" उसके बाद गांधीजी आये। चौरीचौरा का आन्दोलन हुआ। उस आन्दोलन को बाद में उन्होंने वापस ले लिया। थोड़ी देर ऐसा दृश्य दीखा कि देश में लोग दब गये। लेकिन गांधीजी ने काम नहीं छोड़ा, प्रतिज्ञा नहीं छोड़ी। अंग्रेज सरकार जनता को बहुत दबा रही थी। गांधीजी ने आखिर कह दिया : 'भारत छोड़ो'। सब लोग उठ खड़े हुए। उसमें भी सरकार ने आन्दोलन को दबाने की कोशिश की। सन् १९४५ में जब मैं जेल से रिहा हुआ, तब गांधीजी के साथ मेरी मुलाकात हुई। गांधीजी ने मुझे बुलाया और कहा कि "लगता है कि फिर से एक दफा लड़ाई होगी।" तब मैंने उनसे कहा : "अंग्रेज सरकार का बल तो खतम हो गया है, क्योंकि हम अपनी हिम्मत बढ़ाकर आये हैं। फिर भी हमें तैयारी रखनी चाहिए।" आखिर स्वराज्य आया। मतलब, हम स्वराज्य की प्रतिज्ञा को नहीं भूले। इसी तरह हम कहना चाहते हैं कि आप लोगों ने भूदान के लिए जो प्रतिज्ञा की थी, उसे मत भूलिये।

जिन्होंने एक बार दान दिया, उनको पश्चात्ताप होता है, तो मैं उन्हें छोड़ दूँगा। लेकिन परमेश्वर के पंजे से वे कैसे छूटेंगे? मुझे आशा है, जिन्होंने दान दिया है, वे जरूर उसे नहीं भूलेंगे। दूसरों से भी दान दिलायेंगे। मैं अभी अपने साथियों से कह रहा था कि कभी कभी बुरे प्रवाह में मनुष्य का मन कमजोर पड़ जाता है, लेकिन समझाने से वे समझ जाते हैं।

संकल्प पूरा करें

बिहार में 'बीघे में कट्ठा' का आन्दोलन जोर से चलना चाहिए। इस प्रतिज्ञा में हम भी हिस्सेदार हैं। हमारे रचनात्मक कार्यकर्ता साथी, कांग्रेस सरकार और सब पार्टीवाले शामिल हैं और पहली प्रतिज्ञा में भी

शामिल थे। अब जो दान पत्र मिलेगा, वह ठीक से भरा होना चाहिए। जोत की जमीन मिलनी चाहिए। इस हिसाब से अब जमीन मिलती है, तो पहली प्रतिज्ञा पूरी होती है। अब आशा करते हैं कि बिहार में यह संकल्प पूर्ण होगा। पूर्णियाँ जिले में यह संकल्प पूर्ण करने की प्रतिज्ञा हम कर रहे हैं। आप सब साक्षी हैं। हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा कर रहे हैं।

पूर्णियाँ —प्रार्थना प्रवचन

५ २ '५१

'छोड़ो तेरा-मेरा जी !' : १२ :

अभी आपने एक दिलचस्प भजन सुना—'छोड़ो तेरा-मेरा जी !' बहुत पुराने जमाने से लोग यह गाना गाते आये हैं। बात सही है। इस तरह गानेवाले की लोग इज्जत करते हैं। लेकिन उनको जरा समझाना पड़ता है कि भाई, तुम दे दो। तेरा मेरा एक बंधन है, एक गलत खयाल है। यह छूट जाय, तो बंधन से मुक्ति मिलेगी, यह बात जाहिर है। आज की हालत में यह बात एकदम नहीं बनती। सर्व संग परित्याग करने की स्थिति में हम नहीं हैं। लेकिन हम कहते हैं कि तेरा मेरा छोड़ो और हमारा पकड़ो। हम भगवान् का नाम लें, तो हम समझते हैं कि वह शक्ति हममें है। वह नाम लेकर निकल पड़ें। लोक सेवा के लिए लोकाधार बनें। हम भगवान् की सेवा करते हैं, तो भगवान् हमें देता भी है। हम लोगों को भगवान् समझकर सेवा करें। हम चाहते हैं कि कुछ लोग ऐसे जरूर निकलें, जो यह भजन गाते हुए घूमते रहें। संन्यास का परम आश्रय लेकर, भगवान् का नाम लेकर, तेरा मेरा छोड़कर निकल पड़ें। लोग जो खिलायें, वह खायें और जो चाहें, वह उपदेश दें।

नानक की कहानी

इस वक्त हमें नानक की कहानी याद आ रही है, जो बड़ी मशहूर है। बाबा नानक के पिताजी एक व्यापारी थे। एक दिन पिताजी की

कुछ काम था, तो उन्होंने बेटे को दूकान में बैठने के लिए कहा। नानक दूकान पर बैठे। एक भाई कुछ खरीदने के लिए आये— शायद अनाज खरीदने के लिए। गिनकर देना होता है। नानक एक-एक नाप गिनते गये। एक-दो-तीन-चार कहते-कहते पहुँचे दस, ग्यारह, बारह, तेरह तक। ज्यों ही उन्होंने 'तेरह' सुना, तो उनको लगा कि बस, यह तेरा ही तेरा है। भगवान् के ध्यान में वे मस्त हो गये। तेरा तेरा कहते गये और नाप भरते ही गये। 'चौदह' उनका हुआ ही नहीं। पिताजी ने देखा कि ऐसे शख्स को दूकान पर बिठायेंगे, तो दिवाला निकल जायगा। पिताजी ने उसे वहाँ से हटाया और यह भी खुशी से हट गया।

एक परिवार की भावना दृढ़ करें

पंजाब और कश्मीर में बाबा नानक के नाम से लोगों को स्फूर्ति मिलती है। लेकिन मैं यह समाज को नहीं कह रहा हूँ कि तुम 'तेरा-तेरा' कहो। हम कहते हैं कि, यह सब हम सबका है, याने भगवान् का है। यह समझने की योग्यता हममें नहीं है, यह हमने कबूल किया। लेकिन हम यह कहते हैं कि यह हमारा, सबका है। लोगों के सामने यही विचार हम रख रहे हैं कि देखो भाई, विज्ञान का जमाना है। असम में बंगाली लोग हैं, बिहारी लोग भी हैं। उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात के लोग, केरल के लोग भी वहाँ चाय के बगानों में काम करने के लिए गये हैं। प्रदेश का नाम असम है, लेकिन हिन्दुस्तानभर के लोग वहाँ मिलेंगे। वैसे ही बम्बई में महाराष्ट्र के ही नहीं, हिन्दुस्तान के हर जिले के लोग हैं। यहाँ भी लाउडस्पीकर, फाउण्टेनपेन, चश्मा, हारमोनियम, घड़ी आदि दुनियाभर का माल है। मतलब यह कि इस जमाने में सबके साथ हमारा सम्बन्ध आता है। इसलिए हमें एक परिवार की भावना मजबूत करनी चाहिए।

ग्राम का परिवार बनायें

ग्राम का जो परिवार होगा, उसे हम अपने हिस्से की जमीन

मान लीजिये, हमारा बच्चा कॉलेज में पढ रहा है, तो क्या ग्रामदान में दी हुई जमीन हम हटायेंगे नहीं। गाँव के सब लोग मिलकर उस बच्चे को पढायेंगे। सब लोगों की ओर से उस भाई को भरोसा दिया जायगा कि तुम्हारे बच्चे को हम खिलायेंगे। आज होता यह है कि एक-दूसरे पर भरोसा नहीं, विश्वास नहीं, प्रेम नहीं इसलिए पडोसी पडोसी से डरते हैं और दोनों अपने अपने खेत में जागते हैं। उसे इसका डर और इसे उसका! कभी मिल जुलकर बात भी नहीं करते। इसलिए मैंने कहा "आज का यह भजन गाँव के लोगों को सीखने योग्य है।" शहरवालों को भी सीखने योग्य है। हम भी यही सुनाते हैं कि सब मिलकर उपज कैसे बढायें, धर्म भावना कैसे बढायें!

यही कारगर तरीका

मेरा तेरा छोडने का कारगर तरीका यही होगा कि अपने गाँव में हम सब एक हैं। यह परिवार की भावना हम कायम रखें। यह छोटा सा गाँव है, लेकिन अनुभव है कि छोटा गाँव जहाँ होता है, वहाँ लोगों के दिल बडे होते हैं और बडा गाँव होता है, तो दिल छोटे होते हैं। जो आदमी बडा होता है, उसकी नफरत सारी दुनिया फाती है और जो छोटा आदमी होता है, उसका दिल बडा होता है। इसलिए हमें आशा है कि आज के गाँव में हमें बहुत दान मिलेगा।

जालना —स्वागत प्रवचन
६ २ '६१

चाहते हैं कि दूसरी जबान भी सीखें। अपनी एक ही जबान सीखकर संतुष्ट न रहे, पडोसी की भी जबान सीखें। यहाँ के लडके बगाली सीखें, उर्दू सीखें, दो-तीन जबानें सीखें, तो सहूलियत होगी। हम हिन्दुस्तान की बहुत सारी जबानें पढना लिखना सीख गये, तो मुश्किल नहीं हुई। हम कई भाषाएँ पढ सकते हैं। इससे कोई नुकसान नहीं, बल्कि लाभ ही होगा। जहाँ जायेंगे, लोग महसूस करेंगे कि यह कोई हमारा ही भाई है। जो भाई बहुत जबानें सीखते हैं, उन्हे उन जबानो का मामूली ज्ञान ही रहेगा, लेकिन वे लोगो के दिल को समझ सकते हैं। तमिलनाड में हमारे भाषणों का तर्जुमा करना पडता था। बगाल में भी करना पडता है। लेकिन हम ये जबाने समझ सकते हैं, उसमें दरखास्त कर सकते हैं, तो इससे लोगों को लगता है, यह अपना ही भाई है। जगह जगह हमारा कोई कम कदर का स्वागत नहीं हुआ। कश्मीर में भी अच्छा स्वागत हुआ। वहाँ हमारे भाषणों का तर्जुमा नहीं करना पडा। कश्मीर में हमारी उर्दू की तारीफ हुई। वहाँ एक दिन कुरान भी पढ़कर सुनाया, तो हम मुसलमानों के प्यारे हो गये।

जहाँ तक भूदान का ताल्लुक है, इस बंदे को सब पार्टियों ने, धर्मों ने, प्रान्तों ने अपनाया और यही काम करना है, ऐसा समझा। मलाबार में मुसलमानों ने हमसे कहा कि आप कुरान शरीफ की ही बात हमें बता रहे हैं। कुरान शरीफ में अल्लाह का हुक्म है कि सपत्ति तो हमें भगवान् ने दी है। उसे ईश्वर के मार्ग में खर्च करना चाहिए। यही आप कहते हैं। मैसूर में मुसलमानों ने हमें दान दिया। हम छठा हिस्सा माँगते हैं, लेकिन मुसलमानों में तो लडकियों का भी हक होता है, तो हम उनके परिवार के सातवाँ हिस्सा बन गये। मैसूर में ज्यादा ईसाई रहते हैं। वहाँ उनकी चार जबानें हैं। जब हम वहाँ गये, तो चारों जबानों के मुखियों ने सूचना निकाली कि बाबा जो काम कर रहे हैं, वह ईसामसीह की नसीहत का है। लोग तारीफ करते हैं। इसलिए ईसाई को चाहिए कि वे बाबा के काम के लिए भर भरकर दान दें। इस तरह हमारे काम

को ईसाइयों की भी पुष्टि मिली। हम सारनाथ गये थे। वहाँ बौद्ध-धर्म की जमात है। उन्होंने हमसे कहा कि आप धर्म-चक्र-प्रवर्तन कर रहे हैं। गौतम बुद्ध के चरण-चिह्नों पर चलने की आपकी कोशिश है, इसलिए उसके अनुसार कार्य करने की हम भी सिफ़ारिश करते हैं। हिन्दू लोग कहते हैं कि हमारा काम हिन्दू-धर्मशास्त्र के मुताबिक है। हम पंजाब में गये, तो वहाँ के लोगों ने कहा कि गुरु नानक की यही नसीहत है कि बाँटकर खाओ। आप गुरु नानक की सिखावन पर चलते हैं। इस तरह सभी धर्म-सिद्धांतों का अमल हमारे काम में है। और इस तरह सबका आशीर्वाद हमें हासिल है।

सबसे बड़ा धर्म : प्यार

सबसे बड़ा धर्म प्यार है। इससे बढ़कर दूसरा धर्म नहीं। यह धर्म जब हम अपनाते हैं, तभी हम सभी धर्मों के लिए आदरणीय हो जाते हैं। हमारा दावा है कि कंधे से कंधा भिड़ाकर काम करोगे, तो कुल का कुल झगड़ा मिट जायगा। प्यार से जमीन दी, तो हिन्दुओं की जमीन मुसल्मानों को मिलेगी और मुसल्मानों की हिन्दुओं को। यह तो एक-दूसरो पर प्यार बढ़ाने की तरकीब है। इन्सान के नाते बर्ताव करो। भेद भगवान् ने नहीं दिया, वह तो लोगों का खयाल है। एक-एक पंथ-वाले अपनी-अपनी बात पर लट्टू हैं। लेकिन सब पर प्यार रखना धर्म है, यही सब धर्मों की सिखावन है। लेकिन लोग यह नही समझते। अपने-अपने धर्म, जाति, भाषा, प्रान्त का अभिमान रखते हैं। जिस परमात्मा ने उन्हें पैदा किया, उसीके नाम पर अलग-अलग होते हैं। किसी बैठक के लिए सभी धर्मवाले इकट्ठा हो सकते हैं, लेकिन परमेश्वर का नाम लेने का मौका आ जाय, तो इकट्ठे नहीं बैठेंगे। कमबख्त परमात्मा ही ऐसा निकला, जो भेद करवाता है। जहाँ ईश्वर का भेदभाव होता है, वहाँ ईश्वर को मानते नहीं। यह सब सीखने की बात है। देश-देश में यही झगड़ा चलता है। धर्म धर्म में झगड़ा होता है। प्रान्त-प्रान्त में झगड़ा होता है। पार्टी-पार्टी में झगड़े होते हैं। राजनैतिक

पार्टियों में अंदर अंदर झगड़े होते हैं। भाषा भाषा में झगड़े होते हैं। इतने सारे झगड़े जहाँ चलते हैं, वहाँ सबको एक करने के लिए तहरीक चाहिए। मिल जुलकर काम करोगे, तो एक ही प्लेटफार्म पर एक हो सकते हो।

हम सबसे बीघे में कट्ठा की माँग करते हैं। मुसलमानों से दसवाँ हिस्सा माँगेंगे। हर से माँगते हैं, तो कम माँगते हैं। इसलिए कुल लोग देंगे, तो गाँव गाँव की एक जमात बनेगी और बिहार एक हो जायगा।

लखना —प्रार्थना प्रवचन
६-२-'६१

अनवरत तपस्या करते रहें : १४ :

अब तो हमारी बिहार यात्रा समाप्ति पर है। पाँच हफ्ते हो गये हैं, दो दिन बाकी हैं। इस वक्त जनता का जो दर्शन हुआ, इससे हमारी श्रद्धा और भी बढ़ी। याने जिस श्रद्धा को लेकर हम आपके पास आये थे, वह और बढ़ गयी। अपने सुख का हिस्सा बाँटना चाहिए, यह विचार जनता को मान्य हो रहा है, इसका हमें इस यात्रा में दृढ़ विश्वास हो गया। इसलिए हमने बीघे में कट्ठा, सर्वोदय पात्र और शांति सेना, तीनों बातों पर जोर दिया और समझाया भी है। एक बात और कही है, वह भी बहुत महत्त्व की है कि पुराने जमीन का बँटवारा फौरन करो। *ऐसी चार चीजें बतायीं। इसके लिए मुद्दत भी दी—३ दिसम्बर* १९६१। ये बातें तो हममें बहुत उत्साह पैदा करती हैं।

सरकारी कर्मचारी सम्पत्तिदान चलायें

यहाँ के सरकारी अफसर भी हमसे मिले। हमने देखा कि उनके दिलों में भी इस काम के लिए सहानुभूति है। उनमें से एक भाई ने हमसे कहा: "आप तो लोगों से जमीन की माँग करते हैं, हमारे लिए क्या है?" मैंने कहा: "आपके लिए भी मैं एक माँग पेश करता हूँ। जैसे मैं लोगों से कहता हूँ कि बीघे में कट्ठा दीजिये, वैसे आप लोगों से

भी कहता हूँ कि महीने में एक दिन की तनख्वाह दीजिये। यह चीज उस भाई का जँच गयी और उन्होंने हमारे कहने के मुताबिक अपनी एक दिन की तनख्वाह देना स्वीकार किया। हमने कहा कि बहुत ज्यादा कार्यक्रम हो, तो काम ठीक नहीं होता। हम कार्यक्रम को बढ़ाना नहीं चाहते, इसलिए समूह का ध्यान उस तरफ खींचना नहीं चाहते। समूह का ध्यान एक बात पर खींच रहे हैं। और वह है 'बीघे में कट्ठा'। असम के रास्ते में हम हैं। हमें वहाँ जाना है, लेकिन इस कार्यक्रम को आप पूरा करते हैं, तो हमें खुशी होगी।

जिम्मेदारी परमेश्वर पर डालें

लोगों ने काम किया, तो भी हमें खुशी होगी और नहीं किया, तो भी खुशी होगी। लोगों ने काम नहीं किया, इसलिए हमें उन्हें बदनाम नहीं करना है। हम सोचेंगे कि हमें और थोड़ा झुकना होगा। इसलिए इसकी जिम्मेवारी हमने परमेश्वर पर डाली है। हम ऐसी परम श्रद्धा से लोक-जीवन में अपना जीवन खर्च करें, तपस्या में कभी थकें नहीं। श्रद्धा से हम लोगों को विचार समझाते जायँ। कुल का कुल मामला परमेश्वर पर सौंपें और निश्चिन्त हो जायँ। हम आशा करते हैं कि परमेश्वर लोगों को ऐसी श्रद्धा देगा कि वे जल्द-से जल्द काम करेंगे।

खरैया —स्वागत-प्रवचन
७-२-'६१

देने और पाने का ब्रह्मानन्द : १५ :

अभी आप लोगों ने एक बड़ा मंगल प्रसंग देखा। दाताओं ने जो जमीन प्रेम से दान दी, वह गरीब भाइयों को बाँटी गयी। और भी जमीन बाँटने को बाकी है। लेकिन हम उम्मीद करते हैं कि यह जल्द से जल्द बँट जायगी। जिन्होंने दान दिया है, वे अपनी जमीन का खाता, खसरा, नंबर आदि दे देंगे। एक दफा दिया है, तो और भी देना है। यह नहीं कि एक बार दिया और छूट गये। खुशी की बात है कि दो नये दाताओं

ने नया दान दिया। उसमें से एक भाई की जमीन बँट भी गयी। यह बहुत ही आनन्ददायी समारम्भ है। हम जो आनन्द इससे महसूस करते हैं, वह हमेशा ही, दैनिक जीवन में ही महसूस करते हैं। याने हमारे जीवन में सतत आनन्द ही आनन्द रहा है। समाधि, ध्यान, धारणा आदि का काम हमने किया है। सेवा के काम भी किये हैं। उन सबसे संतोष, समाधान और आनंद मिला है, लेकिन इस युग में जब कि चप्पा चप्पा जमीन के लिए कोर्ट कचहरी में झगडे, खून-खराबियाँ होती हैं, उस जमाने में प्रेम से जमीन देनेवाला दाता भी निकला, इस चीज का हमें बहुत आनन्द है।

यह आनन्द समाधि से भी बढकर

इससे गरीबों के दिल को खुशी होती है और दाताओं के दिल को भी। इसलिए यह बहुत ही पवित्र काम है। मेरे जैसे को यह देखकर जो आनंद होता है, उसका वर्णन शब्दों में नहीं कर सकता। इसी आनन्द के आधार पर हमारी यात्रा चल रही है। वैसे तो दस साल पहले से ही हम देख रहे हैं और धीरे धीरे यहाँ काम बढ़ता भी गया है। इसमें जो आनन्द होता है, वह समाधि, ध्यान, 'धारणा आदि से नहीं। उसमें परमेश्वर की झाँकी मिली, लेकिन इसमें साक्षात् भगवान् का दर्शन ही हमें होता है। देनेवाले और पानेवाले के हृदय में जो आनंद है, वह साक्षी है और इसलिए हमें साक्षात् आनद होता है।

दुनिया के लिए एक अच्छी मिसाल!

हमने ऐसा आनन्द भगवान् की कृपा से महसूस किया है। जिस जमीन के लिए बहुत झगडे होते हैं, मुकदमेबाजी चलती है, एक एक इंच के लिए गाँव में फूट पड़ती है, वहाँ अगर भूदान का काम चला, तो लेनेवाले कृतज्ञ होकर आपके लिए मर मिटेंगे। लेनेवाले को हम यह भी कहते हैं कि आप व्यसनों से मुक्त हो जाइये, नशाखोरी छोड़ दीजिये। मालिकों के साथ, भाइयों के साथ मेहनत मशक्कत कीजिये। इससे हिन्दु

स्तान आबाद और खुशहाल बनेगा। इतना ही नहीं, दुनिया के लोगों के लिए अच्छी मिसाल होगी।

बहनें सर्वोदय-पात्र रखें

अक्सर बिहार में सभा में बहनें नहीं आतीं, लेकिन परमेश्वर की कृपा है कि हमारी सभा में बहनें भी आती हैं। बहनों को देख आज हमें खुशी हो रही है। हम चाहते हैं कि बहनें घर में सर्वोदय-पात्र रखें और बच्चों के हाथ से मुट्ठीभर अनाज उसमें डालें। हम बहनों से यही आशा रखते हैं।

खरैया —प्रार्थना-प्रवचन
७-२-'६१

गाँव की जिम्मेदारी सब मिलकर उठायें : १६ :

आप लोग बारिश में खड़े हैं और दस दिनों से यही हवा चली है। हमने माना कि यह जरूरी था और पानी अच्छा रहा। भगवान् की मर्जी है, वैसा चलता है। बारिश होती है, तो बूँद-बूँद होती है और जहाँ तक दिखता है, सबका फायदा होता है, जमीन तर होती है, फसल अच्छी आती है। बारिश से सबक मिलता है कि सब मिल करके दान दो 'बीघे में कट्ठा' और मिलकर काम करो।

हमारे गाँवों में अलग-अलग परिवार के चलने से फायदा नहीं होगा। इसलिए हमने कहा कि गाँव का एक परिवार बनायें, प्रेम हासिल करें और गाँव की जिम्मेदारी सब मिलकर उठायें।

कांझिया —स्वागत-प्रवचन
८-२-'६१

ग्राम-समस्याओं का समाधान : ग्राम-परिवार : १७ :

अपना देश बहुत पुराना है। यहाँ हजारों और लाखों वर्षों से लोग छोटे-छोटे गाँवों में रहते हैं। आज भी जब कि दुनिया में शहर बहुत बढ़

बोता है और बारिश का उसमें उपयोग होता है। कभी तो बारिश बहुत ज्यादा होती है, कभी बहुत कम। इसलिए कभी-कभी परमात्मा की मदद भी निकम्मी हो सकती है। ऊपर से मदद लानेवाले लोग बीच में ही मदद खा जाते हैं। हमने देखा, खेत में हमने कुआँ बनवाया। उसका पानी खेत में देने के लिए नाली बनवायी थी। खेत की ऊँचाई थोड़ी ऊपर थी, तो सारा पानी बीच की नाली खा जाती थी। इसलिए फलाने लोगों के जरिये सरकार की मदद पहुँचेगी, यह मानना गलत साबित होता है।

ग्राम-परिवार बनाइये

इस सबका सार यही है कि अपने गाँव को एक परिवार बनाया जाय। हम एक-दूसरे की चिंता करें। एक-दूसरे पर एक-दूसरे की जिम्मेवारी है, ऐसा महसूस करें। सब मिलकर चिंतन करें, सोचें और एक-दूसरे की मदद करें। गाँव में किसी एक के घर शादी हो, तो वह सबकी मानी जाय। याने उसके लिए सारा गाँव उत्साह से मदद करे और उसे सार्वजनिक उत्सव का स्वरूप प्राप्त हो। आज तो घर घर में दुःखी लोग हैं। हमे भूमिहीनों को, बेजमीनो को, उन दुःखियों को अपने परिवार में लाना होगा। हम मिल जुलकर काम करेंगे, तभी यह होगा। गाँव की ताकत बनेगी। गाँव का झगडा गाँव के बाहर नहीं जायगा और उसमें सरकार का दखल नहीं होगा, बल्कि मदद मिलेगी। आज मदद थोडी मिलती है और दखल ज्यादा होता है।

पं० नेहरू का भी यही सन्देश

अभी मैने पं० नेहरू का व्याख्यान अखबार मे पढ़ा। उसमें उन्होंने कहा है कि गाँववालों को खुद अपनी ताकत पर खडे होना चाहिए। बाहर से मदद की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। सिर्फ 'सरकार-सरकार' नहीं करना चाहिए। यही संदेश लेकर हम दस साल से गाँव-गाँव घूम रहे हैं। अभी हम 'असम' के रास्ते पर हैं। हम आपको यही कहते हैं कि आप जो जमीन देंगे, वह अच्छी-से-अच्छी दें और सब लोग दें, तो

तावत बनेगी। पाँच अँगुलियाँ इकट्ठा होकर काम करती हैं, तो हजारों काम करती हैं। तीन दिसंबर तक यह काम आपको खतम करना है। खासकर बहनों के लिए हम कहते हैं कि वे सर्वोदय पात्र का काम उठायें। हम चाहते हैं कि पीले साफे पहने हुए चार हजार लोग बिहार में हों और इनके लिए, शांति के काम के लिए हम शांति-पात्र की व्यवस्था करें।

देकर मुकर जाना बहुत बड़ी दुर्नीति

हमें पुरानी जमीन भी बाँटनी है। बाँटने में कुछ मुसीबतें आती हैं। इसलिए दाताओं को पहले ही नंबर वगैरह देना चाहिए। पुरानी जमीन अगर नहीं बँटती, तो हिन्दुस्तान में सारे बिहार की बदनामी होगी। जो लोग पहले दान देते हैं और बाद में मुकर जाते हैं, उनके लिए शास्त्र में बहुत ही कटु वचन कहा है। यह दुर्गति की बात है। अपनी जबान से मैं दुर्नीति की कहानी सुनाऊँ, यह अच्छा नहीं है। यह अधिकार तो शास्त्र का है। इसलिए जो दिया है, जल्द-से जल्द भूमिहीनों के पास पहुँचाने की फिक्र और चिंता दाताओं को होनी चाहिए, ऐसी उनको मेरी प्रार्थना है।

कालिया
८-२-'६१

—प्रार्थना-प्रवचन

नया जोश और नया होश : १८ :

पाँच-छह साल पहले हम यहाँ आ चुके हैं। यहीं से आगे इसलामपुर भी गये और वहाँ से उत्तर दिशा को प्रणाम कर दक्षिण की ओर प्रयाण किया। वहाँ से फिर बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्र, तमिलनाड, कश्मीर तक यात्रा हुई। लौटते समय पंजाब, उत्तर प्रदेश और इन्दौर में जाना हुआ। इन्दौर में कस्तूरबा का स्थान है। वहाँ भी सात दिन रहना हुआ। कस्तूरबा ट्रस्ट ने प्रस्ताव किया कि शांति-सेना का काम ट्रस्ट उठायेगा।

सब से बहनें भी शांति-सैनिक बनीं। कुछ बहनें काशी में तालीम पा रही हैं। तालीम के बाद वे फिर अपने क्षेत्र में जायँगी।

ये सुहावने पीले साफेवाले !

सामने पीले साफेवाले भाइयों और बहनों को देखकर कितना आनंद होता है ! हमारे मन मे आता है कि इस दर्शन से बा को बहुत खुशी होती। शाति-सेना की बात उन्होंने की थी, लेकिन उस वक्त कुछ नहीं हुआ। आज करीब दो हजार शांति-सैनिक हुए हैं। ये मरने की तैयारी रखकर मार खायेंगे। झगड़ा मिटाने की कोशिश करेंगे। इस प्रकार हिम्मत करनेवाली यह जमात है। यह बहुत सुन्दर दृश्य है। देखकर दिल को ठंडक पहुँचती है।

नया जोश, नया होश कैसे आये ?

अब हम असम के रास्ते पर हैं। हरि की इच्छा होगी, तो वहाँ हम जायेंगे। हरि जो काम करायेगा, वही करेंगे। हम चाहते हैं कि इस वक्त नया जोश और नया होश आन्दोलन मे आये। इसलिए हमने सीधी सी बात बतायी है—पुरानी जमीन बाँटो, नयी जमीन हासिल करो। घर-घर में शाति-पात्र रखो। तीन दिसंबर की तारीख हमने दी है। राष्ट्रपति ने अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखा है, उसे इशारा समझकर बिहार की हर बहन अपने घर में शाति-पात्र रखकर उनका स्वागत करे। वे दो दफा राष्ट्रपति बन चुके हैं। अब वे बिहार की सेवा के लिए मुक्त रहेंगे। वे जब देखेंगे कि शाति-सैनिक बिहारभर मे काम कर रहे हैं, तो उनको बहुत खुशी होगी।

किसनगंज —स्वागत-प्रवचन
९-२-'६१

जमाने की भूख : समता : १९ :

अभी दीपबाबू ने अपने भाषण में कहा कि एक आश्चर्य-सा है कि एक आदमी १० साल से घूमता ही रहा है। लेकिन यह आश्चर्य नहीं

है, क्योंकि वह आदमी देख रहा है कि अगर हिन्दुस्तान के गरीबों की गरीबी मिटाने में हम तत्पर नहीं होते, तो हिन्दुस्तान और दुनिया के लिए बहुत खतरा है। इसलिए उससे बैठा नहीं जाता। नहीं तो वृद्धावस्था में आराम के लिए जा नहीं चाहता, ऐसा नहीं। अन्दर से यह एक दर्शन है कि अगर ऐसी कोशिश नहीं की जाती, तो दुनिया की हालत क्या होगी? अभी पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच जो सवाल है, वह हल नहीं हुआ है। तिब्बत और चीन के साथ संघर्ष हो रहा है। ब्रह्मदेश और लंका में असन्तोष चल ही रहा है। नेपाल में चक्राचक्र दूसरे ढंग से घूम रहा है। कुल दुनिया में विचारों की कशमकश हो रही है और परीक्षा की जा रही है कि कौन सा विचार दुनिया में समाधान और साम्य लायेगा। इस जमाने की सबसे बड़ी माँग और सबसे बड़ी भूख है साम्य।

हर जमाने की अलग-अलग भूख

एक जमाना था, जब भक्ति उपासना की भूख थी। एक जमाना था, जब मृत्यु के बाद क्या होता है, यह जानने की भूख थी। एक जमाने में समाज सुधार किस तरह हो, यही चर्चा और विचार चलता था। अलग अलग जमाने में अलग अलग भूख हुआ करती है। सौ साल पहले के जमाने की भूख थी—हर देश आजाद हो। अब यह भूख है कि सर्वत्र साम्य की स्थापना हो। इसलिए जो विचार साम्य लाने में कारगर होगा—वही टिकेगा, दूसरा नहीं।

बाबा का स्पष्ट दर्शन

अगर हम देश के गरीबों की गरीबी मिटाने में कारगर नहीं हुए, तो हमारे विचार की हार होगी। हम इस काम में समर्थ नहीं हुए, तो माना यह नहीं जायगा कि हमारी कुछ गलती है। लेकिन पूरी तरह हम लगे न हों, तो हमारी गलती मानी जायगी। गरीबी मिटाने में १० २० साल लग सकते हैं। लेकिन हम कोशिश कर रहे हैं, काम में लगे हैं। सब पाटाराग इसमें लगे हैं, ऐसा दृश्य दीखेगा, तो हिन्दुस्तान का बचाव है।

नहीं तो हिन्दुस्तान का बचाव कतई नहीं है, ऐसा दर्शन बाबा को है। वह दर्शन बाबा को बैठने नहीं देता। हिमालय के शिखर पर पानी डालते हैं, तो वह पानी नीचे जाना चाहता है। जैसे पानी कहीं भी हो, वह कोशिश करता है कि नीचे की तरफ दौड़ा जाय। भर-भर के नदी-नाले समुद्र की तरफ जाते हैं। दुनिया की दुःखी जनता एक महासमुद्र है। बाकी लोग जिस किसी ऊँचाई पर हैं, जिस किसी सतह पर हैं, वे वहाँ से उठकर दौड़े जा रहे हैं, गरीबी मिटाने के लिए जा रहे हैं, ऐसा दृश्य दीखेगा, तभी दुनिया का बचाव है। नहीं तो बचाव नहीं है। यह स्पष्ट दर्शन है। इसलिए बाबा घूम रहा है। यह दर्शन जिस किसीको हो, वह बाबा को एक आश्चर्यजनक व्यक्ति समझकर अलग नहीं रखेगा और खुद घूमना शुरू करेगा। इस बिहार में कुछ लोग घूमे हैं। उन्होंने बीच बीच में दूसरे कई काम भी किये हैं।

जो कुछ हो, दूसरों को दीजिये

गीता में कहा है :

'नहि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।'

कुछ-न-कुछ काम हम करते ही रहे हैं। रचनात्मक काम, निर्माण-समिति का काम, खादी-समिति का काम आदि ये जो काम हैं, उनसे हजारगुना रचनात्मक काम कुल किसान कर रहे हैं। लेकिन उस रचनात्मक काम में यह शक्ति नहीं कि वे सामने आयें और गरीबी मिटायें। इसलिए उस काम का अंत नहीं है। जैसे फुटबॉल के खेल में होता है—लात मारकर फुटबॉल को दूसरों के पास पहुँचाया जाता है। इस तरह समाज में खेल जारी रहे, तो समाज शरीर अच्छा रहेगा। मतलब यह है कि जिसके पास जो हो, वह दूसरे को देना चाहिए।

मान लीजिये, थाली में लड्डू परोसा है और हाथ खुदगर्ज बना और कहेगा कि मैं इसे पकड़े रहूँगा, तो क्या होगा? हाथ को व्यायाम होगा। और मान लीजिये, हाथ ने मुँह में लड्डू डाला और मुँह ने उस लड्डू को पकड़ रखा, तो मुँह फूल जायगा। खाना और बोलना बन्द हो

जायगा। शरीर क्षीण होगा। फिर मुँह ने पेट में ढकेला और पेट खुदगर्ज बना, तो वह कुरेगा और उसका ऑपरेशन न किया, तो मरेगा। किन्तु पेट में क्या होता है? जो चीज पेट में जाती है, पेट उसे पचाकर शरीर में चारों ओर भेजता है। कहने का मतलब यह है कि हमारे पास जो चीज है, वह दूसरे को देनी चाहिए। इस तरह कारुण्य नदी का बहाव और दान-धारा गंगा नदी की धारा के समान बहती रहेगी, तो कल्याण होगा। एक गंगा से सारा बिहार मालामाल हो गया। यह गंगा सूख जायगी, तो क्या हाल होगा? आज हिन्दुस्तान की हालत ऐसी ही हो गयी है। हर कोई खुदगर्ज बना है। इस तरह हर कोई अपनी ही सोचे, तो यह जो तंग नजरिया है, वह अपना भी खात्मा करेगा और दूसरे का भी। इसलिए हमने समाज में दान-धारा बहायी है, उसे बहने दीजिये।

संकल्प पूरा करें

बिहार में सात-आठ साल पहले हम आये थे। उस वक्त यह धारा शुरू हुई थी। एक संकल्प किया गया था। उस संकल्प में सब पक्ष-वाले शामिल हुए थे। उस संकल्प को आप पूरा कीजिये। इस वक्त हमारी माँग बहुत छोटी-सी है। हमने 'बीघे में कट्ठा' माँग की है, उस हिसाब से साढ़े बारह लाख एकड़ जमीन मिलेगी। इस तरह जमीन मिलेगी, तो पुराना संकल्प पूरा होगा।

हरएक से बीघे में कट्ठा माँगने की जो बात है, उसमें दृष्टि यह है कि हरएक के पास हम पहुँचें और हरएक से दान मिले। कहीं आसमान से जल गिरेगा, तो वह काम नहीं होगा, जितना बूँद-बूँद बारिश बरसती है, तो होता है। इसीलिए हमने इस वक्त कहा कि हरएक से दान मिलेगा, तो हरएक को दान-दीक्षा मिलेगी। हम सबके पास पहुँचेंगे, तो हर कोई देने के लिए राजी होगा। इसका थोड़ा अनुभव इस यात्रा में आया है। नहीं तो यह शंका थी कि जमीन कैसे मिलेगी? पुरानी जमीन तो बँटी नहीं, फिर लोग दुबारा जमीन कैसे देंगे? यह शंका कुछ लोगों के दिमाग में थी। लेकिन मैंने कहा: अरे भाई, जिन कारणों से जमीन

बँटी नहीं, वह कारण इस वक्त हम दूर कर रहे हैं। जो जमीन देगा, वही बाँटेगा। सब पार्टीवालों की सभा रानीपतरा मे हुई थी। सबने हमारी इस बात की ताईद की है। लेकिन हम जानते हैं कि सिर्फ ताईद करने से नहीं होता। इसमें काम करना होगा। इसलिए हमने एक तिथि मुकर्रर की। बिहार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष और हिन्दुस्तान के राष्ट्रपति मुक्त होकर बिहार में आयेंगे। उनके मार्ग-दर्शन में कुल बिहार मे सब कार्यकर्ता काम करेंगे। उनकी जन्मतिथि है—३ दिसंबर। उसके पहले बीघे मे कट्ठा के हिसाब से कुल बिहार में दान प्राप्त करना है। यह तारीख हमने बिहार को काम पूरा करने के लिए दी है।

दुनिया समझे, अहिंसा की ताकत बढ़ रही है

राजेन्द्रबाबू ने अपने घर में सर्वोदय पात्र रखा है। उसे इशारा समझकर हमें यह चीज हर गाँव मे और हर घर में पहुँचानी चाहिए। पर वह नहीं हुआ है। अहिंसा मे इशारा चलता है। अयूब आता है और हुक्म करता है। उसका पालन नहीं हुआ, तो १४ साल की सजा होती है। ऐसा वह रामायण का भक्त है। लेकिन हम कहना यह चाहते हैं कि भारत अगर इशारे से काम करेगा, तो दुनिया की मजाल नहीं कि टेढ़ी नजर करके देखे। यहाँ तो अहिंसा की ताकत बढ़ रही है, यह दुनिया समझ लेगी।

पीताम्बरधारी भगवान्

इस सभा में हम पीताम्बरधारी भगवान् को देख रहे हैं। ये पीले साफे पहने शांति सैनिक हैं। हम चाहते हैं कि सारे बिहार में साढ़े चार हजार पीले साफे पहने शांति सैनिक छा जायँ। वे दस हजार की आबादी मे एक-एक के हिसाब से फैलें। सेवा में रत हों, मौके पर मर-मिटने के लिए राजी हों। घर घर सेवा के लिए जायँ, प्रेम के सिवा दूसरा शब्द उनके मुँह से न निकले। सत्य पर चलें। अभी बिहार में ९०१ शांति सैनिक हो गये हैं। उनकी संख्या में इजाफा हुआ है। हम समझते हैं कि बिहार

क्रान्ति कर सकता है। यह दर्शन हमें हुआ है। इसीलिए बिहार को हमने अपने बाप की इस्टेट कहा है।

ग्रामदान 'तंत्र' और जय जगत् 'मंत्र'

आसाम में जो काम हम करने जा रहे हैं, इस हिसाब से गौण है। लोग बुरी हवा में बुरे काम कर डालते हैं। बाद में उन्हें उसका पश्चात्ताप भी होता है। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हुए, उस समय भी ऐसी ही हवा चली थी। लेकिन उसका मनुष्य को पश्चात्ताप होता है और वह अपने मूल स्वरूप में पहुँचता है। इसलिए हम कह रहे हैं कि इसके आगे जो जमाना आ रहा है, उसमें दुनिया होगी देश, देश होंगे प्रान्त, प्रान्त बनेंगे जिले और गाँव बनेंगे परिवार। हम एक ओर 'जय ग्रामदान' कहते हैं और दूसरी ओर 'जय जगत्'। ग्रामदान हमारा तंत्र है और जय जगत् हमारा मंत्र।

कुछ लोग हमसे पूछते हैं कि क्या इससे मसला हल होगा? हम कहते हैं—राम आये, उन्होंने मनुष्य-अवतार लिया और मसले हल किये और गये। कृष्ण ने मुरली बजायी, कुछ मसले हल किये और गये। गौतम बुद्ध ने करुणा का विचार दिया। महात्मा गांधीजी आये और गये। लेकिन मसले कायम ही हैं। हम कहना यह चाहते हैं कि मसले हल करना बड़ी बात नहीं है। करुणा की नदी बहाना बड़ी बात है। करुणा की नदी बहेगी, तो आप देखेंगे कि हिन्दुस्तान की शक्ति विकसित होगी और कभी हार नहीं खायेगी।

पावित्र्य के आन्दोलन में साथ दें

हमने बिहार में बड़ा प्यार पाया है। हमें विश्वास है, इसके आगे बिहार में सब लोग अपनी पार्टी के भेद भूलकर इस काम में लगेंगे।

एक बात और है। इन दिनों हमने 'पोस्टर आन्दोलन' शुरू किया है। गृहस्थाश्रम के दो मुख्य धर्म हैं: पावित्र्य और कारुण्य। हम भूदान के जरिये कारुण्य भावना पैदा कर रहे हैं। जब हम इन्दौर में पहुँचे और वहाँ एक महीना निवास किया, तो हमारे ध्यान में

आया कि इस पाविन्न्य पर प्रहार हो रहा है। मातृत्व की घृणा हो रही है। गंदे पोस्टर, गंदे गाने, गंदा साहित्य, गंदे सिनेमा, इन सबके खिलाफ हम हैं। लेकिन पोस्टर का काम फिलहाल हमने हाथ में लिया है, क्योंकि यह आखिरी फोर्ट है। यह फोर्ट ढह जायगा, तो अंदर दूसरे फोर्ट पर प्रहार कर सकेंगे।

अभी हम मीरजापुर गये थे। वहाँ इलाहाबाद के कुछ साहित्यिक मिलने आये थे। वे कह रहे थे कि इन दिनों इलाहाबाद में अश्लील साहित्य चल रहा है और ऐसी किताबें रोज हजारों खपती हैं। गंगा-यमुना के संगम-स्थान पर, हिन्दी भाषा के सर्वोत्तम केन्द्र में अश्लील-साहित्य चल रहा है, इसका हमें दुःख होता है। उस पोस्टर के निमित्त हम सब इस पर प्रहार कर रहे हैं। इसलिए हमने पाविन्न्य का यह आन्दोलन उठाया है। बिहार में यह काम हमने श्यामबहादुर पर सौंपा है। बिहार के शहरों में वे जाकर जोर लगाये, यह हमने उनसे कहा है।

किसनगंज —प्रार्थना-प्रवचन

९-२-'६१

२

शान्ति-सैनिकों से

विज्ञान का खयाल है कि मानव प्राणी कम से कम दस लाख साल से पृथ्वी पर है। उसमें से दस हजार साल का इतिहास मिलता है और जिसे स्पष्ट इतिहास कहते हैं, वह तो तीन हजार साल का ही है। बहुत पुराने काल मे मानव का स्वरूप अविकसित था, जैसे जानवरों का है। इसका मतलब यह नहीं कि वह जानवर की कोटि का ही होगा, फिर भी उसके पास पहनने-ओढ़ने के साधन नहीं थे। औजार नहीं थे। बालो को किस तरह सँभालकर रखें, यह भी एक सवाल था। धीरे धीरे एक-एक चीज की खोज होती गयी। आज भी हमारे पास जो औजार हैं, वे ५० साल पहले नहीं थे। इसके आगे आनेवाले ५० सालों मे भी तरह तरह के जो साधन मनुष्य के हाथ में आयेंगे, उनका भी खयाल हम नहीं कर सकते। अब तो हम १२ घंटे में अमेरिका जा सकते हैं। एक-एक साधन का आविष्कार होता गया। पहले खेती भी नहीं होती थी। गाय का दोहन कर दूध लेना भी नहीं जानते थे। बाद में भगवान् के दिये मानव-मस्तिष्क का विकास होता गया और धीरे धीरे मानव की संस्कृति विकसित होती गयी।

साधनावान् मनुष्य प्रगति के पथ पर

मनुष्य साधन और साधनावान् प्राणी है। वह एक के बाद एक औजार ढूँढ़ता गया। धीरे-धीरे बाजार में कैंची आयी। दरजी लोग तो अभी-अभी निकले हैं। पहले बुढ़िया कपड़ा सीती थी। सूई कहीं भी रख दे, तो वह दीखती नहीं थी। ढूँढ़ने में समय जाता था। बाद मे ऐसी कैंची आयी, जिसमें लौह-चुम्बक लगा था। सूई नहीं दीखती, तो भी वह कैंची को चिपक जाती। इस तरह एक-एक साधन निकलता गया और मनुष्य का जीवन सरल बनता गया। खाना हासिल करने में

बहुत संघर्ष होता था। आखिर, मनुष्य साधनवान् बन गया। पक्षी भी अपने घोंसले बनाते हैं। मधुमक्खी भी छत्ता बनाती है। दीमक बमीं बनाते हैं। उसे तो मैंने 'भुवनेश्वर' नाम दिया है। उसकी बहुत ही कुशल रचना होती है। इस तरह की रचना पशु भी करते हैं और साधन भी इस्तेमाल करते हैं। मनुष्य साधन बना सका और अपनी बुद्धि का विकास कर सका। फिर भी ऐसा जानवर से नहीं हो सका। दस हजार साल पहले का घोड़ा और आज का घोड़ा, दोनों में फर्क क्या है? यह हो सकता है कि पहले का घोड़ा अधिक मजबूत होगा और आज का कमजोर। जानवरों ने ये साधन नहीं बनाये। मनुष्य ने बनाये, इससे उसका जीवन सुलभ बना।

मनुष्य साधना करता गया। नीति के नियम बनाता गया। पुराने जमाने में ऐसे कोई नियम नहीं थे, लेकिन जैसे जैसे मनुष्य का विकास होता गया, नीति सुधरती गयी। पुराने जमाने के ऊँचे से-ऊँचे मनुष्य की नीति से आज की नीति अधिक ऊँची है। खेती की खोज होती गयी। बीज बोना और बढ़ाना मनुष्य ने ढूँढ लिया। खेती मनुष्य के जिम्मे आयी, तब से मनुष्य के जीवन में अहिंसा का विचार आया। पशु की सेवा हम लें, पशु की सेवा हम करें भी, लेकिन खाने के लिए उसे मारें नहीं। गाय का दूध हम लें, बैल से सेवा लें, लेकिन उन्हें मारें नहीं। गाय और बैल को मनुष्य अपने परिवार का अंग मानता है। इस तरह एक-एक विचार चला और अहिंसा का विचार बढ़ा।

लेकिन एक समस्या बनी रही। मनुष्य का मन अनेक विकारों से भरा ही है। कहीं किसीसे दुश्मनी हुई, तो उसे मार डाले, यह भी होता गया। जब यह चला, तब इसका बन्दोबस्त कैसे किया जाय, यह भी खयाल निकला। इस तरह काम-वासना का नियमन, क्रोध का नियमन कैसे करें, इस तरह के विचार चले।

इसके लिए दो तरीके सूझे। एक तो साधनवान् के तरीके और दूसरे साधनावान्। मनुष्य हाथ में पत्थर लेकर दूसरे को मारता है।

यह वृत्ति पशु में नहीं है। पत्थर मारना बहुत प्रगति है। बन्दर या कुत्ते पत्थर नहीं मारते। मनुष्य ने अकल की देवता बनायी। उसमें हाथी की सूँड लगायी। इस तरह कुछ साधन इस्तेमाल करते थे। वह समाज व्यवस्था के लिए एक ओर सोचता गया कि नीति शास्त्र, व्यवहार के नियम, विरासत के कानून कैसे हों और कानून के अन्दर कैसे रहा जाय? इसके लिए साधन भी बनाता गया। पहले तो पत्थर था, बाद में धनुष आया, फिर तलवार, बन्दूक, तोपें, हवाई जहाज, बम। इस तरह रोज नये-नये सुधरे साधन मानव ने ईजाद किये। किन्तु यह सारा बन्दोबस्त जानवर नहीं, मनुष्य के खिलाफ किया गया। शेर से बचने के लिए एटम की जरूरत नहीं पड़ती। शेर से बचना तो आसान है। दूसरी ओर मानव का इस दिशा में प्रयत्न हुआ कि आत्मा का विकास कैसे किया जाय? उसने तय किया—दान करो, प्रेम करो, ताकि धर्म चले। इस तरह सामान्य नीतिशास्त्र, धर्म, भक्ति, त्याग, बलिदान आदि आध्यात्मिक शास्त्र भी बढ़ते गये। आज आपको ऐसे चमत्कार देखने को मिलते हैं कि अपना बलिदान देकर कोई साधु हजारों की जान बचा लेता है, कइयों का परिवर्तन कर देता है।

आज की सरकार 'सर्वकार'!

समाज शास्त्र, कुटुम्ब व्यवस्था और धर्म का जो यह विचार चला, उसीमें से सरकार और सत्था आयी। पहले राजा बनाये गये। उनका इतना ही काम रहता था कि बाहर से हमला हो, तो बन्दोबस्त करने के लिए सरकार रहे। पहले लोग अंदर अदर का कोई झगडा हो, तो आपस में ही तय करते थे। पहले सरकार के जिम्मे बहुत छोटी ताकत थी। आखिर, जिनको आपने ताकत दी, वे धीरे-धीरे और ज्यादा ताकत माँगते गये। चोरी होती तो चोरो का बदोबस्त करना, उनके लिए कानून बनाना, जेल भेजना आदि का अधिकार उन्हें दिया गया। सिविल और मिलिटरी के साथ दूसरा भी राज्य शासन चला। उसके बाद लोकशाही आयी। वोट दीजिये और टैक्स दीजिये, यह भी चला। फिर सरकार के

हाथ में सड़कें बनवाने, इन्तजाम करने, प्रजा-पालन करने के काम भी सौंपे गये।

किन्तु इतने से निपटा नहीं, इसलिए उसमें से 'वेलफेयर स्टेट' नाम की संस्था निकली। उसका अर्थ प्रजा का हर काम, पालन-पोषण, रक्षण, शिक्षण सब राज्य ही करे। दवाखाना और सफाई के काम भी म्युनिसिपैलिटी करे। आज तो बड़े-बड़े शहरों में दूध का भी इन्तजाम कारपोरेशन द्वारा ही होता है। स्थिति यहाँ तक आ गयी कि व्यापार भी सरकार करे। खानों और रेलवे पर सरकार की मिल्कियत रहे। शादी में सुधार के कानून, मन्दिर-प्रवेश कानून, सुधार के कानून, संगीत, नृत्य, साहित्य, उत्तेजन देना, धर्म आदि को प्रोत्साहन देना, सारे काम सरकार ही करे। शिक्षण का काम तो सरकार ने ले ही लिया। प्रजा का काम इतना ही रह गया है कि वह उसे वोट दे और टैक्स दे। मतलब यह कि सरकार लोगों के बंदोबस्त के लिए पुलिस भी रखे और स्कूल भी चलाये। वास्तव में प्रजा को अच्छा शिक्षण मिल जाय, तो पुलिस की कतई जरूरत नहीं। लेकिन जब तक पूरा शिक्षण नहीं मिलता, पुलिस डिपार्टमेण्ट भी बना रहेगा। सेना भी रहेगी, साथ-साथ न्यायाधीश भी रहेगा। यह अवश्य है कि यदि मिलिटरी के लोगों ने अन्याय किया, तो कोर्ट में भी जा सकते हैं, सरकार पर भी मुकदमा चला सकते हैं। यानी सरकार का अन्याय जाहिर करने में कोई हिचक किसीको नहीं होगी, चूँकि दुनिया की भलाई-बुराई को ध्यान में रखकर ही सरकार व्यवस्था बनाती और काम करती है।

सरकार पाप-पुण्य दोनों करती है

चंबल घाटी में सरकार ने हमें एक मौका दिया। यद्यपि कानून में ऐसा लिखा तो नहीं है कि डाकुओं से गुपचुप मिलिये, उनमें परिवर्तन कीजिये, उनको संन्यास की दीक्षा दीजिये। फिर भी यह मौका सरकार ने हमें दिया। मतलब, सरकार की इच्छा है कि सज्जन की भी चले और पुलिस की भी। उसने यह मौका इसलिए दिया कि प्रजा डाकुओं के

आतंक से तंग आ चुकी थी और रोकथाम के लिए उसका पैसा भी बहुत खर्च होता था। जो डाकू शरण में आये, वे चार-पाँच दिन हमारे साथ भी रहे। पुलिस ने उसमें दखल नहीं दिया। साराश, आप शान्ति-स्थापन करते हैं, तो वह आपको प्रोत्साहन देती है और उधर मिलिटरी भी रखती है। अगर हम सरकार से कहे, तो वह शान्ति-सेना के योग क्षेम का भी इन्तजाम कर सकती है। लेकिन हम ऐसा नहीं चाहते। कारण, आज की सरकार न अति पाप करती है, न अति पुण्य; क्योंकि वह दोनों करती है—पुलिस का भी इन्तजाम करती है और शिक्षण का भी। डंडे का भी इन्तजाम करती है और सज्जन का भी। प्रायः दुनिया की सब सरकारें चाहती हैं कि पुलिस, मिलिटरी हटा सकें तो अच्छा हो। लेकिन यह भी कहती हैं कि आज की हालत में वे यह नहीं कर सकतीं। आगामी कल वे वैसी योजना बनायेंगी। मतलब, सरकार बीच की हालत मे है।

दण्ड-शक्ति और धर्म-शक्ति दोनों की चाह

आज हो क्या रहा है? इधर तो ऐसे भयानक शस्त्र आये हैं कि गफलत से भी मनुष्य का खात्मा हो सकता है। कल किसी राष्ट्र का नेता बहके, तो दुनिया खतम कर सकता है। जैसे किसी घास-फूस के मकान में कोई बेवकूफ आग लगा दे, तो उससे सारा गाँव खाक हो जायगा। इसी तरह अमेरिका, इंग्लैण्ड, रूस, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान में कोई मूर्ख निकले, तो एकदम दुनिया में आग लग सकती है। साराश, इस तरह आज दुनिया मे एक ओर शस्त्र साधन बनाने में तीव्रता आयी है, तो दूसरी ओर प्रजा को प्रेम और शिक्षण की तालीम दी जाती है, कुछ ज्ञान दिया जाता है। इस तरह स्पष्ट है कि आज की हालत मे दण्ड-शक्ति के अलावा धर्म-शक्ति और साधु-शक्ति भी जल्द-से-जल्द कारगर हो, यह चाह पैदा हुई है। यह जल्द-से-जल्द हो, तभी हम बचेंगे। एक जमाने मे सरकार का प्रतिनिधि राजा था। बाद में धीरे-धीरे गाँव के पुलिस, पटेल, पंचायत के मुखिया आदि सरकार के प्रतिनिधि बने, यानी सत्ता का विकेन्द्रीकरण हुआ। लोकशाही में सत्ता बाँटने की आवश्यकता महसूस हुई। कहा

जाने लगा सरकार की सत्ता गाँव-गाँव में हो, साधु-सत्ता भी। कोई एक साधु हो, कोई एक महाज्ञानी हो, इतना ही पर्याप्त नहीं। सबको साधुत्व और महाज्ञान मिले, ऐसा होना चाहिए। साधुत्व का पूँजीपति कोई नहीं होगा।

साधुत्व को व्यापक बनाइये

साधुत्व गाँव गाँव बँटे, अब ऐसी आवश्यकता पैदा हुई है। यह पीला साफा क्या है? गौतम बुद्ध ने बारह बारह साल शिष्यों को कसौटी पर कसा और फिर दीक्षा दी। लेकिन हमने क्या किया? पूर्णियाँ जिले में २५० लोगों को सैनिक बनने को कह दिया। पूछा जायगा : "क्या ये फौरन मर मिटेंगे?" हम कहते हैं : "हाँ, क्योंकि यह जमाने की माँग है। जैसे दण्ड-शक्ति व्यापक है, वैसे साधु-शक्ति भी व्यापक हो, यह आवश्यकता पैदा हुई है। इसलिए ये सब शान्ति-सैनिक फौरन मर मिटेंगे। वैद्यनाथधाम में हम पर मार पड़ी और हमसे ज्यादा रामदेव बाबू पर। उन्होंने कहा था : 'हम मार खाते रहे, लेकिन चेहरे पर गुस्सा न आने दिया।' अगर हमें गुस्सा आ जाय, तो हम बेवकूफ साबित होंगे और आपकी नफरत हासिल करेंगे।" हम तो कहते हैं कि हरिश्चन्द्र का पार्ट अदा करना है, तो कम-से-कम नाटक के बीच झूठ नहीं चलेगा। भले पार्ट खतम होने के बाद झूठ बोलें। वैसे ही आप शान्ति-सेना का नाटक करते समय पीला साफा जब तक सिर पर रहे, तब तक शान्ति रखिये। घर पर जाकर बच्चों को पीटना हो तो पीट सकते हैं, लेकिन उस समय पीला साफा उतार दीजिये। जहाँ सामाजिक झगड़ा होता है, वहाँ गुस्सा मत कीजिये; क्योंकि अब साधुत्व बाँटने की जिम्मेदारी आप पर आयी है। मैंने यह बताया कि एक तो साधनवान् के नाते मनुष्य की शस्त्रास्त्र बढ़ाने की योजना हो रही है। और साधनावान् के नाते मनुष्य को दूसरी योजना भी सूझ रही है, जिसकी आज ज्यादा जरूरत है। साधनवान् के तरीके गलत हैं, उससे दुनिया खतरे में है। इसलिए हमने दूसरा तरीका शांति-सेना भी बताया। उसके

हाथ में हम प्रेमरूपी शस्त्र देंगे और टैक्स के बदले शांति-पात्र, सर्वोदय-पात्र रखने की बात जनता से कहेंगे। यानी दीक्षा देकर शांति-सैनिक बनाना चाहते हैं और सम्मति के रूप में जनता के लिए सर्वोदय-पात्र की बात करते हैं।

मौवाड्योढ़ी —जिला शान्ति-सैनिकों के बीच
३१-१-'६१

शस्त्र, साधन, प्रकार और अनुशासन : २ :

आज हमें यह सोचना है कि जो शान्ति-सैनिक बनेंगे। उनके हाथों में शस्त्र कैसे होंगे? हिंसक सेना के हाथों में शस्त्रों का बल होता है। नये-नये शस्त्रों की खोज हो रही है। वैज्ञानिक उन्हें मदद दे रहे हैं। किन्तु हमारी सेना के शस्त्र प्रीति और क्रान्ति होंगे।

आत्मवत् प्रेम सब पर हो

कोई भी शांति-सैनिक अपने जीवन में पूर्ण प्रेम विकसित न करेगा, तो कारगर नहीं हो सकता। उसका सारा दारोमदार, उसकी सारी शक्ति यही है कि सामनेवालों का हृदय-परिवर्तन होकर वे शान्त हों। यह हृदय-परिवर्तन प्रेमशक्ति पर निर्भर है। प्रेम में यह ताकत है और वह प्रेम भी आत्मवत् प्रेम हो। मतलब, जितना प्रेम खुद पर है, उतना और वैसा ही दूसरे पर भी हो। यों प्रेम तो होता है, लेकिन आत्मवत् प्रेम सीखने की बात है।

हम 'अपने' को अपना स्वरूप, देह समझते हैं। लेकिन यह देह, मन, बुद्धि केवल अपनी नहीं होती। हमारी यह देह भी अनेक की मदद से हृष्ट-पुष्ट हुई है। वैसे यह देह निर्मित ही हुई है, माता-पिता के त्याग से। हम देह पर जितना प्रेम करते हैं, उतना ही माता-पिता और समाज पर होना चाहिए, जिसने इसे पाला-पोसा है। हमारी मन बुद्धि भी समाज की है। हमें शिक्षण घर में मिला, बाहर भी मिला। वह सब देने में

सबका हाथ है, हमारे पूर्वजों का भी हाथ है। इसलिए वह चीज भी सामाजिक है।

हम क्या हैं, इस पर सोचें तो यही पायेंगे कि जो चीज दूसरे में है, वही हममें है। हम रात में सो जाते हैं, हाथी भी सोता है। दोनों में कोई फर्क नहीं। गाढ निद्रा में प्राणी मूल रूप में प्रवेश करता है और जाग्रति मे उसका आनन्द महसूस करता है। [मूर्च्छा से उठने पर मनुष्य आनन्द का अनुभव नहीं करता, शून्यत्व का अनुभव करता है। क्लोरोफार्म से मूर्च्छा दी जाती है, यह बेहोश करने का प्रकार है। इसलिए वह अवस्था निषेधक है, अभावात्मक है। लेकिन निद्रा में सिर्फ भान नहीं होता, ऐसी बात नहीं, उसमें आनन्द का अनुभव होता है। निद्रा ठीक नहीं आयी, तो दुःख होता है। मैं यह कहता था कि गाढी निद्रा में मनुष्य-मनुष्य में, मनुष्य और प्राणी में कोई फर्क नहीं होता।] हमारा शरीर भी उन्हीं पंचभूतों से बना है, जिनसे अन्य प्राणियों का बना होता है। फिर भी हमारे शरीर की बनावट सामाजिक है। मनुष्य एक बौद्धिक वस्तु है। मनुष्य के पास बुद्धि है, जो दूसरे प्राणी के पास नहीं है। इसलिए हम ठीक ढग से सोचें, तो स्पष्ट होगा कि हम दूसरों पर आत्मवत् प्यार करें, यानी अपने इस शरीर का हमें जितना सुख-दुःख प्रतीत होता है, उतना ही दूसरे के शरीर का भी सुख दुःख हो। पानी पीने का जो आनन्द है, उससे ज्यादा आनन्द प्यासे को पानी पिलाने में है। कारण, उसमें आत्मा का उतना विकास हुआ होता है, इसलिए पानी पिलाने का आनन्द उन्नत है। अपना दुःख सबको सह्य होना चाहिए। हमें एक दिन खाना न मिले, तो सहन हो; लेकिन अगर दूसरे को खाना न मिला, तो वह असह्य होना चाहिए। यह आत्म विकास का खयाल है। अपने पर जो प्रेम है, वही दूसरे पर हो, इसका यही मतलब है।

विचार-परिवर्तन बुद्धि से, हृदय परिवर्तन प्रेम से

जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक हृदय-परिवर्तन अशक्य है। मैं आप पर अपने जितना ही प्यार नहीं करता, तो भी आपका 'विचार

परिवर्तन' बुद्धि से कर सकता हूँ। उसमें प्रेम कितना है, यह सवाल ही नहीं है। विचार-परिवर्तन के लिए अच्छे विचार की जरूरत है। लेकिन सामनेवाले का 'हृदय-परिवर्तन' करना है, तो जितना अपने पर प्यार है, उतना उस पर भी होना चाहिए। यह शांति-सेना के हाथ का शस्त्र है। दूसरे के लिए अपने से अधिक प्रेम हो, कम तो हो ही नहीं।

क्रांति की भावना भी आवश्यक

शान्ति सेना की दूसरी शक्ति है, क्रान्ति की भावना। आज के समाज की परिस्थिति जिसे सहन होती है, वह शान्ति स्थापना की कोशिश करने पर भी सफलता हासिल नहीं कर पायेगा। परिस्थिति का जो दुःख दूसरे सहन करते हैं, वह उसे महसूस नहीं होगा। उस प्रकार की अवस्था में हालत बदलने की उसमे तीव्रता नहीं होती। जैसे पुलिस शान्ति के लिए जायगी, तो उससे कहा जायगा कि तुम्हे डंडे से पीटना नहीं है, लेकिन शान्ति स्थापित करनी है। उस हालत में वह उतनी ही अशान्ति को रोक सकेगा, जो नाहक पैदा हुई है। कुछ अशान्ति तो मूर्खता से भी होती है, अकारण भी झगडे होते हैं। वहाँ पुलिस जाकर शान्ति कर सकती है। लेकिन जहाँ झगडे के मूल मे सकारण असंतोष है, उस परिस्थिति को बदलने की युक्ति जिसके पास नहीं, उसके पास शान्ति की शक्ति नहीं है। इसलिए शान्ति-सेना के पास प्रीति और क्रान्ति ये दो अस्त्र होंगे, तभी वह कारगर होगी। इसके लिए आज का समाज कैसा है, उसके क्या क्या दोष हैं, वे बदलने हैं, ऐसा मानसिक निश्चय और साथ साथ प्रीति होनी चाहिए।

न्याय-प्रधान नहीं, समाधान-प्रधान बनें

क्रान्ति की भावना हो भी, तो हम सकारण हुई लडाई मे किसी एक का पक्ष ले लेते हैं। मान लीजिये, मालिक और मजदूर की लडाई है। उसमें एक का कहना ठीक है, यह सोचकर शांति-सैनिक किसी एक का पक्ष ले, तो वह बिना सोचे काम करेगा। वह शान्ति-स्थापना में कारगर नहीं होगा। इसलिए उसे अपने में यह गुंजाइश रखनी चाहिए कि मुझे

न्याय नहीं देना है, समाधान करना है। शान्ति-स्थापना के लिए जो जायगा, वह न्याय-प्रधान नहीं, समाधान प्रधान होगा। साधारण समय में वह शान्ति के कामों में लगा रहेगा, प्रेम-प्रकाशन में लगा रहेगा। बीमारों की, दुःखियों की सेवा उसके हमेशा के पेशे होंगे, जिससे प्रेम-प्रकाश होता रहेगा। ये जो दो अस्त्र मैंने बताये, उन्हें विकसित करने के लिए कार्यक्रम भी होना चाहिए।

हम कहीं कम्युनिज्म की ओर न मुड़ें

अभी कुछ दिन पहले आशादेवी हमारे पास आयी थीं। तीन दिनों तक साथ रहीं। जाते समय उन्होंने कहा : लोक हृदय में प्रवेश करने के लिए शान्ति-सैनिकों को दुःखियों को दिलासा देने और बीमारों की सेवा करने का काम करना चाहिए। यह तो ठीक है, लेकिन मुझे अभी लगता है कि सब शान्ति सैनिक भूदान-प्राप्ति में लग जायँ और उसके साथ-साथ दूसरे सेवा-कार्य भी करते रहें। भूदान को भुलाकर शांति-सैनिक काम करेंगे, तो वे कारगर नहीं होंगे। जो सद्भावना समाज में हम पैदा करना चाहते हैं, वह भूदान से ही हो सकेगी। उनकी यह बात सही है कि स्थितिस्थापकता (स्टेटस को) का बचाव करने-वाले शान्ति कार्य नहीं कर सकते। आज की हालत में भी हमें शान्ति-कार्य करना है और अशान्ति मिटानी है, लेकिन उसमें सावधानी रखनी होगी। वह यह कि कहीं जमीन का झगड़ा है, जालिम और जमींदार मजदूर को सताता है, तो उस जमींदार की जान की रक्षा भी हमें करनी होगी, यह जानते हुए कि उसीने क्षोभ का कारण पैदा किया था। उसके लिए अपने प्राण को भी हम खतरे में डालेंगे। अगर हम यह नहीं समझते और यह मानते हैं कि जमींदार जैसा करता वैसा पाता है, तो शान्ति सेना का पेशा हमने समझा नहीं। हमें जमींदार को बचाना चाहिए, अन्यथा हमारी शान्ति और हमारा विचार कम्युनिज्म की ओर जायगा। अगर किसी की भी जान को खतरा हो, तो उसे बचाना हमारी जिम्मेदारी है। और उस जमींदार ने झगड़ा पैदा किया, यह कहकर अगर

हम उसे नहीं बचाते, तो हमने अपनी जिम्मेदारी टाली, यही माना जायगा। ग्रामदान और भूदान माँगने का अधिक हक हमें तभी प्राप्त होगा, जब मालिक की जान के लिए हम प्राण-त्याग करने को तैयार होंगे। इसका दर्शन होगा, तो हम कारगर होंगे और सामनेवाला हमारी माँग इनकार नहीं करेगा। वह समझेगा कि ये लोग हमारे हित की बात कर रहे हैं।

सर्वजनाधार बनें !

इसीलिए हमने कहा था कि शान्ति सेना से ग्राम-दान की रक्षा होगी। उसके बिना ग्राम-दान संभव नहीं है। जहाँ जिगर का टुकड़ा देने की बात है, वहाँ हमारे पास ज्यादा प्रेम होना चाहिए और हमारे दिल में ऐसी भावना होनी चाहिए कि देनेवाला भी खुद पर उपकार करता है। उनको आप पर एकदम भरोसा हो जाना चाहिए। लेकिन कुल बात तब बनेगी, जब हमारे सेवकत्व में लोगों का विश्वास हो। हम सर्व-जनाधार होंगे, इसलिए कि सर्वजनों का हित हम चाहते हैं। किसीका हित चाहते हैं और किसीका नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारे हृदय में सबके लिए प्रतिष्ठा होनी चाहिए। जो देता है, उसके लिए भी और जो नहीं देता है, उसके लिए भी। इस तरह हम लोगों के विश्वासपात्र बनें।

शांति-सैनिक और रचनात्मक कार्यकर्ता

सेवा के कुछ काम करने और समाज बदलने के काम में शान्ति-सैनिक की भूमिका रचनात्मक कार्यकर्ताओं से अलग पड़ेगी। शान्ति-सैनिक सेवा करेगा, लेकिन शरीर और वाणी से जितना हो सकेगा, उतना ही करेगा। बाकी समाज से करायेगा, लेकिन उसके लिए कोई यंत्र या तंत्र खड़ा नहीं करेगा। रचनात्मक कार्यकर्ता उसके लिए यंत्र खड़ा करेगा, तंत्र बनायेगा। शान्ति सैनिक यह सब करवायेगा, खुद करेगा नहीं। शरीर को वह औजार समझकर अपने को सीमित रखेगा। शरीर से काम करना और छूटना, इससे अधिक वह नहीं करेगा। नहीं तो क्या होता है? *लगे हैं मकान बनवाने, उसके साथ चार-पाँच घंटे दूसरे काम में भी* चले गये। शान्ति-सैनिक इतना सारा नहीं करेगा।

खादीवाले भी शान्ति सैनिक

मैं हमेशा मुख्य विचार को कायम रखते हुए उसे मृदुल, नरम और साफ करता रहता हूँ। यह मूल विचार को ढीला करने के लिए नहीं, बल्कि मजबूत बनाने के लिए करता हूँ। जैसे आपने यहाँ तय किया है कि १० हजार की आबादीवाले गाँवों में एक खादीवाला खड़ा रहे और वह उस क्षेत्र की शांति की जिम्मेवारी उठाये। मैं उसे शांति-सैनिक मानता हूँ, बावजूद इसके कि वह आपकी आज्ञा के बिना दूसरे क्षेत्र में नहीं जायगा। मैं सब कहता हूँ, फिर भी यह बोलता रहूँगा कि कहीं भी जाने के लिए अगर शांति सैनिक तैयार नहीं होगा, तो उससे कुछ काम नहीं होगा। जैसे, ब्रह्मचर्य पर मैं जोर देता हूँ, फिर भी गृहस्थाश्रम के लिए सम्मति और आशीर्वाद भी देता हूँ। यह कोई गलती नहीं करता। इसी तरह शांति सेना को भी समझिये। वे खादी का काम करेंगे। मतलब, जो खादीवाले हैं, वे शान्ति सैनिक भी हैं, तो वहाँ उस विचार को मजबूत करता हूँ।

यह सब इसलिए कहा कि मैं खादीवालों से हमेशा कहता आया हूँ कि आप शांति सैनिक हैं ही। अगर नहीं हैं, तो वैसा लिखकर दीजिये, यह मैंने परिस्थिति का भान कराने के लिए कहा। वे शांति-सैनिक नहीं होते, ऐसा नहीं। लेकिन अगर हम अपने काम में इतने फँसे रहें और अपने गाँव के नजदीक यदि कहीं अशांति हो, तो वह शोभादायक नहीं होगा। पंजाब में बीबी अमतुस्सलाम बहुत अच्छा काम करती हैं। देखकर अच्छा लगा। लेकिन उनके नजदीक ही पटियाला में दंगा हुआ, खून हुए और उनका कोई संबंध नहीं रहा। ऐसा क्यों हुआ, यह मेरी समझ में नहीं आता। हमारे आश्रमों के नजदीक ऐसी परिस्थिति निर्माण होती है, तो हमें उसमें कूद पड़ना चाहिए। अशांति के लिए जिम्मेदार हम ही हैं। गुजरात में जुगतराम भाई के आश्रम के नजदीक डेढ़ मील पर गोली चली। लोग बेमान हो गये। लेकिन हमारा उसके साथ ताल्लुक न हो, यह मैं समझ नहीं सकता।

नजदीक कहीं आग लगी हो और हमारा उससे कोई सम्बन्ध न हो, ऐसे बेभान होंगे, तो स्वकर्तव्य च्युति मानी जायगी। इसलिए खादीवालों को अपने-अपने क्षेत्र मे परिमित रहना है और उतनी सहूलियत उनको मिलेगी। लेकिन उनसे यह कहा जायगा कि तुम शाति-सैनिक हो और खादी का काम भी करोगे, तनखाह भी पाओगे, पर उतने समय लोक-संपर्क में, परिचय मे रहोगे और मौके पर दंगा होगा, तो शाति का कार्य कर सकोगे। इसके लिए मै राजी हो जाऊँगा। मै इसे शाति सेना का विस्तार मानता हूँ। इससे विचार को क्षति नहीं पहुँचती। इससे विचार फैलता और व्यापक बनता है। मै तो कहूँगा कि घर-घर में शाति-सैनिक हो जायँ और घर-घर से पीले साफावाले निकलें, तो बहुत अच्छा हो, यानी वह कार्य व्यापक होगा। इसलिए खादी-कामवाले इस तरह की जिम्मेवारी उठा लेते हैं और प्रान्तभर में फैल जाते हैं, तो हम अपने कार्य का विस्तार ही मानेंगे।

शान्ति सैनिकों के तीन प्रकार

पीला साफा अच्छा ही है। अच्छे का गुण है कि मौके पर मर मिटें और उसके पहले अपने क्षेत्र का परिचय रखें। जो भी अच्छा काम करता है, वह शाति-सेना का विस्तार ही है। किंतु मूलस्रोत खतम हो जाय और शाति सेना का विस्तार होता रहे, यह नहीं हो सकता। इसलिए हमने कहा कि शाति सैनिक हुक्मबरदार होगा। कहीं भी भेजेंगे, तो वह जाने के लिए तैयार रहेगा। मतलब, एक होंगे स्थानीय शाति-सैनिक, दूसरे क्षेत्रीय शाति-सैनिक और तीसरे राष्ट्रीय शाति सैनिक। स्थानीय शाति-सैनिक अपने-अपने स्थान में काम करेंगे और क्षेत्रीय शाति सैनिक अपने क्षेत्र में, राष्ट्रीय शाति-सैनिक राष्ट्र में कहीं भी अशाति हो, जा सकते हैं। इस तरह क, ख और ग—तीन वर्ग हो गये। क वर्ग के योगक्षेम की जिम्मेदारी समाज की और खादीवालों की होगी। योगक्षेम और शिक्षण की योजना क वर्ग के लिए होगी। गाँव-गाँव के लोग भी योगक्षेम की जिम्मेवारी उठा सकते हैं। महीना-दो

महीना उनके शिविर लिये जायँगे, उनको तालीम दी जायगी। वे स्वावलंबी और शरीर श्रम करनेवाले होंगे। खेत में काम करने के लिए भी जायेंगे। शरीर श्रम तो हमारा व्रत ही है। दूसरे शब्दों में कहें, तो एक 'स्थानीय', दूसरा 'क्षेत्रीय' और तीसरा 'मुक्त' शांति सैनिक होगा। राष्ट्रीय के बदले मुक्त शांति सैनिक। क्योंकि अभी विश्व शांति सेना का विचार चला है, तो मुमकिन है कि बिहार का कोई शांति सैनिक विदेश में भी जाय। मतलब, मुक्त शांति सैनिक ज्यादे जवाबदेह होंगे।

अनुशासन अत्यावश्यक

कुछ लोग हमसे पूछते हैं कि आप तो विचार शासन की बात करते हैं और इसमें तो जब ऊपर से हुक्म आयेगा, तब जाना ही पड़ेगा। खैर, जाना तो पड़ेगा ही।

जनरल रोमेल का उदाहरण

जर्मनी में जनरल रोमेल नामक सर्वोत्तम सेनापति था। दूसरे महा-युद्ध के समय उसने हिटलर से कहा था कि अधिक टैंक मिलेंगे, तो मैं हिन्दुस्तान तक पहुँच सकता हूँ। हिटलर की कौंसिल में उस पर चर्चा हुई। हुक्म मिला, उतने ही टैंकों से निभाना होगा। जनरल रोमेल का अपनी स्ट्रेटेजी पर विश्वास था, फिर भी उसने हुक्म माना। आखिर, उसने जैसा सोचा था, वैसा ही हुआ। धीरे-धीरे वह हारता ही गया। उसके टैंक रोजमर्रा बिगड़ते गये और वह दुरुस्त करता गया। आखिर वह पकड़ा गया और मारा भी गया। इतिहास लिखेगा कि यदि जनरल रोमेल की बात मानी जाती, तो जर्मनी युद्ध में न हारता।

हुक्म मानना व्यवस्था के लिए जरूरी

तो, जैसे हिंसा की सेना में हुक्म मानते हैं, वैसे शांति-सेना में भी होना चाहिए। अगर गम्भीर मतभेद रहे, कोई जोरदार सिद्धांत का मत-भेद हो जाय, तो उसमें से हट जायँ। लेकिन साधारण मतभेद हो, व्यव-हार का मतभेद हो, तो विवेक-बुद्धि से काम लेना चाहिए। हमें यह ध्यान में रखना होगा कि आपका मुकाबला चीन के साथ है। उसके पास हिंसा की शक्ति है और हजारों सैनिकों को वे इधर से उधर भेज सकते हैं। तत्काल ही वे शांति कर देते हैं और मौके पर रक्षण दे देते हैं। इसलिए उस पर यानी हिंसा की सेना पर लोग विश्वास कर लेते हैं। शांति सेना में कहीं जाने का हुक्म हुआ, तो जिसे जहाँ जाना पसन्द आये वहीं जायगा—इस तरह यदि अपना अपना न्याय और अक्ल हर कोई चलाये, तो यह काम बन नहीं सकता। सारे सिपाही ठीक हुक्म के अनुसार जाने चाहिए। सामूहिक कार्य में एकदम जुट जाने की शक्ति अहिंसा को दिखानी होगी। वैसे विचार में आपको पूर्ण आजादी है, लेकिन जब हम शांति-सेना में नाम देते हैं, तो हमें हुक्म मानने की तैयारी रखनी होगी। फिर चाहे उसके मुताबिक चलने से हम फेल क्यों न हों।

नेपोलियन ने एक बार हुक्म नहीं माना, तो भी उसकी जीत हुई थी। फिर भी उसने हुक्म नहीं माना, इसलिए उस पर मुकदमा चलाया गया। सजा तो उसे कैसे देते, फिर भी मुकदमा चलाने का नाटक अवश्य किया गया। जहाँ आप इतनी व्यवस्था रखते हैं, वहाँ आपको हुक्म मानना ही चाहिए। जहाँ आग लगी है, वहाँ आपको हुक्म के अनुसार पहुँचना ही चाहिए। मुमकिन है कि आपको वहाँ भेजने पर भी आग न बुझे, तो भी आपको हुक्म का पालन तो करना ही होगा। लेकिन आग न बुझे और आप हुक्म भी न मानें, तो व्यवस्था नहीं रहेगी। उसके बजाय-आप अपनी अक्ल चलायेंगे तो आग फैलेगी, यह भी मुमकिन है।

नाम लिखाना अनिवार्य क्यों ?

शांति-सेना में नाम देना आपकी मर्जी पर है। कुछ लोग कहते हैं कि नाम न देते हुए हम तो काम कर ही सकते हैं। लेकिन अगर नाम नहीं देते, तो हम यह कैसे मानें कि हमारे हुक्म देने पर वे उसे मानकर जायेंगे ही। एक सभा में जब मैंने ऐसा कहा, तो वल्लभस्वामीजी ने अपना नाम लिख दिया। मतलब यह कि हम चाहे काम वही करते हों, तो भी नाम अगर नहीं लिखाते हैं, तो यह नहीं समझा जा सकता कि कहीं जाने का हुक्म दिया जायगा, तो उसका पालन होगा ही। *व्यक्तिगत सत्याग्रह के बारे में बापू ने हमें चिट्ठी लिखकर बुलाया* और पूछा कि "व्यक्तिगत सत्याग्रह की बात है, क्या तुम जा सकते हो?" मैंने कहा: "आपकी आज्ञा मेरे लिए यमराज की आज्ञा के समान है। अब यहाँ से वापस जाने की भी जरूरत नहीं है, यहीं से मैं इस काम के लिए जा सकता हूँ।" उनको मुझसे पूछना पड़ा कि क्या तुम जा सकते हो? अगर शांति-सेना होती, तो इस तरह पूछने की जरूरत उन्हें महसूस न होती। शांति-सेना में नाम दे दें और कहें कि हम दो दिन बाद जायेंगे, तो दो दिन में तो अनर्थ भी हो सकता है। कहने का मतलब यही है कि हम नाम न दें, तो भी काम करते हैं, ऐसा कहने से *शांति-सेना नहीं बनती।*

विचार-शासन को बाधा नहीं

साराश, शान्ति सेना मे अनुशासन मानना ही होगा और वह भी अपनी इच्छा से मानना होगा। गीता में भगवान् ने अर्जुन को पूर्ण उपदेश दिया और कहा : 'यथेच्छसि तथा कुरु'—पूर्ण विचार के साथ जैसा सोचते हो, वैसा करो। जहाँ उपदेश खतम होता है, भगवान् आखिर में कहते हैं : 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'— सभी धर्मों को छोडकर मेरी शरण में आ जाओ। इसका मतलब ही है कि अपनी इच्छा छोडने की इच्छा तुम्हें होनी चाहिए। फिर बुद्धि का आश्रय ले लो। भगवान् बुद्ध ने 'बुद्धं शरणं गच्छामि', 'धर्मं शरणं गच्छामि', 'सघ शरणं गच्छामि'—ऐसी तीन शरणागतियाँ बतायीं, लेकिन श्रीकृष्ण ने कहा, विवेक बुद्धि की शरण मे जाओ और आखिर में कह दिया, 'मेरी शरण आओ'। कमाडर वैसे ही करेगा। विचार की आजादी तो हो ही, लेकिन हुक्म का पालन करना होगा। इसमें विचार शासन को बाधा नहीं आती।

बलिया —जिला शान्ति सैनिकों के बीच

१-२-'६१

शांति-सेना के लिए कार्य : ३ :

इसके पहले दो तीन जगह शान्ति सैनिको के साथ बोलने का मौका मिला, लेकिन इस वक्त इस जिले में जो टोली इकट्ठा हुई, ऐसा दर्शन इसके पहले नहीं हुआ। एक जिले में हम योजना करते हैं, तो जिले के खयाल से सोचना पडता है। इस जिले मे २५० शाति सैनिको की जरूरत है और अभी १०० शाति-सैनिक मिले हैं।

हमारा मिला-जुला कार्यक्रम

भूदान, ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य, शाति-सेना—यह सब हमारा मिला-जुला कार्यक्रम है। इसमें से एक-एक चीज को अलग अलग कर सोचेंगे,

तो दर्शन स्पष्ट नहीं होगा। इसलिए शांति की मूल कल्पना जब निर्माण हुई, तब भी हमने यही समझाया था कि भूदान के काम को हम पिछड़ने नहीं देंगे। भूदान के लिए घूमेंगे कौन? वैसे जब आन्दोलन जोर से चलता है, तो थोड़े दिन मदद के लिए लोग आते हैं। लेकिन सतत घूमने का काम कौन करेगा? यह काम करेगा शांति-सैनिक। जब मरने का काम आयेगा, तो वह जरूर मर मिटेगा, लेकिन हमेशा प्रीति और शान्ति का काम करेगा। ये दोनों भूदान के ही काम हैं। इसके अलावा वह और भी काम करेगा, परन्तु भूदान प्राप्त करना और बाँटना शान्ति सेना के जिम्मे होगा। यह कायम की सेना तैयार हो रही है और भूदान के लिए तैयार हो रही है।

शान्ति-सेना के लिए भूदान-कार्य जरूरी

बिहार में तो हमने यह स्पष्ट ही कह दिया है कि आपको तो भूदान माँगना ही है। अपना संकल्प पूरा करना आपका प्रथम कार्य है। आप जानते हैं कि सेना को नागरिक कार्य भी दिया जाता है। जब हम कश्मीर में थे, तो बहुत बड़ी बाढ़ आयी थी। रास्ते वगैरह टूट गये थे। तो फौजी भाइयों को रास्ते बनाने का काम दिया गया था। लार्ड वेवेल के जमाने में गुजरात में अकाल पड़ा था। उस वक्त भी फौज ने काम किया। इस तरह जो महत्त्व के काम होते हैं, जिनमें व्यवस्था की जरूरत होती है, उसमें सेना काम करती ही है। नहीं तो पाँच लाख की सेना को सिर्फ खिलाने का काम रहेगा, यानी वह एक बोझ ही रहेगी। इसलिए कुछ-न-कुछ काम हिंसा की सेना को भी दिया जाता है। फिर हमारी तो अहिंसा की सेना है, रचनात्मक काम ही इसकी बुनियाद है। अतः भूदान के काम से शांति-सैनिक बनते हैं, तो अच्छा ही है। हमने पहले ही कहा था कि भूदान का प्रोग्राम शांति-सेना के लिए जरूरी है।

आशा के स्रोत

हमसे सवाल पूछा गया कि अभी तो आप हैं, इसलिए आपकी

आज्ञा का पालन करने में संतोष होता है, लेकिन आपकी गैरहाजिरी में क्या होगा? सब काम सामूहिक तौर पर ही होना चाहिए। अखिल भारत शान्ति सेना समिति मैंने बनायी है। जगह जगह जो शांति सैनिक होंगे, उनको सलाह देने का, मार्ग दर्शन करने का काम वह समिति करेगी। जो प्रान्तीय समितियों के जरिये प्रान्त का प्रत्यक्ष काम होगा, वहाँ से आज्ञा पत्र दिये जा सकते हैं। सर्व सेवा संघ तो मातृस्थानीय है, इसलिए वहाँ से भी आज्ञा-पत्र आपको मिल सकते हैं। लेकिन जो कुछ भी होगा, वह प्रान्त के सलाह मशविरे से होगा। रोजमर्रा का काम दफ्तर करेगा ही, लेकिन विशेष मौके में सर्वोदय मंडल से सलाह मिलेगी और फिर प्रान्तीय समिति आज्ञा देगी। अ० भा० शान्ति सेना समिति से भी आज्ञा मिलेगी और वह सर्व सेवा संघ की ओर से होगा। सर्व सेवा संघ चुनी हुई सर्वसाधारण लोगों की जमात है। इसलिए जब सर्व सेवा संघ शान्ति सेना समिति बनाता है, तो वह चुनी हुई है, यही मानना पड़ेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और शांति-सेना

एक प्रश्न यह भी पूछा गया है कि क्या शान्ति सेना (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) के जैसा संगठन होगा? उसका मैंने अध्ययन नहीं किया है। लेकिन जितना मैंने देखा, उनमें गुप्तता काफी रहती है। वह मैं ठीक नहीं समझता और वह मिसाल भी ठीक नहीं। यह बात अलग है कि वह संस्था कई प्रकार के लोकोपयोगी काम भी करती है। सेना का संगठन भी अच्छा ही होता है। लेकिन वह मिसाल भी उपयोगी नहीं। हमारा हर मनुष्य अपने काम में आजाद होगा। सामान्यतः जहाँ वह रहता और जहाँ काम करता है, वहाँ जो कुछ भी करता है, अपनी पूरी जिम्मेदारी से करता है। लेकिन यदि आज्ञा मिलेगी, तो उसे क्षेत्र छोड़कर जाना होगा। अपने स्थान में अपनी अक्ल का उपयोग वह करेगा और जो कुछ उसे बताया गया है, वह काम करेगा। जैसे, भूदान का काम है। गाँव-गाँव का सर्वे करने का काम वह करेगा। खास काम में उसे

आज्ञा दी जायगी, बाकी रोजमर्रा के काम में पूर्ण आजादी होगी, गुप्तता नहीं।

समाज के दो टुकड़े कर हम कभी नहीं सोचेंगे। उससे मूल विचार को बाधा पहुँचेगी। मालिक मजदूर, गाँववासी, नगरवासी, किसी प्रकार का भेद विचार में किया, तो वह हमारे मूल विचार के विरुद्ध जायगा। एक एक विभाग का हित करने के लिए गुप्तता होती है, लेकिन यह हमारा खुला आयोजन है। इससे इसमें विकास के लिए पूरा मौका होगा। आपको अपनी बुद्धि से ही काम करना होगा। ऊपर से किसी विशेष प्रसंग में आज्ञा दी जायगी। आप भी ऊपरवालों की सलाह माँगें, तो वह मिलेगी। मतलब यह कि कुछ बातों में आज्ञा, कुछ बातों में मदद और कुछ बातों में सलाह होगी।

आध्यात्मिक विकास आवश्यक

कार्यकर्ताओं का जितना व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास होगा, काम उतना ही आगे बढ़ेगा, यह हमने हमेशा कहा है। जितना हम अपने पर प्यार करते हैं, उतना ही दूसरे पर करेंगे, तभी हृदय परिवर्तन की शक्ति आयेगी। यह कार्यकर्ताओं के आचरण पर, बोलने के ढंग पर बहुत कुछ निर्भर करता है। फिर भी हमें खयाल रखना चाहिए कि हममें से किसीको 'काजी' नहीं बनना है। फलाना मनुष्य कितना अपरिग्रही है? फलाना दो कोट क्यों रखता है? रिस्टवाच क्यों रखता है? इस तरह के सवाल हमें नहीं पूछने चाहिए।

काठियावाड़ में हमसे सवाल पूछा गया था कि "क्या शांति सैनिक बीड़ी पी सकता है?" मैंने कहा "क्या प्रतिज्ञा पत्र में न पीना लिखा है? अगर नहीं, तो पी सकता है।" इस पर कहने लगे "शान्ति-सैनिक बीड़ी पीयेगा, तो लोगों में आदर नहीं पायगा।" मैंने कहा "अगर ऐसा है, तो फिर नहीं पीयेगा। अगर लोगों में आदर भाव पैदा नहीं होता, जिस काम से हमारे आदर का खंडन होता है, वह काम शांति-सैनिक नहीं कर सकेगा। लोगों का

विश्वासपात्र, प्रेमपात्र, आदरपात्र तो उसे होना ही चाहिए, तभी काम होगा। यह अलग बात है कि बीडी पीनेवाला समाज हो, जैसे अमेरिका है, तो वहाँ बीडी पीने से आदर कम नही होगा।"

दूसरों के लिए उदार बनें

सार यह है कि हम अपना व्यक्तिगत विकास करें, अपने को ज्यादा कसें, लेकिन दूसरे के लिए उदार बनें। उस मनुष्य की क्या भूमिका है, इसे जाने बिना हम उसके बारे मे कुछ कह नहीं सकते। सोखोदेवरा में हम गये, तो हमें यह बताया गया कि वहाँ बिलकुल जगल था, जिसे तोडकर यह सारा बनाया गया है। अगर हमसे यह कोई नहीं बताते, तो पुराने रूप का खयाल हमें न आता। इसी तरह किसी मनुष्य को समझने के लिए उसका पूरा जीवन समझना चाहिए और वह मेरी तरफ जिस दृष्टि से देखता है, उसी दृष्टि से हमें भी उसकी तरफ देखना चाहिए। पुराने जीवन में क्या त्याग किया, क्या मुसीबतें आयीं, यह देखना चाहिए, तभी हम परिस्थिति को समझ सकेंगे।

झूठ तो हमें बोलना ही नही चाहिए। अगर हम झूठ बोलते हैं, तो शान्ति सैनिक नही हैं।

शरीर श्रम तो है ही

शरीर परिश्रम की हमारी बात तो है ही। चरखा सघ में एक गुण्डी देने का नियम था और उसकी रिपोर्ट देनी पडती थी। लेकिन वह रिपोर्ट ठीक नही आती थी। तब नियम किया गया कि गुण्डी अगर नहीं देते, तो तनख्वाह नहीं मिलेगी। यह कोई गलत काम किया, ऐसा तो मे नहीं कहूँगा। लेकिन इस तरह नियम बाँधने को मैं राजी नहीं। यह मैं सेवकों की विवेक बुद्धि पर छोड देता हूँ। में भी शरीर श्रम करता था। अभी एक किताब मेरे हाथ में आयी, जिसमें मेरा अपना पुराना पत्र पढने को मिला। चौबीस साल पहले लिखा हुआ है। उस पत्र में मैंने २४ के बदले ३० घटे का हिसाब दिया है। उन दिनों मे शारीरिक और मानसिक

काम हर क्षण किया करता था। एक एक क्षण का हिसाब रखता था। एक क्षण भी बिना काम का नहीं जाता था। उस पत्र में कुल ३० घंटे का जो हिसाब दिया है, उसमें निद्रा वगैरह सबका हिसाब दिया है और उसके नीचे एक वाक्य है कि भगवान् ने तो २४ घंटे ही दिये, लेकिन चरखे ने तीस घंटे बनाये। मतलब, रोज छह घंटे मैं कातता था और उसी समय सिखाता भी था। इस तरह कुल तीस घंटे होते थे। यह सब मैंने इसलिए कहा कि ऐसे जमाने में हमने इतना काम किया है, जब हम जवान थे। बिहार की पहली यात्रा में भी हम डेढ़ पौने दो घंटा खेत में जाकर जमीन तोड़ने का शरीर श्रम का काम करते थे। लेकिन हमारे शरीर ने साथ नहीं दिया, क्योंकि चलना भी पड़ता था, इसलिए हम जल्दी थक जाते। इसका खयाल बहुतों को नहीं है कि व्याख्यान में कितना परिश्रम करना पड़ता था। हर सभा में एक ही चीज दुहरानी हो तो अलग बात है, लेकिन ऐसा नहीं होता। इसलिए हमने मान लिया है कि शरीर श्रम यानी चलना ही है।

आग्रह केवल 'यम' का

शांति सैनिक १५-२० मील रोज चलता है, तो उसने शरीर श्रम कर ही लिया, ऐसा माना जायगा। अलावा वह बीमारों की सेवा भी करे। लेकिन आचरण के कुछ नियम बनाना मैं आपके लिए नहीं चाहता। मैं जकड़ना नहीं चाहता, लेकिन जिसे हम 'यम' कहते हैं, उसका आग्रह रखूँगा। सत्य, अहिंसा और संयम ये मुख्य 'यम' हैं, बाकी के तो नियम हैं।

है, तब मेरा चलता है। पक्षी सचार करता है। हर खेत अपना ही है, ऐसा सोचता है। ऐसा ही उनका जीवन है। कितने पैसे पास में आते हैं और जाते हैं, उसका कोई हिसाब नहीं रहता। बापू का बिल्कुल उलटा था। एक एक पाई का हिसाब वे रखते थे और हरएक का अलग अलग रखते थे। लेकिन पण्डितजी साधारण लोगों का जो ढग है, उस ढग से रहते हैं। भिन्न ढग से रहने के लिए उनसे कहना एक अभिनय होगा, यह सभ्यता नहीं होगी। कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो गवर्नर बनते हैं। उनकी जो तनखाह होती है, उससे ज्यादा पैसा, जब वे अपना धन्धा करते थे, तब मिलता था।

व्यक्ति के झुकाव पर विविधताएँ सहन की जायें

जमनालालजी बताते थे कि बहुत से लोग हमारे पास आते और कहते हैं कि "हमे सादा सा भोजन चाहिए। एक दर्जन सतरा चाहिए और थोडा सा दूध।" अब वह मौसम सतरे का नहीं था। छह रुपये दर्जन के भाव से सतरा खरीदना पडता है। अब उतने सतरे का मुश्किल से डेढ पौण्ड रस बनता होगा। उसमें से सवा पौण्ड पानी होगा। बाकी का जो रस-तत्त्व है, वह दस तोले से ज्यादा नहीं होगा। तो फिर मै उन लोगों को कहता था "सिर्फ फलाहार करते हो, इतना त्याग करते हो, तो उसके बजाय रोटी तरकारी क्यो नहीं खाते हो?" वे लोग कहते 'कौन इतना झझट करे?' वे खुद सादगी से रहते थे। एक दफा उनके पॉव में कुछ रोग हुआ, तो उनकी आस्ट्रेलिया जाने की चर्चा चली। वहाँ जाने पर रोग ठीक हो सकता है, ऐसा बताया गया। उन्होंने कहा "जो रोग हिन्दुस्तान मे हुआ, वह अगर हिन्दुस्तान में ही रहकर दुरुस्त नहीं होता, तो मैं बाहर नहीं जाऊँगा।" यह बात भी ठीक है। लेकिन हमारे कई नेता रोग दुरुस्ती के लिए विदेश जायेंगे, तो मैं कुछ गलत नहीं मानूँगा। हम तो 'जय जगत्' कहते ही हैं। कुल दुनिया हमारी है।

एक दफा मैं बीमार हुआ। बापू के पास शिकायत गयी। उन्होंने

मुझे बुलाया और कहा : "तुम मेरे पास आ जाओ, तो अच्छा हो।" मैंने कहा : "आपके वैद्यक-शास्त्र पर मेरा विश्वास नहीं। आपके पास तो पचास काम रहते हैं। उनमें रोगियों का भी काम रहता है और रोगी भी पचासों होते हैं। तो आपके ध्यान का ५०वाँ हिस्सा मुझको मिलेगा, इसलिए मे वहाँ आना नहीं चाहूँगा।" तब उन्होंने कहा : "किसी डॉक्टर को दिखाओ।" मेंने कहा : "डॉक्टर के हाथ में अपने शरीर को देना आत्म समर्पण करना है। आत्म समर्पण डॉक्टरों को करना चाहिए या भगवान् को?" वे हँसने लगे और कहने लगे कि "तो फिर हवा बदलने के लिए जाओ।" उन्होंने हिमालय के स्थान सुझाये। ७-८ मिनट तक यह चर्चा चली। उन्होंने कहा : "मैं व्यवस्था किये देता हूँ।" लेकिन मैंने पुन: कहा : "नालवाडी से चार मील दूर पर पवनार गाँव है। वहाँ मैं हवा बदलने के लिए जाऊँगा।" वे बोले : "हाँ, ठीक है। गरीबों को हवाफेर के लिए सुविधाएँ कहाँ मिलती हैं?" मैं कहना यह चाहता हूँ कि ४ मील पर हवा बदलने के लिए मैं गया। मेरे लिए यह शोभा देता है और जमनालालजी ने परदेश जाने से इनकार किया, यह बात भी शोभा देती है। सार यह है कि देखना यह चाहिए कि उस व्यक्ति का झुकाव किधर है। बाकी सारी जो विविधताएँ हैं, उन्हें सहन करना चाहिए।

आचरण से भी उच्च आचरण करनेवाला हो। मेरे आचरण की ही मर्यादा में दुनिया का सुधार होगा, ऐसा सोचना गलत है। विचार हमारा शुद्ध हो। उस पर अमल करने की चेष्टा हम करते रहें। देखें कि उस ओर हमारा प्रयत्न है या नहीं? भक्ति-मार्ग में हमेशा भगवान् भी साथ देता है।

चंबल घाटी में डाकू मेरी शरण आये। हमारे आचरण का उन पर प्रभाव हुआ, लेकिन जैसे मैंने अभी कहा कि हमसे भी कोई उच्च आचरण करनेवाले हो सकते हैं।

मांसाहार-निषेध और मैं

एक जैन भाई ने हमसे कहा था कि जब तक मांसाहार से मुक्ति नहीं होगी, तब तक लड़ाई खतम नहीं होगी। इसलिए मांसाहार-त्याग का ही प्रचार आपको करना चाहिए। मैंने उनसे कहा कि अन्त में आपकी बात ठीक है। लेकिन वह आज ही, और मुझे ही करनी है, ऐसा मैं नहीं मानता। कल के लिए मैं कुछ काम छोड़ना चाहता हूँ। अगली पीढ़ी के लिए भी कुछ काम रहेगा, अन्यथा आपकी बात सही है। अन्ततोगत्वा मांसाहार त्याग के बिना दिल में करुणा नहीं आयेगी। इसके बारे में प्रयत्न करनेवाले साधु हो गये, लेकिन मैं अभी यह' करनेवाला नहीं हूँ। दस साल पहले सेवाग्राम में शांति परिषद् हुई थी। उसमें मैंने संदेश यही भेजा था कि दुनिया में शांति तब होगी, जब मनुष्य प्राणी को आहार नहीं बनायेगा। वहाँ दुनियाभर के लोग आये थे, इसलिए यह बात मैंने उसमें रखी थी। दूसरी बात, अलीगढ़ के मुसलमानों की सभा में मैंने कहा था कि जैनों से वह बात हमें सीखनी होगी और मांसाहार का त्याग करना सीखना होगा। इस तरह जहाँ-जहाँ जरूरी है, मैं बोलता हूँ और मेरे मन में भी यह बात है कि मांसाहार से मुक्ति मिलेगी, तब शांति होगी; लेकिन मैं वह काम नहीं करनेवाला हूँ।

अन्त में यह कहूँगा कि आचरण के लिए व्यापक विकास का मौका

रखना चाहिए। अपने को कठोर कसौटी पर कसते रहना चाहिए और दूसरों के लिए उदार दृष्टि होनी चाहिए।

कुकरौन —जिला शान्ति-सैनिकों के बीच
२-२-'६१

शांति-सेना के आवश्यक गुण : ४ :

आप जानते हैं कि 'शांति-सेना' शब्द और उसकी कल्पना गांधीजी की है। हिन्दू-मुसलमानों के दंगे वगैरह होते थे और भी दूसरे प्रकार के दंगे होते थे। उस वक्त गांधीजी ने अपील की थी कि 'शान्ति-सेना' बने। यह शब्द भी उन्होंने दिया था। उस वक्त थोड़े लोगों ने नाम दिये थे, लेकिन ज्यादा लोगों ने दिलचस्पी नहीं दिखायी। यों कहिये, उसमें दाखिल होने की हिम्मत नहीं थी या झिझक थी। उस ढंग से अपना जीवन अर्पण करने की हिम्मत जन-मानस में उस जमाने में नहीं थी। उस वक्त खास शांति-सेना का काम हुआ, ऐसा नहीं दीखता। कुछ कारणवश शांति-सेना नहीं बन सकी, ऐसा कह सकते हैं या उसके लिए सुव्यवस्थित कोशिश नहीं हुई, ऐसा भी कह सकते हैं।

शान्ति-सेना : बापू की साकार कल्पना

आज बापू होते, तो यह जमात देख बहुत खुश होते। मुमकिन है कि यह संख्या दुगुनी भी हो जाती। भूदान में लोग जमीन दान देने लगे, उसमें भी हमने बापू की कल्पना पर अमल किया है।

शांति-सेना को सबका आशीर्वाद

हमारे दूसरे विचार के विरोध में हैं, उनका भी आशीर्वाद और सहानुभूति शांति सेना के काम के लिए है।

आशा और अपेक्षा की ही थी कि शांति-सेना का काम बिहार में ज्यादा होगा। एक शक्ति यहाँ, इस भूमि में है। वह हमने पैदा नहीं की है, पहले से यहाँ थी। उसके लिए मेरे मन में विश्वास और श्रद्धा भी है। इस डेढ़ महीने में ढाई सौ से अधिक संख्या बनी है, यह छोटी घटना नहीं। यह संख्या पर्याप्त नहीं है। साढ़े चार हजार की माँग पूरी होगी, ऐसी मेरी आशा है। इसके लिए समय लगेगा, लेकिन इतनी छोटी-सी मुद्दत में भी इतनी संख्या बढ़ी है, यह बहुत ही अच्छा शुभ दर्शन है।

अद्यतन ज्ञान आवश्यक

इनके लिए हमें क्या करना होगा? पहली बात तो यह है कि हमेशा उनको आध्यात्मिक साहित्य देना होगा। फिर बीच-बीच में शिविर लेने होंगे, सर्वोदय विचार का भी साहित्य देना होगा। फिर हममें से कोई एक बार-बार उनके पास जाकर व्याख्यान दे, विचार समझाये, तो दृष्टि आयेगी। ऐसी किताबें इनके पास होनी चाहिए, जिससे आन्दोलन और क्रान्ति की दृष्टि आये और इनका जो ज्ञान हो, वह अद्यतन हो।

बीघा-कट्ठा और शांति-पात्र—दो काम

इनको आप तनख्वाह तो नहीं देंगे, फिर भी इनके योग-क्षेम का इंतजाम करना होगा। भगवान् भक्तों को हमेशा ज्यादा नहीं देता, तंग हालत में रखता है। पेटीभर नहीं देता। उड़िया भाषा में कहावत है: 'पेट पुरीब तीनी कोण' याने तीन-चौथाई पेट भरना चाहिए। कम-से-कम उतनी व्यवस्था करनी चाहिए। इतना इंतजाम हर हालत में जरूर हो। यह सब मिलकर करें। हाँ, तो इनके लिए योग क्षेम, तालीम, ये दो चीजें करनी होंगी। तीसरी चीज, यह सेना कौन सा काम करे, इसके बारे में इसे हमेशा स्पष्ट और साफ हिदायत होनी चाहिए। नहीं

तो काम नहीं होता। हम जम्मू कश्मीर में थे। साठ-सत्तर साल में कभी जितनी बाढ़ नहीं आयी, उतनी बाढ़ उस वक्त आयी। देखा, रास्ते वगैरह बनाने का काम भी सेना को दिया गया है। वैसे अभी तो इनको दो निश्चित काम मिल गये हैं—बीघे में कट्ठा और शांति-पात्र स्थापना का। इसके अलावा कहीं गाँव में आग लगे या कहीं झगड़े हो, तो वैसे मौके पर भी सेवा के लिए उन्हें जरूर जाना चाहिए। इस प्रकार एक के बाद एक निर्देश मिलते रहें।

पूर्ण अनुशासन

एक बात और मेरे मन में आती है कि इन सैनिकों की परीक्षा लेनी चाहिए। इनके पास कोई किताब दें और फिर उसका अध्ययन इन्होंने किया है या नहीं, इसके लिए परीक्षा लें। कुछ तो कसौटी होगी। कसौटी के लिए कोई योजना आप तय करें। यह नहीं कि जो फेल होगा, उसे शांति सेना में नहीं लेंगे। कहीं आश्रम में भी आप उसे रख सकते हैं। वहाँ बराबर चौबीस घंटे कसकर काम लें। अनुशासन सिखायें। इस तरह अपने को जब्त में रखना सिखायें। इस तरह की परीक्षा आप रानीपतरा या सोखोदेवरा या और किसी आश्रम में ले सकते हैं। जो इसमें खरे न उतरेंगे, उन्हें हम हटायेंगे नहीं, दुबारा ट्रायल देंगे। जो उसमें भी नहीं उतरेगा, उसे नम्रता के साथ कहना चाहेंगे कि तुमने नाम तो दे दिया, लेकिन अब तुम दूसरा काम करो। इसका ध्यान रखना होगा कि सेना में जो अनुशासन होता है, उससे कम अनुशासन इसमें न हो। ऐसा न हो कि हमने शांति सैनिक पाले नहीं हैं।

होना चाहिए और उसकी पूर्ण निष्ठा होनी चाहिए। गाँव गाँव के जो भोले लोग मिलते हैं, वे प्राण-त्याग करते हैं। उनमें यह हिम्मत है। समझना चाहिए कि दुनिया में जो बड़े-बड़े प्रयत्न हुए, वे आत्म-शक्ति से हुए हैं, विद्वत् शक्ति से नहीं। होना यह चाहिए कि इन सैनिकों का अपने पर जब्त हो, इन्द्रियों पर काबू हो और खतरे में जान डाल सकें। कोई भी काम वेग से करने में अहिंसा और सत्य को न छोड़ें। उनमें पूर्ण निष्ठा रहे।

ईसामसीह के शिष्य विद्वान् नहीं थे। उनके जाने के बाद उनके १२ शिष्य थे। उनमें से कोई फाँसी पर नहीं गया। लेकिन जो थे, उनमें कोई बुनकर, तो कोई जुलाहे थे। चालीस-पचास साल बाद एक विद्वान् आया। पहले तो वह इनके खिलाफ था और इनको उसने काफी तकलीफ दी। एक दिन उसके सपने में भगवान् आये और उन्होंने कहा कि "सॉल सॉल, तू मुझे क्यों सताता है?" उसने कहा : "भगवन्! मैं आपको कहाँ सता रहा हूँ!" भगवान् ने जवाब दिया : "तू मेरे मासूम बच्चों को तकलीफ देता है, तो वह मुझे ही तकलीफ देने जैसा है। मुझे ही तकलीफ होती है।" तब सॉल समझ गया और उसमें परिवर्तन हुआ और वह सॉल से 'पाल' बना। उसी सेण्ट पाल ने यूरोप में ईसा के धर्म का बहुत प्रचार किया। यूरोप में सेण्ट पाल से ही ज्यादा प्रचार हुआ है। इसलिए मुमकिन है कि शांति-सेना में विद्वान् ज्यादा न आयेंगे, लेकिन उससे काम रुकनेवाला नहीं है। इसलिए विद्वानों की बात करना बेकार है। समाज में जाना है, लोगों के पास बीघे में कट्ठा दान माँगना है, तो ऐसी बात समझाने के लिए लोगों की भाषा समझनी चाहिए। उनको समझाने का तरीका मालूम होना चाहिए। इसलिए 'खग जाने खग की ही भाषा' यह हम कहते हैं।

मतलब, देहातियों को वे ही समझायेंगे, जो उनमें से एक हैं। मेरी बात तो ग्रामीण लोग नहीं समझ सकते, मेरा भाव समझते हैं। मेरा ज्यादातर उपयोग कार्यकर्ताओं में होता है। यह 'बात अलग' है

कार्यकर्ताओं को याने शान्ति-सैनिकों को जो ज्ञान नहीं है, वह जल्दी ज्ञान देना चाहिए। इसलिए मुझे लगता है कि मेरे पास विद्वानों को समझाने का तरीका है। कहीं गाँव के लोगों के सामने भजन वगैरह गाता हूँ। ऐसी भाषा वे समझेंगे। लेकिन समझना चाहिए कि उनको समझाने में हमारी ही परीक्षा होगी। जिनको खाना नहीं मिलता, जो बेकार हैं, ऐसे लोगों को हम जमीन देते हैं, धंधा देते हैं, तो हम देश को बचाने का काम करते हैं। क्योंकि जो असंतुष्ट हैं, वे मारपीट कर सकते हैं और आग लगानेवाले लोग ऐसी स्थिति का लाभ उठा सकते हैं। इसमें जो आये हैं, वे त्याग बुद्धि से ही आये हैं। तुलसीदासजी ने लिखा है कि 'प्रभु तरु तर कपि डार पर'—बंदर ऊपर पेड पर बैठते थे और प्रभु पेड़ के नीचे लेकिन ऐसे गँवारों से भी रामचन्द्रजी ने काम लिया—यह हमें ध्यान में रखना चहिए।

हमारी स्वतंत्र डाक हो

एक बात मेरे मन में आती है कि हमें हमारी स्वतन्त्र पोस्ट (डाक) चलानी चाहिए। मान लीजिये, बिहार में ७५ हजार गाँव हैं और पाँच हजार की सेना है, तो एक एक के लिए पन्द्रह गाँव आयेंगे। पन्द्रह दिन में वह एक एक गाँव में जायगा और बिना भूले जायगा। ये पाँच हजार लोग हमारे ही हैं। वे हमारा अखबार पहुँचायें, वहाँ के लोगों की मुसीबतें सुनें, लिख लें और संदेश वहाँ पहुँचायें। ऐसी स्वतन्त्र-योजना हो, तो ज्ञान का दारिद्रय नहीं होगा। यहाँ तक होता है कि अखबारों में छह छह महीने से किसी बात की चर्चा चलती है, पर उसकी जानकारी भी गाँववालों को नहीं रहती। मैंने देखा, इन्दौर के नजदीक देहातों में लोगों को चीन ही नहीं मालूम था, तो सीमा का सवाल कैसे मालूम होगा? फिर भी ऐसे गाँववालों का जीवन चल ही रहा है। इसलिए हम अपना अखबार गाँव गाँव पहुँचायें, वहाँ पढ़ने का इन्तजाम करें, तो उन गाँव-वालों को ज्ञान मिलेगा। इस तरह की योजना आप करेंगे, तो सरकार पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं होगी।

तेनाली में सर्वोदय-पात्र का काम चल रहा है। तीस हजार सर्वोदय-पात्र वहाँ चल रहे हैं और उन्होंने उसके लिए सत्तर-अस्सी सेवक रखे हैं। उनको तनख्वाह भी देते हैं। उसमें से उन्होंने अखबार भी चलाया है। जिन्होंने पात्र रखे हैं, उनके लिए सवा रुपया चन्दा है और दूसरों के लिए तीन रुपये। पात्र का अनाज प्राप्त करने का काम भी वे लोग करते हैं। इस तरह पचहत्तर हजार गाँवों में पोस्ट की योजना भी हो सकती है। इस तरह हमारा एक जाब्ता रहेगा, फिर क्या मजाल कि कोई दान दे और मुकर जाय। आज जाब्ता नहीं है, इसलिए कुछ लोग समझते हैं कि आन्दोलन खतम हुआ। नैतिक हवा के झोंके में कुछ लोगों ने दान दे दिया। अब वे समझते हैं कि ये सर्वोदयवाले हमारे पास नहीं पहुँचते, तो शायद भूदान का काम खतम हुआ होगा। यह इसीलिए होता है कि आज हमारा जाब्ता नहीं है। अगर हमारी रेगुलर डाक चलती हो, तो बराबर खबरें उनको मिलती रहेंगी और ज्ञान भी मिलेगा। फिर हमारे बड़े-बड़े नेता क्या कहते हैं, वह बात भी वे समझेंगे। हमारा अखबार जितना खपता है, उतना कोई दूसरा अखबार नहीं खपता, ऐसा होना चाहिए। यह खास काम शान्ति-सैनिकों का होगा। जैसी जैसी बातें सूझेंगी, मैं बताऊँगा; लेकिन यह बात सोचने की है।

सारे बिहार में साढ़े चार हजार शांति-सैनिक हों और तब हम काम शुरू करें, ऐसा मैं नहीं कहूँगा। कम से-कम एक जिले में आप काम शुरू करें। हमारी रिपोर्ट आज अखबार में आती है या नहीं, यह उनकी मर्जी का सवाल है। लेकिन हमारा ही अखबार ऐसा हो, जिसमें आन्दोलन की पूरी खबर हो। कहाँ क्या काम चल रहा है, कौन कहाँ है, यह सब जानकारी हो। एक जिले में आप पूरी योजना कर सकते हैं और अपनी पोस्ट (डाक) शुरू कर सकते हैं।

श्रद्धा, भक्ति, त्याग और शराबबन्दी जरूरी

शांति-सेना में गुणों का ताल्लुक ज्यादा है। श्रद्धा, भक्ति, त्याग और सच्चारित्र्य उनमें आवश्यक है। अक्सर सिपाहियों के बारे में खयाल

होता है कि वे हमेशा बुरे काम करते हैं। हैदराबाद में पुलिस-कारवाई हुई तो काम तो बना, लेकिन पुलिस प्रिय नहीं हुई; क्योंकि उन्होंने वहाँ स्त्रियों पर अत्याचार भी किये। बम्बई-राज्य में शराबबंदी है, लेकिन सैनिकों को शराब मिल सकती है, याने क्या? सैनिक का नैतिक स्तर नीचे गिरा है, लेकिन आप तो रामजी के राज्य की बात करते हैं। क्या हनुमान् की सेना में शराब चलती थी? सारा हिन्दुस्तान चाहे शराब पीये, लेकिन हमारे सिपाहियों को शराब नहीं पीनी चाहिए। सैनिक का चरित्र अत्यन्त स्वच्छ, शुद्ध और निर्मल होगा, तभी हिन्दुस्तान की रक्षा होगी।

कांजिया —प्रान्तीय शांति-सैनिकों के बीच
८-२-'६१

विश्व-शांति-सेना की आवश्यकता : ५ :

अभी दक्षिण भारत-मदुराई में युद्ध-विरोधी शांतिवादियों की परिषद् हुई थी। उसमें दुनियाभर के १५-२० देशों के लोग आये थे और उन्होंने अनेक विषयों पर चर्चाएँ कीं। कुछ प्रस्ताव भी पास किये। उनमें से एक प्रस्ताव यह भी था कि विश्व-शांति-सेना की स्थापना हो। उस प्रस्ताव में कहा गया था कि यह परिषद् विश्व-शांति सेना की आवश्यकता महसूस करती है। चंद दिनों से एक अमेरिकन भाई मेरे पास हैं। उन्होंने मुझसे पूछा कि विश्व-शांति-सेना किस प्रकार बनेगी? उसकी प्रक्रिया क्या होगी? कौन यह सेना बनायेगा?

आप जानते हैं कि आज दुनिया में एक संस्था है, जिसे 'यूनाइटेड नेशन्स' सब राष्ट्रों का सम्मिलित समूह (संयुक्त राष्ट्रसंघ) कहते हैं। दुनिया के देशों के झगड़े और सवाल उसके सामने रखे जाते हैं। कुछ फैसले उसमें होते हैं और कुछ को मदद दी जाती है। वैसे तो सेना की भी मदद दी जाती है। जिन राष्ट्रों का यह समूह है, उनमें कई राष्ट्रों के पास बहुत ही ज्यादा लड़ाई का सामान है। मसलन रूस, अमेरिका,

इंग्लैण्ड, फ्रान्स के पास सेना और सामग्री बहुत है। जिसे 'राष्ट्र-पंच' कह सकते हैं, ऐसी यह संस्था है। सब राष्ट्रों के बीच झगडों का सवाल हल करने के लिए और सब राष्ट्रों में शाति की स्थापना करने के लिए यह संस्था भी अपनी एक छोटी-सी सेना रखती है। वह छोटी-सी होने के कारण कोई खास मुकाबला नहीं कर सकती। जहाँ जरूरत है, वहाँ वह जाती है।

राष्ट्रसंघ की परिहासात्मक स्थिति

सहज ही यह सूझेगा कि जिन देशो के पास कहीं ज्यादा सामर्थ्य है, उनमें स्नेह और शाति की स्थापना के लिए जो प्रतिनिधि उस संस्था में आये हैं, वे सेना क्यो रखें? उससे क्या मतलब निकलेगा? अनेक राष्ट्रों की सेना और बीच में यू० नो० की भी सेना—इसके कोई खास माने नहीं निकलते। इसमें कोई शक नहीं कि वह राष्ट्र समूह शान्ति की इच्छा से ही स्थापित हुआ है और वहाँ जो मसलों की चर्चा हुआ करती है, उसका उद्देश्य शाति स्थापना का होता है। यद्यपि वह बहुत कुछ नहीं कर सका, तो भी थोडा कर सकता है। फिर भी उसका इरादा सच्चा है और उसका आज की दुनिया की हालत में कुछ उपयोग भी है। सचाई के साथ शाति का उद्देश्य रखते हुए और जानते हुए भी कि वे राष्ट्र बहुत ज्यादा शस्त्रों से लैस हैं, बीच में उसको भी अपनी सेना रखने की जो सूझी, इसका मतलब यही है कि अक्ल काम नहीं कर रही है। दिल चाहता है कि शाति की स्थापना हो, लेकिन अक्ल तो पुरानी ही काम कर रही है। आज भी बडे-बडे राष्ट्र बडी बडी सेना रखें और राष्ट्र-समूह भी छोटी-सी सेना रखे, यह बहुत बडा परिहास मालूम होता है।

आपको जो उपहासात्मक मालूम होता है, वह उनके ध्यान में नहीं आता है, ऐसी बात नहीं। फिर भी ऐसा क्यों होता है, इस बारे में मैंने बार बार कहा है कि राष्ट्रों के कर्णधारों की ऐसी हालत हो गयी है कि *आज उनका हिंसा से विश्वास उठा है और अहिंसा पर विश्वास नहीं बैठा है।* मानना होगा कि उनके पीछे लोकमत भी काफी है, क्योंकि वे राष्ट्रों के

कर्णधार हैं। मैं जानता हूँ कि भले ही राज्य लोकतान्त्रिक कहा जाय, पर उसमें आम जनता का मत प्रकट होता ही है, ऐसा नहीं। उसमें मध्यवर्ग और उच्चवर्ग के ही मत प्रकट होते हैं, बाकी लोग मत देते ही नहीं। सर्वसाधारण जनता ऐसी ही रह जाती है। लेकिन जिनके मत हैं, उनमें से काफी लोगों के मत इन कर्णधारों के साथ हैं। कितना अच्छा होता, अगर यू० नो० नैतिक सलाह देनेवाली संस्था होती और उसके द्वारा विश्व शांति का आयोजन होता। पर यह इसलिए नहीं हुआ कि जिनके हाथों यह होना था, उनके हाथ रँगे हुए हैं। वे तरह तरह के अन्याय कर रहे हैं।

खतरा अणु अस्त्र से नहीं, रूढ़ छोटे अस्त्रों से

कुछ राष्ट्र के कर्णधार, यानी कुछ राष्ट्र ही शांति इसलिए चाहते हैं कि वे मानते हैं कि शांति के बिना विकास होनेवाला नहीं है। विकास के लिए शांति जरूरी है, इसलिए वे शांति चाहते हैं। कुछ इसलिए शांति चाहते हैं कि उनके पास ये भयानक शस्त्र नहीं हैं, जो कुछ राष्ट्रों के पास हैं। तीसरे ऐसे हैं, जो शांति इसलिए चाहते हैं कि वे यह डर देखते हैं कि अगर इनका उपयोग कहा हुआ, तो दुनिया का खात्मा होगा। इन दिनों शांतिवादियों का एक ऐसा पक्ष निकला है, जो चाहता है कि 'न्यू क्लियर वेपन्स' (अणु अस्त्र) का उपयोग न हो—वे न बनाये जायँ और उनका प्रयोग न किया जाय। माना जाता है कि ये लोग शांतिवादी हैं। ये शांतिवादी हैं, लेकिन शांति के बारे में उनका चिंतन गहरा है, ऐसा असर मेरे ऊपर नहीं पड़ा, क्योंकि बहुत से राष्ट्र ऐसी बात इसलिए करते हैं कि आज तक के चालू शस्त्र यानी पारंपरिक शस्त्र वे चाहते हैं। जो शस्त्र आज तक चले आये हैं, वे आगे भी चलें, ऐसा वे चाहते हैं। व डरते हैं कि अगर 'न्यू क्लियर वेपन्स' रहेंगे, तो उनकी कुछ नहीं चलेगी। मैं यह नहीं जानता कि किस तरह मुझे ऐसा प्रतीत हुआ।

दस बारह साल से मैं यह बोल रहा हूँ कि शांति को 'न्यू क्लियर वेपन्स' से खतरा नहीं है, जितना पारंपरिक और रूढ़ शस्त्रों से है। वे

रुद्ध शस्त्र अहिंसा को सामने नहीं आने देंगे। 'न्यू क्लियर वेपन्स' दुनिया के सामने ऐसा प्रश्न खड़ा करते हैं कि या तो दुनिया का खात्मा करो या शांति की स्थापना करो। इसलिए मैं कहता हूँ कि अहिंसा के ज्यादा नजदीक 'न्यू क्लियर वेपन्स' है। मैं इस विचार पर स्थिर रहूँ, इसका मतलब यह नहीं कि 'न्यू क्लियर वेपन्स' के भय को मैं पसन्द करता हूँ। उसके प्रयोग से हवा दूषित होती है। मुझे तो कहना यह है कि हम 'न्यू क्लियर वेपन्स' के खिलाफ नहीं हैं। उस हालत में हम लोगों को सिर्फ इतना ही नहीं कहना चाहिए कि अणु शस्त्र का प्रयोग मत करो, बल्कि यह भी कहना चाहिए कि अपने-अपने स्थान में छोटे-छोटे शस्त्र का भी उपयोग न करो। स्कूल में छड़ी न चले। माता पिता अपने बच्चों को न मारें, न पीटें—यहाँ तक हमारी बुद्धि निःसंशय होनी चाहिए। लेकिन आज वैसा नहीं है। यू० नो० को यानी जिस ढंग से यह बना है, उनके सदस्यों के सामने शांति के मसले शांति से ही हल हों, ऐसी चीज साफ सामने नहीं आ रही है।

विश्व-शांति-सेना की स्थापना हो

सवाल आता है कि जब यू० नो० विश्व शांति-सेना स्थापन करने में स्वरूपतः असमर्थ है, तो उस पर अमल कौन करे? ऐसी कौन-सी एजेन्सी है, जो विश्व शांति सेना बनाये। इसका जवाब कुछ साफ तौर पर हमारे पास है, ऐसा नहीं। यह पहला ही मौका है, जब डब्ल्यू० आर० आई० में ऐसा प्रस्ताव पास होता है। एक वस्तु स्पष्ट है कि जिन देशों की शांति-सेना की इच्छा है, वहाँ शांति सेना होनी ही चाहिए। विश्व-शांति के लिए यह करना होगा कि सब देशों में अपनी-अपनी शांति-सेना बने और राष्ट्रीय तौर पर एक शांति सेना मंडल हर राष्ट्र में हो। उनके प्रतिनिधि मिलकर एक विश्व शांति-मंडल बने। उसे हम 'फौज' नहीं कहेंगे। यह मंडल विश्व शांति-सेना बनाने का अधिकारी माना जायगा।

इस प्रकार का विचार मैं आज प्रकट कर रहा हूँ, लेकिन दूसरे लोग

भी इस पर विचार करेंगे और कुछ बनेगा। सोचते सोचते समय जायगा। लेकिन यह बहुत बडी चीज है। उसी नमूने की शांति-सेना यहाँ भी बने, जिस नमूने की दुनिया में बनेगी, ऐसी अपेक्षा है। भीतरी मसलों पर हम सब सोचें और सलाह दें। जहाँ जहाँ अशांति का मौका आये, वहाँ पहुँचकर काम करें। यह तो मैंने अपने देश के लिए बात की।

गाँव-गाँव में सर्वोदय का सदेश पहुँचे

कल मैंने कहा था कि हमारी डाक होनी चाहिए। मामूली पत्र तो सरकारी पोस्ट से जायँ, लेकिन हमारी एक संस्था हो और एक मण्डल हो। हफ्ते में एक दफा हर गाँव में जायँ, नहीं तो १५ दिन में एक दफा जायँ। कम से कम साल‌भर में बारह दफा एक गाँव में जायँ, तो भी चल सकता है। हर गाँव में हम जायँ और गाँव गाँव मासिक पत्रिका बाटें। एक महीने का जो कार्यक्रम बनायें, उसे उस पत्रिका में छापें।

कल मैंने ७ दिन में एक दफा जाने की बात की थी और आज ही मैं एक महीने की कल्पना पर आ गया। केवल कल्पना से तो नहीं बनता। अमली तब बनता है, जब परिस्थिति सामने रखकर सोचा जाता है। सर्वोदय का सदेश और दुनिया की कुल खबरें इकट्ठा कर दोनों चीजें एक मासिक या साप्ताहिक में छापें और वह लेकर हमारे शांति-सैनिक गाँव-गाँव जायँ। उसे पढकर लोगों को समझायें और उन लोगों की क्या क्या मुसीबतें हैं, उनकी क्या हालत है, इसकी रिपोर्ट लें। देश में ५ लाख देहात हैं। एक आदमी २५ गाँव में जायगा, तो ५ लाख गाँव में पहुँचने के लिए २० हजार शांति सैनिक लगेंगे। ये २० हजार शांति सैनिक इधर से उधर और उधर से इधर घूमते रहें और रचनात्मक कार्य करते रहें, तो समाज का नक्शा ही बदल जायगा। अगर १२ महीने में १२ दफा हर गाँव में हमारा मनुष्य जाता और सेवा करता है, तो मैं कहना चाहता हूँ कि शांति के लिए यह बहुत ही सस्ता सौदा होगा। शांति के काम में इसका उपयोग होगा।

इसका यह मतलब नहीं कि हम सरकारी पोस्ट का बहिष्कार करेंगे

चाहते हैं। हम सरकार से अ-सहकार नहीं करना चाहते। लेकिन हमारे शांति सैनिक इस तरह घूमते रहेंगे और गाँव की सेवा करते रहेंगे, तो अशांति का कारण नहीं रहेगा। आज जो सर्वत्र अज्ञान का साम्राज्य है, वह मिट जायगा। यह चीज हिन्दुस्तान में, कम से-कम बिहार में या बिहार के एक जिले में अमल में लाते हैं—हर गाँव में हमारी डाक जाती है, शांति सैनिक पत्रिका लेकर जाता है—तो आपने बहुत बड़ा काम किया, ऐसा मैं मानूँगा।

यदि समग्र विश्व में इस प्रकार से योजना हो जाय, तो वह स्वागतार्ह होगी। सब उसे पसंद करेंगे। अगर मैं इन घूमनेवाले लोगों को परिव्राजक कहूँ, तो यह बहुत बड़ी बात नहीं मानी जायगी। इस नाम से घबड़ाने की जरूरत नहीं। संयमी गृहस्थों की भी सेना बन सकती है। ऐसा काम किसी एक जिले में करके बताइये, फिर सब काम आगे बढ़ेगा। 'सारे प्रान्त में कर दो' ऐसा कहने से काम नहीं होगा। एक जिले में करके दिखाइये, तो अंदाजा लगेगा। किसी भी विचार की केवल कल्पना मात्र से काम नहीं होता। पूर्णियाँ जिले के एक गाँव में धीरेन्द्रभाई बैठे हैं। वे कौन सा व्रत लेकर बैठे हैं, क्या यह हिन्दुस्तान के पाँच लाख देहातों को मालूम हो गया है? कम-से-कम क्या आपके इस जिले के हर गाँव को मालूम हो गया है? आपके सर्वोत्तम सेवक जो प्रयोग कर रहे हैं, वह लोगों को मालूम भी नहीं। इसलिए इस पर आप सोचिये। इसलिए मैं कहता हूँ कि कम-से-कम पूर्णियाँ जिले में यह काम पूर्ण कीजिये।

किसनगंज —प्रान्तीय शान्ति-सैनिकों के बीच
९-९-'६१

३

ग्राम-स्वराज्य सघन क्षेत्र के कार्यकर्ताओं से

आपके ये जो कार्यक्रम दिग्दर्शित किये गये हैं, वे सुझाव हैं और सुझाव के रूप में अच्छे हैं। हिन्दुस्तान में काम तो तरह-तरह के पड़े हैं।

मल-मूत्र का उपयोग हो

हर काम अपनी-अपनी दृष्टि से बहुत महत्त्व का होता है। जैसे माना गया है कि मनुष्य के मल-मूत्र का बराबर उपयोग हो, तो सालाना १५ रुपये की खाद मिल सकती है। हर मनुष्य १०) रु० की भी आमदनी हो, तो ४० करोड के लिए ४०० करोड की आमदनी होगी। लेकिन हिन्दुस्तान में आज उसका बिलकुल ही उपयोग होता नहीं दीखता। नहीं तो यह बहुत बड़ा कार्यक्रम है। इसमें मैले को ठीक से इस्तेमाल करने के लिए लोग तैयार हो जायँगे, तो अच्छी खाद बनेगी। लेकिन कइयों को इस काम से नफ़रत होती है।

हमने यही काम बापू के निर्वाण के पहले किया है। रोज पवनार गाँव में जाते थे। पौने तीन साल लगातार एक ही काम किया। यह भी भारतव्यापी काम होगा। भारत-सेवक-समाज के प्रमुख लोग मेरे पास आये थे। उन्होंने हमसे पूछा कि समाज के लिए क्या कार्य सुझाते हैं? मैंने कहा : " 'स्वच्छ भारत' यही आपके लिए सर्वोत्तम कार्यक्रम हो सकता है। कम-से-कम तीर्थक्षेत्र तो आपको लेने ही चाहिए।" गया में एक सप्ताह तक कुछ कार्यक्रम चला, लेकिन उतने से मैं संतुष्ट नहीं। कुल भारत को स्वच्छ बनाना चाहिए। मैं जानता हूँ कि यह बहुत बड़ा कार्यक्रम होगा। गाँव-गाँव में हम लोगों को यह स्वच्छता सिखायें। मैले की खाद बन सकती है, यह सिखायें। गोबर का उपयोग कंडा बनाकर जलाते हैं, तो उसे खोते ही हैं; क्योंकि उसकी भी खाद

बन सकती है। इस तरह ऑरगेनिक मैन्योर (प्राणिज खाद) हम खोते हैं।

शराबबंदी का प्रश्न

फिर शराबबंदी की ही बात लीजिये। बापू ने इसके लिए आन्दोलन किया था। लार्ड इरविन के साथ बात हुई, तो उसमें भी हम शराबबंदी का काम नहीं छोड़ेंगे, यह उन्होंने कहा था। उन्होंने माना था कि यह काम हम सब उठा लेंगे। लेकिन आज शराबबंदी का काम कहाँ हो रहा है? कहा जाता है कि उससे राजस्व घटता है। ऐसे अनेक कार्यक्रम सूझ सकते हैं, लेकिन सवाल यह है कि हम लोगों का ध्यान कौन खींचता है?

मालकोवा ने एक किताब लिखी है, जिसका नाम है 'ग्राम-योजना'। इसमें गाँव में क्या-क्या काम हो सकता है, इसकी योजना है। जैसे आज के राजनैतिक दल उधम मचाते और लोगों का ध्यान खींचते हैं, वैसे ही हमारे काम का भी हाल है। भूदान का काम चला, तो लोगों का ध्यान इसकी ओर गया। यहाँ तक हुआ था कि बिहार में जमीन की कीमत घट गयी। चार हजार ग्रामदान हुए, तब येलवाल की प्रसिद्ध परिषद् हुई थी, इसके पहले ऐसी परिषद् नहीं हुई थी। उस परिषद् का एक परिणाम हुआ। उसके बाद पं० नेहरू जापान गये, तो उनसे पूछा गया कि "आपके देश में कम्युनिज्म का क्या स्थान है?" तो उन्होंने जवाब में बताया कि "मैं अभी-अभी एक 'क्यूरियस कॉनफ्रेन्स' (अनोखी बैठक) से आ रहा हूँ। हम सब पक्ष के लोग वहाँ इकट्ठा हुए थे।" यों कहकर उन्होंने अपने देश की इज्जत बढ़ायी। मैं कह रहा था कि यह एक ऐसा अवसर था, जो सारे देश का ध्यान खींच सका।

कार्यक्रम जन-समाज के लिए प्रभावशाली हो

आप विकेन्द्रीकरण की बात करते आये हैं, तो सरकार ने विकेन्द्रीकरण का काम शुरू कर दिया। उसमें आपका भी प्रभाव है। आठ नौ साल आपका जोर चला। वैसे यह उनके विचाराधीन था, यह नहीं कि यह आपका ही प्रभाव है। वैसे ही अंबर चरखे का हुआ। सरकार ने उसे

कबूल किया। इस तरह जन-समाज पर प्रभाव डालने का काम करेंगे, तो उन कामों का हमें आकर्षण है। पोस्टर-आन्दोलन की बात हमने की। उससे कुल भारत के शहरों का ध्यान हमने खींचा। इन्दौर आगरा में थोड़ा प्रदर्शन हुआ। बाकी शहरों मे जुलूस, सभा, चर्चा, विरोध आदि काम चल रहा है। सारे भारत के शहरो में इसकी चर्चा है। ऐसे चंबल घाटी के काम का असर सारे भारत पर हुआ और भारत के बाहर भी हुआ। आम समाज पर प्रभाव डालनेवाले इस तरह के कार्यक्रम आप लोग करें।

बीघे में कट्ठा रामबाण

'बीघे में कट्ठा' के मंत्र के मुताबिक अगर काम होगा, तो वह रामबाण साबित होगा। अगर नहीं हुआ, तो वह बाण बेकार जायगा। मुझसे किसीने कहा : "शराबबंदी का काम लीजिये।" तो मैंने कहा : "काशी में कुछ काम हो रहा है। लेकिन अभी तो वहाँ के लोग शराब पी रहे हैं। शराबबंदी के लिए हमने काशी का क्षेत्र ढूँढा। कम-से-कम काशी में तो शराबबंदी होनी ही चाहिए। उसके लिए कोई 'ना' नहीं कहेगा। वह धर्म क्षेत्र है और उस क्षेत्र के लिए सारे भारत में एक पवित्र भावना है। इसलिए अगर उतना काम वहाँ होता है, तो सारे भारत पर उसका असर होगा।"

शान्ति-सेना—आपकी रामायण का हनुमान्

ऐसे कुछ कुछ काम आप ढूँढिये। इस तरह के हमारे विचारों में शान्ति-सेना का एक विचार है। आप शान्ति सेना बनाते हैं, तो माना जायगा कि आपने अपनी रामायण में हनुमान् की मदद हासिल की। हनुमान् न हो, तो रामायण में राम का चरित्र फीका होगा। वैसे ही शाति-सेना नहीं बनती, तो आपका आन्दोलन हलका बनेगा। पूर्णियाँ जिले में २५० शाति-सैनिक बनाये हैं। उनके 'योगक्षेम' की जिम्मेवारी लोगों ने उठायी, इस काम में हम सफल हुए, तो वह चमत्कार होगा। इस प्रकार की शाति-सेना भारत में खड़ी होगी, तो भारत का प्रभाव बाहर पड़ेगा।

अभी मदुरा में गाधीग्राम में डब्ल्यू० आर० आई० कान्फ्रेन्स हुई। उसमें भूदान के काम की प्रशसा तो हुई, लेकिन शान्ति सेना का जो थोडा सा काम हुआ है, उसकी चर्चा हुई। सीतामढी, दक्षिण में रामनाथ-पुरम्, गुजरात मे अहमदाबाद, बडौदा, यू० पी० में इलाहाबाद—इन स्थानों में थोडा थोडा काम हुआ है। उसकी रिपोर्ट एक जगह पेश नहीं की गयी है। अगर वैसी किताब प्रकाशित होती, तो सारे भारत में वह चीज हम पहुँचा सकते। लेकिन हम इस ढग से सोचकर काम नहा करते। यह काम बहुत जरूरी है। म चाहता हूँ कि शान्ति सेना के अनुभव की किताब प्रकाशित हो।

पजाब में प० नेहरू हमसे मिले थे। उनके साथ काफी चर्चा हुई। उनका और हमारा जैसा नाता है, उस नाते से जो कुछ बातें हुईं, उनमें उन्होंने खास सवाल यह पूछा कि शाति-सेना का क्या हुआ? उसी वक्त इलाहाबाद में जो काम हुआ, उसकी उनको जानकारी थी। उस वक्त उनको अगर मैं यह कह सकता कि इतने हजार आदमी शाति-सैनिक हैं, तो उसीमें हमारी शान थी। लेकिन हमने कह दिया कि शाति सेना का थोडा थोडा काम हो रहा है।

सार यह है कि आपने ऐसे कामों को कोई नहीं पूछेगा। खेती-सुधार वगैरह काम करनेवाले कई लोग हैं। आपसे तो शाति सेना जैसे काम की अपेक्षा की जाती है। यह काम आप ही कर सकते हैं। दूसरा कोई राजनैतिक पार्टियाँ यह काम नहीं कर सकतीं। जैसे गरुड़ विष्णु का ही वाहन है, वह और किसीको हासिल नहीं होता, वैसे ही शाति सेना का काम आपका ही है। आप ही इसे कर सकते हैं, ऐसा हम मानते हैं। बाकी घूसखोरी, भ्रष्टाचार का मसला आदि पेचीदे सवाल हैं। लेकिन भूदान का कोई ऐसा सवाल नहीं, जिसकी तुलना इस मसले के साथ होगी।

अशोभनीय पोस्टरों का विरोध हो

भूमि का मसला सबसे महत्त्व का है। वैसे ही शाति सेना का काम,

अशोभनीय पोस्टर हटाने का काम भी है। इन कामों का परिणाम जन-मानस पर बहुत होता है। हमारे बच्चे बुरे चित्रों से और गंदे गानों से बचें, यह सब चाहते हैं। यह कलियुग है, इसमें ऐसी बात चलेगी ही—यों कहकर हम इसकी ओर ध्यान न दें, तो ये सारी बुरी चीजें पनपेंगी और हमारी गल्ती होगी। कुछ लोगों का कहना है कि पोस्टर हटाने से सिनेमा को नव जीवन मिला है, क्योंकि जो पोस्टर आप हटाते हैं, वह सिनेमा देखने के लिए ज्यादा लोग जाते हैं। मैंने कहा : जाने दो। शुरू में ऐसा ही होगा, हम जानते हैं। लेकिन यों सोचकर हम छोड़ेंगे, तो बहुत बड़ी गल्ती होगी।

क्रान्तिकारिता ही कार्यक्रम की कसौटी

हम कौन-सा कार्यक्रम लेते हैं, यह कुशलता का लक्षण होगा। किसीने कहा : "हम गाय का दूध बढ़ाने का काम कर रहे हैं।" मैंने कहा : 'अच्छा है। मैं तो उसी पर रहता हूँ, लेकिन यह काम सरकार क्यों नहीं करेगी ?" ऐसे कुछ कार्यक्रम हैं, जो दूसरे लोग भी कर सकते हैं। हर रचनात्मक काम हम ही नहीं कर सकते। ऐसे दूसरे भी कार्य हैं—जैसे खादी का उत्पादन बढ़ाना। यह काम सरकार कर सकती है। लेकिन ग्राम संकल्प का काम आप ही कर सकते हैं। जहाँ लोक भावना निर्माण करने का काम है, वहाँ आप ही काम कर सकेंगे। हम आपके कार्यक्रम की कसौटी उसकी क्रान्तिकारिता से करेंगे। लेकिन जैसे आपने लिखा है : "जिस क्षेत्र में आप काम करेंगे, उस क्षेत्र से पुलिस हट जायगी", तो यह क्रान्तिकारी काम है। वर्धावालों ने हमसे पूछा कि "हम कौन सा कार्यक्रम करें ?" उन सबको लगा कि मैं भूदान का काम बताऊँगा। लेकिन मैंने कहा : "हम यह चाहते हैं कि आप इतना करें कि वर्धा जिले में कोई अदालत में न जाय।" इसके लिए दूसरे कई काम करने पड़ेंगे, यानी एक ही वर में हमने अनेक वरदान माँग लिये। क्रान्तिकारिता ही कार्यक्रम की कसौटी होगी।

मन्दिरों के अश्लील चित्रों का प्रश्न

कुछ लोगों ने हमसे यह भी कहा कि "मन्दिरों में भी कुछ ऐसे चित्र होते हैं, जिन्हें अशोभनीय कहा जा सकता है।" मैंने कहा : "उन मदिरों में न जाना हो, तो नहीं भी जा सकते। लेकिन ये पोस्टर तो आँखों पर सीधा आक्रमण करते हैं। फिर सारे भारत में ऐसे तीन चार ही मदिर होंगे। उस पर साइड लाइट (एकांगी प्रकाश) डालकर पश्चिम के लोगों ने उसकी बखान यों कहकर की कि ये 'पीस आफ आर्ट' (कला के नमूने) हैं।" कुछ लोगों ने उस पर टीका की है। ऐसे मन्दिरों में न जाना हो, तो न जायँ। असख्य भावुक मदिरों में जाते हैं, तो उन मूर्तियों की तरफ देखते भी नहीं। ये पुरातन काल के नमूने हैं। वे दूसरी कोटि में हैं। वह अलग विषय है। हम नये का विरोध करेंगे। याने नये मदिर वैसे बनेंगे, तो हम उसका जरूर विरोध करेंगे। पोस्टर की बात अलग है। उससे तो सीधा आँख पर असर होता है।

पहुँचाने का काम कर सकते हैं। कल आप अगर ऐसा दृश्य खड़ा कर सकें, तो आपने क्रान्ति का काम किया, ऐसा हम कहेंगे। लेकिन आज तो हालत यह है कि 'भूदान-यज्ञ' की १४ पत्रिकाएँ मिलकर लाख ग्राहक होंगे। हम चाहते हैं कि कम-से-कम हिन्दी भूदान के एक लाख ग्राहक बनें। स्वर्गीय लक्ष्मीबाबू ने एक अंक की एक लाख प्रतियाँ छापी थीं। बहुत हिम्मत का काम किया था। हमें ऐसे काम में उत्साह आता है। छोटे-छोटे आँकड़े बेलजियम जैसे देश को शोभा दे सकते हैं।

बत्तीस लाख का कोटा पूरा करने में ही आपकी शान

एक भाई ने सवाल पूछा कि "आपने कहा कि यदि आप काम करेंगे, तो क्रान्ति होगी। आपने 'यदि' कहा, तो क्या आपको विश्वास नहीं है?"

मुझे कितना विश्वास है, यह सवाल नहीं है। आपको कितना विश्वास है, यह सवाल है। सिर्फ विश्वास से नहीं होगा, बातों से नहीं होगा। काम करना होगा। खयाली पोलाव पकाने से नहीं होता। अगर ३२ लाख एकड़ का कोटा पूरा होता है, तो आपकी शान होती है।

रानीपतरा —पूर्णियाँ जिला क्षेत्रीय ग्राम-स्वराज्य समिति
४-२-'६१ के संयोजकों के शिविर में दिया प्रवचन

ब्रह्मचर्य की सार्वत्रिक प्रतिष्ठा आवश्यक : २ :

दुनिया में पुरानी भाषाओं में संस्कृत, लैटिन, ग्रीक और चीनी भाषाएँ हैं। उन सबमें साहित्य भरा है, जिसे आज तक लोग बहुत आदर के साथ पढ़ते हैं। जितना पुराना साहित्य, उतने अधिक आदर के साथ वह पढ़ा जाता है। उसमें मनुष्य को जीवन की उपयोगी विविध सूचनाएँ मिलती हैं।

भारतीय संस्कृति की अमूल्य देन

लेकिन सस्कृत साहित्य में एक विशेष ही बात है, जो दूसरे साहित्यों में नहीं दीखती। वह है सर्वत्र ब्रह्मचर्य की अत्यत प्रतिष्ठा। कोई आजन्म ब्रह्मचारी रहता है, तो बहुत ही अच्छा। लेकिन कम से कम जीवन के पहले २४ साल तक, जब मनुष्य विद्याध्ययन करता है, तब तक उसे ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, यह बात सबके लिए लागू होगी। कम से कम प्रथम २४ वर्षों में सर्वोत्तम गुण विकसित करने का शिक्षण हरएक को मिलना चाहिए। फिर कुछ लोग ब्रह्मचर्य से ही सन्यास में जायेंगे, तो कुछ गृहस्थाश्रम में, और वहाँ से सन्यास में पहुँचेंगे। लेकिन हर हालत में ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा गायी गयी है। गृहस्थाश्रम में भी एक मर्यादा बतायी गयी है। गृहस्थाश्रम केवल सतान सेवा के लिए, अतिथि सेवा के लिए, उपासना के लिए और अध्ययन के लिए है।

यह सब उस जमाने में हुआ, जिस समय भारत में जन सख्या ज्यादा नहीं थी। अब तो जन सख्या बढ़ रही है। इसलिए चिंता हो रही है। लेकिन हमारे ऋषियों ने इसके लिए आदेश उस जमाने में दिया, जब लोक-सख्या बहुत कम थी और जगल ही जगल पडे थे। सतान वृद्धि से जनता को कोई भय नहीं था। अब तो सतान वृद्धि से भय निर्माण हुआ है। इन दस सालों में चीन, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, जावा, सुमात्रा में २० प्रतिशत लोक सख्या बढ़ी है। इसी अनुपात में अमेरिका में यह बढ़ी है। विज्ञान के कारण बच्चे बचते भी हैं, मरते नहीं। पहले जमाने में जब विज्ञान नहीं था, तो बच्चे साल दो साल में मर जाते थे। विज्ञान का ज्ञान नहीं था। जब सतान वृद्धि से कोई तकलीफ नहीं थी, ऐसे जमाने में भी ब्रह्मचर्य की बहुत प्रशसा गायी गयी। हमारे पूर्वजों ने कई प्रयोग किये। उनमें से कई प्रयोग असफल रहे और कई सफल। उसमें उनकी कितनी दूरदर्शिता थी, यह आप सोच सकते हैं। संख्या कम हो या ज्यादा, इसका कोई सवाल न

था। आत्म-शक्ति क्षीण होती है, इसी दृष्टि से सोचते थे। समाज की कोई मुश्किल हो या न हो, इसकी कोई चिंता किये बगैर ब्रह्मचर्य का गुण बताया था।

गृहस्थाश्रम में भी ब्रह्मचर्य

उन दिनों गांधीजी ने भी ब्रह्मचर्य पर जोर दिया था। गृहस्थाश्रम में भी ब्रह्मचर्य पालन करो, यह एक विशेष प्रेरणा दी थी। अकसर माना जाता था कि ब्रह्मचर्य वानप्रस्थों और संन्यासियों के लिए है। गृहस्थाश्रम में ब्रह्मचर्य नहीं आता। साधारण समाज इसे मानता था, लेकिन शास्त्रकार ऐसा नहीं मानते। गांधीजी ने इस विषय को प्रोत्साहन दिया और खुद इसका आचरण भी किया। ब्रह्मचर्य का विचार उनके मन में तीव्रता से चला, तब उनकी उम्र २३-२४ साल की थी और उसे उन्होंने जाहिरा तौर पर कहा। सन् १९०६ में जब उनकी उम्र ३८ साल की थी, जाहिरा तौर पर उन्होंने इसका व्रत लिया और दूसरे को भी प्रेरणा दी। दक्षिण अफ्रीका से यहाँ आने के बाद अनेक को प्रेरणा दी। सार्वजनिक सेवकों के लिए इन गुणों की आवश्यकता वे बताते रहे। हमारे योगी, साधक आदि ब्रह्मचर्य का विचार साधना के लिए मानते थे। लेकिन गांधीजी ने ब्रह्मचर्य निष्काम सेवा के लिए भी माना। इस कारण इस विचार को जोरदार प्रेरणा मिली। यह विचार कई सालों से विकसित होता आया।

देश के पतन का कारण भोग-विलास

लेकिन हम यह भी देखते हैं कि इसके साथ विषय वासना का भी जोर रहा। खासकर संस्कृत-साहित्य में मध्ययुग के कवियों ने जो लिखा, उसमें बहुत अश्लीलता और शृङ्गारिकता पड़ी है। इसीसे हिन्दुस्तान का बहुत पतन हुआ है। दूसरे देशों के इतिहास में भी यह देखा गया है। हिन्दुस्तान के लिए भी हम कहते हैं कि जब देश में भोग-विलास-प्रियता रही, तब देश गिरा और जब वैराग्य तीव्र था, तब देश ऐश्वर्य के शिखर पर था। इन दिनों ये जो महायुद्ध हुए, खासकर दूसरे महायुद्ध में

नैतिकता ढीली पडी और विषय वासना को बहुत बढ़ावा मिला। उसे बड़े पैमाने पर मान्यता मिली। उसमें से जो संतति पैदा हुई, 'युद्ध संतान' कहलायी। इसमें संतति का कोई दोष नहीं है। लेकिन एक ऐसा विचार चला कि चाहे वह संतति व्यभिचार से ही पैदा हुई हो, उसकी ओर दया और करुणा की दृष्टि होनी चाहिए। और ऐसी संतति, जो बिना विवाह के पैदा हुई, उसको 'युद्ध संतान' नाम दिया। हमारे देश के लिए हमारे सैनिक काम करते हैं, उनकी वासना पूर्ति होनी चाहिए, ऐसी अशुद्धि पैदा हुई और नैतिक विचार में शिथिलता आयी। उसीके परिणाम हैं ये सिनेमा, गन्दे चित्र और गन्दे गाने। इस तरह नैतिक गिरावट हुई। इस तरह धीरे धीरे गिरावट होती गयी और इन ५० सालों में बहुत ही जोरदार ह्रास चला। उत्पादक शरीर श्रम की प्रतिष्ठा नहीं रही।

यूरोप की नकल न करें

अब समाज में नव-जीवन आया है और फिर से नव चिंतन शुरू हुआ है। आप देखते हैं कि उन्नीसवीं सदी में जितने महात्मा और महा-पुरुष हुए, उतने एक सदी में कहीं नहीं हुए। उसीके परिणामस्वरूप एक नव-जीवन आया। यह जो स्वराज्य हमें मिला, वह भी उसीका एक छोटा सा परिणाम है। जो आध्यात्मिक जाग्रति देश में हुई, उस हिसाब से यह छोटी सी ही बात मानी जायगी। बड़ी बात तो यह होगी कि गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठा और वानप्रस्थ आश्रम की प्रतिष्ठा किये बिना भारत आगे न बढ़े। भारत के पास साधन सामग्री, यह कितनी भी कोशिश करें, तो भी सीमित रहेगी। आज मुश्किल से हरएक के पास पौन एकड़ जमीन है। इसमें कोई शक नहीं कि विज्ञान बढ़ रहा है। लेकिन दुनिया के बाजार को लूटे बिना संपत्ति नहीं बढ़ती और यूरोप के लोग यह कर चुके हैं।

अभी यंत्र युग आया। यंत्रों से समृद्धि होती है और उससे आप दूसरे को लूट सकते हैं। सब जगह यंत्र होते, तो आप लूट न सकते।

फिर विदेश पर आपका जीवन अवलम्बित नहीं रहेगा और आपका समाज बचेगा। लेकिन यह नहीं होनेवाला है। हिन्दुस्तान कोशिश करेगा, तो भी नहीं होगा। भोग विलास बहुत मात्रा मे हों, शारीरिक शक्ति क्षीण न होने योग्य पौष्टिक खुराक हो और हमेशा ताजे रहें, यह नामुमकिन है। भोग-विलास के साधन ज्यादा पैदा करना भी नामुमकिन ही है। पौष्टिक खुराक और दवा के आधार पर शरीर हमेशा ताजा रखना भी मुश्किल है। इसलिए यूरोप का अनुकरण हम करने जायेंगे, तो जल्दी खतम होंगे, जीर्ण-शीर्ण होंगे और दुनिया के मुकाबले में नहीं टिकेंगे। इन सब बातों पर गम्भीरता से सोचना चाहिए।

सर्वोदय-सेवक गंभीरतापूर्वक सोचें

ब्रह्मचर्य की तो प्रतिष्ठा रहे ही। सिवा गृहस्थ भी एक उम्र के बाद संसार से मुक्त हों। नहीं तो देखते-देखते वे प्रवाह-पतित हो जायेंगे। सत्त्व नहीं टिकेगा, सातत्य-शक्ति भी नहीं टिकेगी। अगर ब्रह्मचर्य-साधना चले, तो देश में सातत्य टिकेगा। हमारे देश में सातत्य का अभाव इसलिए है कि विषय-वासना को नियन्त्रित नहीं किया गया है। चारों ओर—गायन में, संगीत में, साहित्य में, सब जगह, वासना बढ़ायी जाती है। इसलिए सर्वोदय में काम करनेवाले सेवकों को इस पर गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए।

मेरे कहने का आप पर असर होता है या नहीं, यह मैं नहीं सोचता। मैं जोर से बोलता हूँ, इससे आप पर असर हो या न हो, मेरा अपना यह जप है, जो जप बचपन से मैं करता ही आया हूँ।

पूर्णियाँ —क्षेत्रीय ग्राम-स्वराज्य समिति के संयोजकों
५-२-'६१ के शिविर में दिया गया प्रवचन

४

कार्यकर्ताओं से

आप लोगों ने आज सार्वजनिक सभा में सुना कि हमने खादी और ग्रामोद्योग का 'रामजी' की मिसाल दी। भूदान-आन्दोलन को, जो क्रान्तिकारी साबित हुआ और गाँव-गाँव पहुँचा, सीताजी की मिसाल दी। इससे ध्यान में आयेगा कि खादी को हम कितना महत्त्व देते हैं। अंग्रेजी में कहावत है—रोम शहर एक दिन में नहीं बना। वैसे ही ऐसे काम एक दिन में नहीं बन सकते।

खादीवाले अपने किले बनायें

केरल में कम्युनिस्ट-राज्य था। आज नही है। वे हारे हैं, लेकिन चुनाव में जो वोट उनको मिले, वे पहले के चुनाव से कहीं ज्यादा हैं। फिर भी वे हारे। उनको वोट ज्यादा मिलने का कारण यह था कि जब वे राज्य करते थे, तो उन्होंने गाँवों में विचार के किले बनाये थे, यानी अपने विचार के आदमी उन्होंने हर जगह रख दिये। हर कारखाने में अपने आदमी रखे। सरकार चाहती है, तो सब कर सकती है। वैसे ही उन्होंने किया। कारखानों में उनके लोग मजदूरों को साहित्य पढ़कर सुनाते। इस तरह कई आयोजन उन्होंने किये, जो आज भी टिके हैं। उनका विचार टिका। निश्चयपूर्वक हम नहीं कह सकते हैं कि अगर पी० एस० पी० और कांग्रेस अलग हो जायँ, तो फिर से वे आ जायेंगे। दोनों की सम्मिलित शक्ति कम्युनिस्टों के खिलाफ खड़ी हुई थी। बात यह है कि वह एक राजनैतिक पार्टी है, इसलिए वह किला बनाती है। लेकिन खादीवाले अगर अपने किले बनायें, विश्वय-केन्द्र बनायें, तो वे प्रिय बनेंगे; क्योंकि उनकी कोई 'पार्टी' तो नहीं है। उनके इन कदमों से लोगों को खुशी होगी। आज शान्ति-सेना के लिए जो सहानुभूति है, वह और किसी विचार के लिए नहीं है। सभी राजनैतिक दल इसकी आवश्यकता महसूस

करती है। वैसे ही हमारी अहिंसा की मिलिटरी सर्विस है शान्ति सेना और खादी है सिविल सर्विस।

खादी-कार्यकर्ता 'सर्वोदय-पुत्र' बनें

'सर्वोदय-मित्र' का भरोसा क्या है? किसी मित्र ने सालभर में दो-तीन दफा मदद पहुँचायी, तो हम उसका उपकार मानेंगे। बेटे ने हमें मदद दी, तो बेटे का उपकार नहीं मानते। हम बेटे से कहेंगे कि यह तो तुम्हें रोज ही करना चाहिए। आप हक के बेटे हैं, इसलिए हम चाहते हैं कि आप 'सर्वोदय-पुत्र' बनें। खादी का मूलभूत विचार है अहिंसा। पहले जो खादी चलती थी, वह तो लाचारी की खादी थी। यदि आज व्यापार की खादी चलेगी, तो अहिंसा नहीं पनपेगी। आज जरूरत है अहिंसा के बुनियादी विचार को सर्वत्र पहुँचाने और अशान्ति के मौके पर मर-मिटने की। खादी की रक्षा शांति-सेना से होगी। खादी के काम में कत्तिनों से बातें करने तथा उनके घर जाने का मौका मिलेगा। उस निमित्त से और भी काम हो सकते हैं। अगर इसके साथ हम जीवन-परिवर्तन और विचार परिवर्तन का काम करें, तो हमने खादी

करते हैं। साथ ही यह भी महसूस करते हैं कि वे शान्ति सेना नहीं बना पाते और आप ही बनाते हैं। तो यह आपका खास काम हो गया, जो दूसरे नहीं कर सकते। इतनी मानसिक आवश्यकता इस काम के लिए है।

खादी : सिविल सर्विस, शान्ति सेना, मिलिटरी सर्विस

खादी के ग्राहक, कातनेवाला वर्ग, खादी के कार्यकर्ता और आप सब मिलकर एक बहुत बडी ताकत निर्माण कर सकते हैं। उस ताकत से देश को लाभ मिलेगा। गुड का व्यापार हिन्दुस्तान में बहुत चलता है, लेकिन इससे आध्यात्मिक ताक्त बनी, ऐसा नहीं दीखता। गल्ले का व्यापार चलता है, लेकिन क्या उससे राष्ट्र की नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक ताक्त बनी? उससे खाना मिलेगा, इतना ही होगा। वैसे ही खादी का हाल होगा। यदि वे केवल व्यापार चलाने के लिए खादी का काम करेंगे, तो इससे नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक ताक्त नहीं बनेगी। पार्टी के कोई नेता या मन्त्री इधर से उधर जाते हैं, तो झट पेपर में खबर छप जाती है, किंतु आपकी खबर नहीं छपती। कोई कार्यकर्ता बँगलोर जाकर सिल्क अथवा ऊन ले आया, तो अखबार में खबर नहीं छपेगी, क्योंकि उसकी तरफ दुनिया व्यापारी हलचल की नजर से देखती है। आपके हाथों में यह जो खादी का साधन मिला है, इसका उपयोग आप राष्ट्र की शक्ति और सर्वोदय की शक्ति बनाने में कर सकते हैं। सर्वोदय पात्र बनाने का काम भी हम खादीवालों के जरिये करेंगे। हिन्दुस्तान के एक लाख गाँवों में खादी के २५ हजार कार्यकर्ता हैं। मान लीजिये, वे औसत प्रतिदिन २५ सर्वोदय पात्र बनाते हैं, तो २५ लाख सर्वोदय पात्र बन सकते हैं। इन्तजाम के लिए, हिसाब आदि के लिए भडार से आदमी मिल सकते हैं। उसके आधार पर गाँव गाँव में स्वतन्त्र कार्यकर्ता खड़े हों, एक नैतिक और आध्यात्मिक ताकत उनकी बने। खादी का मूल विचार अहिंसा, सत्य, त्याग गाँव गाँव पहुँचे। सरकार की एक सिविल सर्विस होती है और दूसरी मिलिटरी सर्विस, जो सरकार की शक्ति को मदद

करती है। वैसे ही हमारी अहिंसा की मिलिटरी सर्विस है शान्ति सेना और खादी है सिविल सर्विस।

खादी-कार्यकर्ता 'सर्वोदय-पुत्र' बनें

'सर्वोदय-मित्र' का भरोसा क्या है? किसी मित्र ने सालभर में दो-तीन दफा मदद पहुँचायी, तो हम उसका उपकार मानेंगे। बेटे ने हमें मदद दी, तो बेटे का उपकार नहीं मानते। हम बेटे से कहेंगे कि यह तो तुम्हे रोज ही करना चाहिए। आप हक के बेटे हैं, इसलिए हम चाहते हैं कि आप 'सर्वोदय-पुत्र' बनें। खादी का मूलभूत विचार है अहिंसा। पहले जो खादी चलती थी, वह तो लाचारी की खादी थी। यदि आज व्यापार की खादी चलेगी, तो अहिंसा नहीं पनपेगी। आज जरूरत है अहिंसा के बुनियादी विचार को सर्वत्र पहुँचाने और अशान्ति के मौके पर मर-मिटने की। खादी की रक्षा शांति-सेना से होगी। खादी के काम में कत्तिनों से बातें करने तथा उनके घर जाने का मौका मिलेगा। उस निमित्त से और भी काम हो सकते हैं। अगर इसके साथ हम जीवन-परिवर्तन और विचार-परिवर्तन का काम करें, तो हमने खादी की बुनियाद डाली और 'सेल्स' बनाये, ऐसा कहा जायगा। तब साधनों का इस्तेमाल हमने किया, ऐसा माना जायगा। माना जाता है कि मिलिटरी के बिना राज्य सुरक्षित नहीं। अगर सिविल सर्विस भी नहीं हुई, तो राष्ट्र का ढाँचा ही खतम हो जाता है। इसलिए मदद भी काम की देनी चाहिए। गाँववाले भी मदद देते हैं। लेकिन सरकार की मदद पर खादी चलाने के बदले हम उसे अपने पाँव पर खडी करें। खादी के लिए अहिंसा में श्रद्धा का होना बहुत जरूरी है।

खादी अहिंसा की बुनियाद पर चले

पहले के जमाने में राज्य के बड़े-बड़े व्यापारी सौ दो सौ सिपाही भी रखते थे। वह छोटा सा राजा ही था। ईस्ट इण्डिया कंपनी व्यापारी थी, इसलिए उसकी रक्षा के लिए सेना भी थी। जहाँ कहीं झगडा हुआ, तो उस सेना का उपयोग हुआ। शिवाजी ने सूरत लूटा, लेकिन वे

अंग्रेजों की बखार (अनाज के कोठे) न लूट सके, क्योंकि वे लोग शस्त्रों से लैस थे, यानी अपने व्यापार के लिए उन्होंने एक छोटी-सी सेना रखी थी। वैसे ही खादी का व्यापार अहिंसा की बुनियाद पर चले। अहिंसा टिकेगी, तो खादी भी टिकेगी। पूरे हिन्दुस्तान को खादीधारी बनाने के लिए १६ सौ करोड की खादी की जरूरत है और आज १६ करोड की खादी खपती है, यानी ४० साल में हम १ प्रतिशत तक पहुँचे हैं। उस वक्त तो गांधीजी के जैसा प्रचारक मिला था। आज तो उनकी मदद के बिना काम करना है। अत अहिंसा का वातावरण तैयार करनेवाले लोग चाहिए।

हम कहते हैं, शान्ति के लिए सर्वोदय पात्र का आधार हो। यह पूरी मशीन बनानी है। इसे बनाने मे आप मदद कीजिये। खादी का साधन हमारे हाथ मे आया है, तो इस काम के लिए खादीवालों का पूरा समय मिलना चाहिए। यह सिविल सर्विस दगा मिटाने में भी मदद कर सकती है। ३६५ दिन अलग-अलग काम करें, लेकिन मौके पर अशान्ति मिटाने के काम में जरूर जायँ। सीतामढी में जब मौका आया, तो खादीवालों ने मदद पहुँचायी। वहाँ अच्छा काम हुआ। सार यह कि यह सारी मशीन खडी करने में यदि खादीवाले योग देते हैं, तो पक्की बुनियाद बनेगी।

हम गाँव-गाँव में फैलें

एक गाधी जो काम करता था, वह ३० ४० हजार सैनिक करते हैं, क्योंकि वे खुद ही एक पल्टन थे। उनकी ताकत और आवाज बुलंद थी। उस तरह हम भी कर पायेंगे, क्योंकि अब हम गाँव गाँव में पहुँचे हैं। सन् १९१६ में हम गाधीजी के आश्रम में गये। रोज शाम को घूमने जाते। फिर प्रार्थना होती और उसके बाद चर्चा कर हम अलग हो जाते। उन दिनों वे कहा करते : "देखो विनोबा हमें गाँव गाँव फैलना है, इसलिए हम यहाँ दही बना रहे हैं।" यानी वहाँ जामन बनता था। जामन अगर अलग पड़ा रहा, तो दही खट्टा और निकम्मा होगा। अपने देश में अध्यात्म विचार का ऐसा ही हुआ। योगी, मुनि जनता से

अलग होकर ध्यान-धारणा आदि करते थे, तो वे खट्टे और निकम्मे बने। उनका विचार सड गया। कोई बच्चा चिल्लाये, तो उनके ध्यान में खलल पहुँचती। क्रोध इतना था कि वे बात-बात में शाप दे देते। कोई सुन्दरी देखी, तो मोहित हो जाते। कारण यही था कि वे समाज के अंदर घुल-मिलकर नहीं रहे। जनता से अलग पड़ गये। आध्यात्मिक गुणों का विकास, ताकत का विकास लोगों में रहकर ही होता है। इसलिए ४५ साल के बाद भी बापू ने यही मंत्र दिया कि "हमें गाँव-गाँव में फैलना है।" इसे हमें अमल में लाना है। यह नहीं लायेंगे, तो स्वराज्य फीका पड़ेगा, उसे खतरा होगा। स्वराज्य का असली रंग कायम रखना है, इसलिए यह बहुत जरूरी है कि गाँव गाँव में खादीवाले फैलें। सरकारी मदद कहीं-न-कहीं खतम होने ही वाली है। उसके पहले नया यंत्र हम खड़ा नहीं करेंगे, तो टिक न सकेंगे।

मैंने पूछा था कि "सरकार की आज जितनी मदद मिल रही है, वह अगर बन्द हो जाय, तो पहले जितनी ही खादी खपाओगे या ज्यादा?" मुझे जवाब मिला कि उस हालत में खादी की खपत कम होगी। कमान बनाते समय उसे ईंटों का आधार देते हैं। कमान पूरी हो जाती है, तब ईंटें निकाल लेते हैं। यदि वह मजबूत बनी हो, तो ईंटें निकाल लेने पर भी नहीं गिरती। सरकारी मदद ईंटें हैं। वह अगर निकल जाती है, तो आप कह रहे हैं कि सिर्फ कमान ही नहीं, आपका मकान भी गिर जानेवाला है। इसका कारण क्या है? आज लोग सस्ता कपड़ा खरीदने के आदी हो गये हैं। इसलिए इस उत्तर से मुझे दुःख हुआ। हममें यह हिम्मत होनी चाहिए कि सरकारी मदद बंद हो जाने पर भी हम खादी की खपत बढ़ायेंगे। इसीलिए 'नया मोड़' बनाया गया है। यह सब जब सोचता हूँ, तो ध्यान में आता है कि केरल के कम्युनिस्टों ने जो किया, वही करना चाहिए। गाँव-गाँव में अपने किले बनाने चाहिए।

भौवाड्योढ़ी —जिला खादी-कार्यकर्ताओं के बीच

२१-१-'६१

सभी पार्टियों के लिए समान कार्यक्रम

आरम्भ में थोड़ा कहूँ, तो आप लोगों को चर्चा करने में अनुकूलता होगी। बिहार में जिस तरह का संकल्प *किया गया,* वैसा प्रत्यक्ष संकल्प और किसी भी प्रान्त में नहीं किया। और प्रान्तों के लोगों ने—रचनात्मक कार्यकर्ता, राजनीतिक पार्टियों के लोग, सबने—इस काम में आशीर्वाद दिया, सहानुभूति दिखलायी। लेकिन व्यवस्थित रूप का कार्य नहीं किया। बिहार ने संकल्प किया, लेकिन वह पूरा नहीं हुआ। हम सवा दो साल इस प्रदेश मे घूमे। हमने निश्चय जाना कि उसी वक्त जोर दिया होता, तो तभी संकल्प की सिद्धि हो सकती थी, लेकिन इसी काम को पूरा करें, ऐसी इच्छा नहीं थी। पीछे काम करें, तो ताकत बनती है। इसलिए कई बार आगे आने का प्रयास किया, लेकिन पीछे रह गये।

संकल्प अधूरा न छोड़ें

आपने अनेक प्रकार के काम उठाये और अभी भी कर रहे हैं। *आत्मा का भान रखनेवाले मानते हैं कि संकल्प अधूरा छोड़ते हैं, तो* काम काफी फीका पड़ता है। मानव की आत्मा की अप्रतिष्ठा होती है। बिहार में प्रवेश के बाद हम पुराने अनुभवों से सोच रहे थे कि हमसे जो गलतियाँ हुईं, वे दुबारा न होनी चाहिए। इसलिए माँग कम-से-कम और सभी लोगों से हो। इसलिए एक छोटा-सा पैमाना रखा जाय। जो जमीन मिलेगी, जोत की जमीन का हिस्सा हो और उसका बँटवारा भी दाता ही करे। बीच में कोई एजेंसी की जरूरत न रहे। जमीन का प्रमाण-पत्र सर्वोदय-समाज के पास शीघ्र-से शीघ्र पहुँच जाय, बाकी बँटवारे का काम जमीन-मालिक ही कर सकते हैं। सभी कार्यकर्ता पाँच-छह महीने इसी काम में लगें। ग्राम पंचायतों की भी मदद लें, तो पाँच छह महीने के अन्दर यह काम पूरा कर सकते हैं। सभी कार्यकर्ता इसे जल्दी समझेंगे, तो जमीन तत्काल बँटेगी। अब तक ढाई लाख एकड़ जमीन बँट चुकी है और साढ़े तीन लाख भी बँटेगी। लेकिन ऐसे

कामों को समय लगेगा। नयी जमीन जो मिलेगी, वह फौरन बँट जाय, तो और भी अच्छा हो। तो १०-१५ लाख एकड़ जमीन हमें मिलेगी। इससे हमने यह विचार किया कि तरह तरह के कार्य होने चाहिए। इसमे अतर नहीं होना चाहिए। लेकिन अक्सर उल्टा होता है। अभी घर मे आम चुनाव आयेगा। इसके बाद दूसरा चुनाव आयेगा। फिर आपस में, पक्ष पक्ष में चुनाव आयेगा। एक दूसरो के खिलाफ लड़ेंगे, तो द्वेष बढ़ेगा। इस हालत में एक जन शक्ति का काम करें, तो हमें खड़ रहने के लिए एक आधार हो सकता है। लोगों में हम काम करें। लोगो का भला करने की वृत्ति हो, तो वह कर सकते हैं। राजनीतिक पार्टियों को भी चाहिए कि असली काम करें। सकल्प करके काम करना चाहिए।

सबका सहयोग चाहिए

दूसरी बात, घर घर में शाति पात्र की स्थापना हो और उसमें एक मुट्ठी अनाज रोज डाला जाय और वह शाति सेना खड़ी करने की मदद में लिया जाय। पहले जो दान दिया है, वह भी दान है, लेकिन अब अच्छी जमीन का थोड़ा हिस्सा देना है और सबको देना है। सब लोग यह समझें कि और दान दें, तो बड़ा काम होगा। पहले हम छठा हिस्सा माँगते थे, अब बीसवाँ हिस्सा माँगते हैं, क्योंकि हमे अपना पुराना सकल्प पूरा करना है। तिबारा हम बिहार में आयेंगे, तो जमीन नहीं माँगेंगे। ग्राम स्वराज्य की बात चलायेंगे, ग्रामदान का आन्दोलन चलायेंगे, जमीन का नहीं। पी० एस० पी० वाले कहते थे कि बाबा ने हमारा कार्यक्रम ले लिया। लेकिन हमने यह कार्यक्रम उठा लिया और आपने छोड़ दिया, ऐसा तो नहीं। वे सीलिंग (व्यक्तिगत जोत की अधिकतम सीमा) बनाने की बात करते हैं, लेकिन उससे कुछ निकलनेवाला नहीं है। हमें बिना सीलिंग बनाये भूदान के जरिये प्रेम से जमीन मिली है। जनसघवाले कहते हैं, भारतीय सस्कृति का कार्यक्रम बाबा ने चलाया

है, यह तो हमारा कार्यक्रम है। कम्युनिस्ट भी कहते हैं, इसलिए सब पार्टियों का इसमें सहयोग मिलना चाहिए।

हम 'असम' जा रहे हैं। आप सब सहयोग देकर यह काम पूरा करेंगे, तो बिहार के जरिये एक नयी मिसाल दुनिया के देशों के लिए होगी। हम आशा करते हैं कि बिहार में आपका सहयोग हमें मिलेगा।

रानीपतरा —विभिन्न राजनीतिक दलों के
४-२-'६१ प्रतिनिधियों के बीच

भू-समस्या का एकमात्र समाधान : भूदान : ३ :

इस यात्रा को दस साल हो रहे हैं। विज्ञान के जमाने में दस साल का समय छोटा नहीं होता। इस बीच भूदान-आन्दोलन ने सब प्रान्त में हवा बनायी। हम उत्तर प्रदेश में थे। उन्होंने प्रथम संकल्प पूरा कर लिया। वहाँ बिहार के कार्यकर्ता, जिनमें रचनात्मक कार्यकर्ता भी थे, हमारे पास आ पहुँचे और कहा कि बिहार के लिए तीन लाख एकड़ का कोटा रखा जाय। उत्तर प्रदेश ने पाँच लाख का संकल्प किया था। आखिर बारगेनिंग हुआ और चार लाख एकड़ हमने कबूल किया।

सब पार्टीवालों को समझाया कि इसे उठा लो। लक्ष्य एक पर ही रखकर उसे पूरा करें। बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने बा कायदा मीटिंग कर बत्तीस लाख एकड जमीन का प्रस्ताव मान लिया। दूसरी पार्टियो ने भी प्रस्ताव मान लिया। सब लोगों की ताकत मिली और काम हुआ। यह पहला ही प्रयोग था कि इतना बडा कोटा कांग्रेस ने मान्य कर प्रस्ताव रखा और पास किया। उसके पहले सियासती दल ने ऐसा कोटा मान्य नहीं किया था। दूसरे प्रांत ने सहानुभूति से प्रस्ताव को सर्वसम्मति दे दी थी, लेकिन निश्चित कोटा मान्य करके ऐसा प्रस्ताव नहीं किया। बिहार का प्रस्ताव सभी राजनीतिक पार्टियों और रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने प्रांतीय प्रतिज्ञा के रूप में मान्य किया। अब तक बीस बाईस लाख एकड जमीन मिली और ढाई लाख एकड बँटी भी है। और तीन-चार लाख एकड़ बँट सकती है।

संकल्प पूर्ति के लिए

हमने फिर से बिहार मे कदम रखा और बेचैनी हुई। पुराना संकल्प पूर्ण किये बिना कोई भी काम अच्छा हो, तो भी पूरा नहीं होगा। उससे आत्मा की प्रतिष्ठा नहीं होगी। शेष रहा संकल्प—दस लाख एकड जमीन पूरी होनी चाहिए। हिसाब करने से ध्यान में आया कि छोटी माँग करने से दान मिल सकता है। इसलिए हमने बीघे में एक कट्ठा की माँग की। हर मालिक, जितने बीघे जमीन पास में हो, उतने कट्ठे दान में दे। इससे दस लाख एकड जमीन मिल सकती है। जमीन जो दान में दें, वह तर हो, देने योग्य हो और दाता ही उसे स्वयं बाँट दे।

कानून से जमीन का मसला हल न होगा

इधर कुछ सुझाव लेवीवाला आया। उसमें हमें दिलचस्पी नहीं। भूमि का बँटवारा दिलजमई नहीं करेगा, अगर अहिंसा और प्रेम से वह न हो। देश में जमीन पर पुरानी मिलकियत कायम रहेगी, तो हम कुछ आशा नहीं कर सकते। हर पाँच साल बाद नयी राज्य-व्यवस्था और नये राज्यकर्ता आ सकते हैं।

है, यह तो हमारा कार्यक्रम है। कम्युनिस्ट भी कहते हैं, इसलिए सब पार्टियों का इसमें सहयोग मिलना चाहिए।

हम 'असम' जा रहे हैं। आप सब सहयोग देकर यह काम पूरा करेंगे, तो बिहार के जरिये एक नयी मिसाल दुनिया के देशों के लिए होगी। हम आशा करते हैं कि बिहार में आपका सहयोग हमें मिलेगा।

रानीपतरा —विभिन्न राजनीतिक दलों के
४-२-'६१ *प्रतिनिधियों के बीच*

भू-समस्या का एकमात्र समाधान : भूदान : ३ :

इस यात्रा को दस साल हो रहे हैं। विज्ञान के जमाने में दस साल का समय छोटा नहीं होता। इस बीच भूदान-आन्दोलन ने सब प्रान्त में हवा बनायी। हम उत्तर प्रदेश में थे। उन्होंने प्रथम संकल्प पूरा कर लिया। वहाँ बिहार के कार्यकर्ता, जिनमें रचनात्मक कार्यकर्ता भी थे, हमारे पास आ पहुँचे और कहा कि बिहार के लिए तीन लाख एकड़ का कोटा रखा जाय। उत्तर प्रदेश ने पाँच लाख का संकल्प किया था। आखिर बारगेनिंग हुआ और चार लाख एकड़ हमने कबूल किया।

सब पार्टीवालों को समझाया कि इसे उठा लो। लक्ष्य एक पर ही रख-कर उसे पूरा करें। बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने बा कायदा मीटिंग कर बत्तीस लाख एकड़ जमीन का प्रस्ताव मान लिया। दूसरी पार्टियों ने भी प्रस्ताव मान लिया। सब लोगों की ताकत मिली और काम हुआ। यह पहला ही प्रयोग था कि इतना बड़ा कोटा कांग्रेस ने मान्य कर प्रस्ताव रखा और पास किया। उसके पहले सियासती दल ने ऐसा कोटा मान्य नहीं किया था। दूसरे प्रांत ने सहानुभूति से प्रस्ताव को सर्वसम्मति दे दी थी, लेकिन निश्चित कोटा मान्य करके ऐसा प्रस्ताव नहीं किया। बिहार का प्रस्ताव सभी राजनीतिक पार्टियों और रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने प्रांतीय प्रतिज्ञा के रूप में मान्य किया। अब तक बीस-बाईस लाख एकड़ जमीन मिली और ढाई लाख एकड़ बँटी भी है। और तीन-चार लाख एकड़ बँट सकती है।

संकल्प पूर्ति के लिए

हमने फिर से बिहार में कदम रखा और बेचैनी हुई। पुराना संकल्प पूर्ण किये बिना कोई भी काम अच्छा हो, तो भी पूरा नहीं होगा। उससे आत्मा की प्रतिष्ठा नहीं होगी। शेष रहा संकल्प—दस लाख एकड़ जमीन पूरी होनी चाहिए। हिसाब करने से ध्यान में आया कि छोटी माँग करने से दान मिल सकता है। इसलिए हमने बीघे मे एक कट्ठा की माँग की। हर मालिक, जितने बीघे जमीन पास में हो, उतने कट्ठे दान में दे। इससे दस लाख एकड़ जमीन मिल सकती है। जमीन जो दान में दें, वह तर हो, देने योग्य हो और दाता ही उसे स्वयं बाँट दे।

कानून से जमीन का मसला हल न होगा

इधर कुछ सुझाव लेवीवाला आया। उसमें हमें दिलचस्पी नहीं। भूमि का बँटवारा दिलजमई नहीं करेगा, अगर अहिंसा और प्रेम से वह न हो। देश में जमीन पर पुरानी मिलकियत कायम रहेगी, तो हम कुछ आशा नहीं कर सकते। हर पाँच साल बाद नयी राज्य-व्यवस्था और नये राज्यकर्ता आ सकते हैं।

इस पर यह साधारण आक्षेप किया जाता है कि "यदि जमीन का बँटवारा करेंगे, तो उसके टुकडे हो जायेंगे। जमीन के टुकडे न पडें, ऐसा लगता हो, तो कानून बनाओ।" लेकिन कानून के मुताबिक तो आज के जमाने में एक कट्ठे के भी चार टुकडे बन सकते हैं। फिर भी आक्षेप सिर्फ इसी पर किया जाता है कि दान माँगने से टुकडे पडेंगे। वास्तव में दान से तो हजारों का दिल जुड़ता है। आपके कानून से तो न सिर्फ जमीन के टुकडे पडते हैं, बल्कि अनुपस्थित भी भू स्वामी बनता है। लडकियों को भी जमीन का हक हमने दे दिया है। इस गाँव की लडकी दूसरे गाँव में जायगी और जमीन की मिल्कियत इस गाँव में रहेगी। उस गाँव की लडकी इस गाँव में आयगी और माल्कियत दूसरे गाँव में रहेगी, तो अनुपस्थित भू स्वामित्व बढेगा ही। तो, जमीन के दान से टुकडे पडते हैं, यह आक्षेप बेकार है। आप कानून भी बदल नहीं सकते और जमीन का बँटवारा भी नहीं कर सकते, तो सत्ता हमारे हाथ में दे दो। हम दिखायें, कैसा होता है बँटवारा। सब ढोंग हो रहा है। जरा भी हिम्मत होती, तो स्वराज्य के बाद फौरन कानून बनाते। इतनी जमीन कानून से भी बाँट सकते थे।

हम केरल में गये थे, तो वहाँ की कम्युनिस्ट सरकार १५ एकड वेटलैण्ड (तर जमीन) की सीलिंग बनाने की सोच रही थी। वहाँ के मुख्यमन्त्री हमसे मिले। मैंने कहा "पन्द्रह एकड तर जमीन की सीलिंग करेंगे, तो थोडी जमीन मिलेगी।" उन्होंने कहा : संसदीय पद्धति से राज्य करना चाहते हैं, तो मध्य वर्ग को नाराज नहीं करना होगा। उन्हें नाराज करेंगे, तो अगले चुनाव में वोट कैसे मिलेंगे? कम्युनिस्ट पार्टी यह नहीं कर सकती, तो कांग्रेस क्या कर सकती है? यदि हिन्दुस्तान में जमीन का मसला कानून के जरिये हल होगा, तो हम ऐसा करनेवाले को 'महावीर चक्र' देने को तैयार हैं, लेकिन यह होनेवाला नहीं। कोई भी सरकार मतदाता को नाराज नहीं कर सकती। सूली भाति करना चाहें, तो यह काम हो सकता है।

विज्ञान के जमाने में पहाड़ भी देशों को अलग करने से इनकार कर रहे हैं। हिमालय चैलेन्ज कर रहा है कि चाहे प्रेम से या संघर्ष से, लेकिन एक-दूसरे के संपर्क में रहना ही होगा। या तो एक-दूसरे के खिलाफ होकर मर मिटें या प्रेम से मिलकर रहें। लेकिन संपर्क में आना ही है। जर्मनी और फ्रांस के बीच एक छोटे-से वार्ड का सवाल था, तो उसके लिए दो विश्वयुद्ध हुए। तो हिन्दुस्तान और चीन की इतनी बड़ी सीमा है। इस मसले को अगर हिंसा से हल करना चाहते हैं, तो दुनिया का नाश होगा।

भूदान के सिवा रास्ता नहीं

भूमि का मसला इस तरह तय होनेवाला नहीं। या तो भूमि का मसला हल होगा या मानव का ही मसला हल हो जायगा। मानव होकर मसला हल नहीं होता, तो क्या मानव मिटकर वह हल होगा? इसलिए मैंने कहा कि सियासत और मजहब दोनों पुराने जमाने के खँडहर हैं—संकुचित दृष्टि के हैं। विज्ञान के जमाने में ये टिकने के नहीं। मिलिटरी के हाथ में सत्ता जायगी, तो वह एक दिन सभी राजनीतिक पार्टियों पर ताले लगा देगी। तब उनकी क्या हालत होगी? आज सरकार में ५५ लाख नौकर हैं। चालीस करोड़ में तीन करोड़ लोगों को मध्यम-वर्ग बनाया गया। इनसे कुछ भी उत्पादन नहीं होता। उनकी चोटी सरकार के हाथ में रही, तो सत्ता मजबूत हो गयी। मैं भिखारी होऊँ, तो भी स्वतन्त्र वृत्ति रखूँगा और सरकार मुझे पसन्द नहीं आयी, तो वैसा कहूँगा। लेकिन जिनका पूरा जीवन सरकार के हाथों में है, सरकार के वे ५५ लाख नौकर ऐसा नहीं कर सकते। भीष्माचार्य ने कहा था कि 'अर्थस्य पुरुषो दासः'। वही हालत है आपके मध्यमवर्ग की। वे सरकार पर निर्भर हैं और सरकार की ताकत फौज पर निर्भर है। यदि ऐसा आदमी आये, जिसके हाथ में मिलिटरी हो, तो ये उसके गुलाम बन जायँगे। सैनिकवाद शुरू हो जायगा, तो ये ५५ लाख लोग उसके नौकर हो जायँगे।

तात्पर्य, सेना को रखा है सरकार ने देश की रक्षा के लिए। लेकिन अगर देश पर सेना का ही हमला हुआ, तो क्या होगा? आज की डेमोक्रेसी तो नौकरशाही पर खड़ी है। ऐसी हालत में जमीन का मसला कौन हल करेगा? भूमि का मसला सरकार कानून के जरिये हल करेगी, यह मुमकिन नहीं। नागपुर का प्रस्ताव हुआ, लेकिन सहकारिता के सवाल को हल नहीं कर सके। नागपुर-प्रस्ताव जिनको पसन्द नहीं, ऐसे लोग सरकार के मंत्रिमंडल में भी रह सकते हैं। इस हालत में भूदान का आश्रय लेना होगा या नहीं?

अब यह कहा जा रहा है कि 'यह धीमी प्रक्रिया है'। मैं धीमी प्रक्रिया छोड़ने को तैयार हूँ, अगर कोई जल्दी की प्रक्रिया बताये। सार यह है कि भूमि के बँटवारे का मसला हम हल करना नहीं चाहते। उसीके लिए ये सारे बहाने हैं। वास्तव में ग्रामदान का काम नैतिक और भौतिक उन्नति के लिए लाभदायक है। हम हमेशा कहा करते हैं कि यह वेलफेयर स्टेट (कल्याणकारी राज्य) नहीं, इलफेयर स्टेट (अनिष्टकारी राज्य) है। एक बार हमसे किसीने कहा कि "बाबा का प्रोग्राम गांधीजी के प्रोग्राम जैसा अव्यवहार्य होता है। भूमि माँगने के प्रोग्राम से मसला कैसे हल होगा?" हमने कहा : "कैसे हल होगा, यह आप करके बताइये। कानून तो आपके हाथ में है। हम अपनी यात्रा बन्द कर आपके काम में लग जायँगे।" लेकिन साफ है कि अभी तक सिवा भूदान के जमीन का मसला हल करने का एक भी रास्ता नहीं दिखा।

इसलिए हरएक अपनी जमीन अपने हाथों से बाँट दे। इससे जमीन-मालिक और मजदूरों के बीच प्रेम पैदा होगा। दोनों के बीच विश्वास पैदा होगा। आज मालिक का मजदूरों के प्रति अविश्वास है और मजदूरों का मालिक पर। लेकिन इस तरह नहीं रहना चाहिए। इसीलिए हमने यह कार्यक्रम दिया है।

की बैठक हुई। वहाँ पं० नेहरू ने कहा कि 'सर्वोदय' शब्द अच्छा है। यह शब्द 'सोशलिस्टिक' (समाजवादी) शब्द से बेहतर है। फिर भी 'सर्वोदय' का नाम नहीं ले सकते। नाम लें, तो उस नाम के लिए पूरा न्याय दे सकेंगे या नहीं, यह कह नहीं सकते। फिर भी हम उसकी ओर जाना चाहते हैं। इसलिए कांग्रेसवालों को सर्वोदयवाला होना चाहिए। यह पुरानी कांग्रेस का विचार था। वह गांधीजी की कांग्रेस थी। इसलिए स्वतः कांग्रेसवाला सर्वोदयवाला होना ही चाहिए। ऐसी हालत में ३२ लाख एकड़ जमीन के संकल्प को पूरा करने में कुल ताकत कांग्रेस को लगानी चाहिए। यह समय सर्वोदय के लिए कृपार्द्र है। ईश्वर की कृपा बरस रही है। इसलिए सख्त जमीन तर हो गयी है। मामला ठीक है। आम पकने को है। और बीघे में कट्ठा की बात लोगों ने अपना ली है। इसलिए आप लोग भी इसी पर जोर लगायें। दस हजार पचायतें हैं, उनका भी उपयोग करें। तीन दिसंबर तक यह काम—सर्वोदय पात्र और बीघे में कट्ठे की बात—पूरा करना है।

आज बिहार लगभग अनाथ है, खासकर श्रीबाबू के जाने के बाद। इससे हम निराश नहीं होंगे। हिन्दुस्तान की यह शान है कि नये नये लोग प्रकट होते हैं। हमने कहा था कि बिहार में नेताओं की भी जातियाँ पूछी जाती हैं। तो यहाँ आपस के भेद मिटाकर काम में जोर दें। यह काम पूरा करने के लिए हमने तारीख दे दी है। डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, हमारे राष्ट्रपति के अगले जन्म दिन तक यह काम पूरा होना चाहिए। हमारे राष्ट्रपति दो बार यह सम्मान की जगह पाये हुए हैं। अब तीसरी बार वे इस बंधन में नहीं पड़ेंगे। अभी तक दुबारा वे सौजन्य से ही वहाँ रहे। इस पद से वे मुक्त होकर बिहार में आयेंगे, तो हमारे काम के लिए भी उनके मार्ग दर्शन का लाभ होगा। उनके आगमन के पहले यह काम पूरा होना चाहिए। सबकी ताकत इसमें लगनी चाहिए।

पूर्णिया
५-२-'६१

—जिला कांग्रेस-कार्यकर्ताओं के बीच

भू-समस्या के समाधानार्थ दान-धारा बहाइये : ४ :

आज छपरा से एक तार आया है। सौ दान पत्रों के जरिये ६० एकड जमीन हमारी बिदाई के अवसर पर मिली है। आज हमने एक शब्द इस्तेमाल किया 'दान धारा'। गंगा की धारा खंडित होगी, तो बिहार पर आपत्ति आयेगी। किसी भी प्रान्त पर आपत्ति आयेगी। 'इकॉनॉमी' (अर्थशास्त्र) खतम होगी। गंगा की धारा से 'दान धारा' कम महत्त्व की नहीं है। यह दान का प्रक्रिया यहाँ की हवा में है। नया पौधा लगाने की बात नहीं। दान को ठीक रास्ता देने की बात है। भाप की ताकत क्या होती है, इसकी खोज नहीं हुई, तब तक उसकी ताकत बेकार जाती थी। उसे किस तरह पकडा जाय, यह हम नहीं जानते थे। बाद में मनुष्य ने भाप का उपयोग करना सीखा। वैसे ही दान भी व्यर्थ जाता था। उसे ठीक ढंग से उपयोग में लाया जाता, तो उससे शक्ति पैदा होती। भूदान के जरिये यह मौका मिला है। दुनिया के सामने आज ये विकल्प हैं दान धारा या कत्ल। इसमें से कौन सा रास्ता लेना है, यह दुनिया तय करे।

लेकिन कम्युनिस्टों का इस तरह शिकार नहीं कर सकते। विचार का मुकाबला विचार से ही करना होगा। इसलिए हमने दान धारा चलायी है।

सर्वोदय पद्धति से कुछ बन सकता है, यह हमने देखा। व्यक्तिगत तौर पर लोगों को मदद पहुँचाना और दान का पुण्य हासिल करना, यह बात यहाँ के लोगों को मालूम थी। लेकिन सामूहिक तौर पर दान देना भूदान से ही बना। उससे एक श्रद्धा पैदा हुई। 'येलवाल' में सब पक्षों के बड़े बड़े नेताओं का परिचय हुआ। उसमें उन्होंने ग्रामदान के विचार को प्रोत्साहन दिया था। एक प्रस्ताव सबके हस्ताक्षर से पास हुआ और उन्होंने इस विचार को उत्साहवर्द्धक समर्थन दिया। और प० नेहरू ने कहा कि ग्राम दान एक टिकाऊ चीज है। नम्बूदरीपाद और जेड० अहमद ने इसे बहुत पसन्द किया। लाखों एकड़ जमीन बिहार ने दी। पता चला कि कानून के सिवा दूसरे तरीके से भी मसला हल हो सकता है। जैसे बारिश की शुरुआत में गन्दा पानी आता है, वैसे ही शुरुआत में सब तरह के नदी नाले, यानी सब तरह की जमीन इसमें मिली। लेकिन अब हमने तय किया है कि हम जोतवाली जमीन लेंगे।

केरल में कम्युनिस्टों ने सीलिंग की बात की। मैंने कहा : सीलिंग से क्या मिलनेवाला है? तो उन्होंने साफ कहा कि हम यह मसला कानून से हल नहीं कर सकते, यह हमें मालूम है; क्योंकि मध्यम वर्ग को हम नाराज नहीं कर सकते। इसलिए हम कहते हैं कि कानून के जरिये मसला हल होना सभव नहीं, और यह कबूली कम्युनिस्टों ने भी की।

सर्वोदय-विचार व्यावहारिक है

बात ऐसी है कि पाँच हजार ग्रामदान हुए—याने ४ लाख कुछ हजार नहीं हुए तो कौन बड़ी बात है। बात यही बड़ी है कि अहिंसा से काम हो सकता है, यही भावना पैदा हुई। अभी तक सर्वोदय विचार बहुत अच्छा है, ऐसी भावना थी। लेकिन व्यवहार में अमल में लाने जैसी चीज नहीं है, ऐसी वृत्ति थी। जब ग्रामदान हुए, तब यह भावना

पैदा हुई कि सर्वोदय विचार अमल में ला सकते हैं। इसलिए कुल नेताओं ने उसका समर्थन किया।

इसके आगे अगर हम लोगों ने काम नहीं किया, तो कुल सर्वोदय-विचार व्यवहार शून्य है, ऐसा होगा। यही अर्थ होगा कि विनोबा जैसा एक पुरुष था, इसलिए इतना काम हुआ। ऐसे काम मामूली लोगों के नहीं होते। चंबल में चमत्कार हुआ, फिर भी लोग यह नहीं मानते हैं कि वह बहु व्यावहारिक ढग है। इसलिए चंबल में 'बाबा' का भी काम होगा और पुलिस भी रहेगी, ऐसा हम आज मानते हैं।

कहने का मतलब यह है कि हम लोगों को इस ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। यह नहीं कि कोई काम नहीं करता। सज्जन देखकर तो नहीं रहेंगे। भारत हमारा देश है—उसके हित के लिए हम कुछ-न-कुछ करेंगे। इस तरह हर सज्जन कुछ-न-कुछ काम करते ही हैं, लेकिन समुद्र में दो बोतल शहद डालकर उसे मीठा करना चाहें, तो वह कैसे मीठा होगा? इसलिए हमें बहुत करना होगा। चालीस साल से खादी का आन्दोलन चला। महात्मा गांधी के होते हुए, उनके जैसे महान् व्यक्ति का समर्थन मिलने पर भी आज मुश्किल से एक प्रतिशत खादी चल रही है। बेकारों को कुछ काम देने की बात खादी ने की। लेकिन उससे क्रान्तिकारी काम नहीं हुआ। इसलिए हमने भूमि का सवाल लिया और क्रान्ति की बात की।

बुनियादी काम याद रखिये

बिहार में हमने 'लेवी' के बदले 'देवी' कहकर अपना शब्द चलाया। आपने और हमने दूसरे तीसरे काम किये। उनकी कीमत है, लेकिन बुनियादी काम को नहीं भूलना चाहिए। चटनी और पापड़, भोजन में रोटी के साथ ही शोभा देते हैं। कोई भी ग्रामदानी गाँव आप वातानुकूलित (एयर कण्डीशण्ड) नहीं बना सकते। आसपास का वातावरण ठीक बनाना होगा।

अभी हम आपके नजदीक ही असम में जा रहे हैं। हम चाहते हैं

कि बिहार में आप जोर लगायें। इसमें हरएक का समय मिलना चाहिए। मान लीजिये, बिहार पर विदेशी का हमला हुआ, तो क्या वहाँ सारा हिन्दुस्तान मदद के लिए नहीं आयेगा? इस काम में भी कुल हिन्दुस्तान की ताकत लगेगी, तो मजा आयेगा। लेकिन जो खुद काम करता है, उसे दूसरे मदद करते हैं।

इस काम के लिए तीन दिसम्बर की तारीख कैसे सूझी—यह मैं नहीं कह सकता। पूज्य पुरुषों की पूजा समाज की उन्नति का बहुत बड़ा साधन है। अगले साल राष्ट्रपति आपके पास मुक्त होकर आयेंगे, ऐसा मान लेना चाहिए। इस काम से जो स्वागत आप उनका करेंगे, उससे बेहतर स्वागत दूसरा नहीं होगा।

किसनगंज
९-२-'६१

—असम जाते समय बिहार के
कार्यकर्ताओं के बीच

विनोबा-साहित्य

१. भूदान-गंगा

भूदान-यज्ञ-आन्दोलन के आरम्भ १८ अप्रैल '५१ से १३ अक्तूबर '५७ तक की ६॥ साल की पदयात्रा के महत्त्वपूर्ण प्रवचनों का संकलन। सात खण्डों में प्रकाशित। हरएक में पृष्ठ लगभग ३००। सातों खण्डों का मूल्य १०.५०। एक खण्ड का मूल्य १.५०। मराठी और गुजराती में भी प्राप्य।

२. ग्रामदान

ग्रामदान की कल्पना में धर्म, अर्थ और विज्ञान का विचार किस प्रकार ओतप्रोत है, इसका विस्तृत एवं व्यापक विवेचन। तीसरा परिवर्द्धित संस्करण। मूल्य १.००।

३ मोहब्बत का पैगाम

जम्मू-कश्मीर की पदयात्रा में विनोबाजी ने वहाँ लगभग १५० प्रवचन किये। इन प्रवचनों में बाबा ने कश्मीर के सौंदर्य की सराहना के साथ-साथ सियासी और मजहबी मसलों पर जो संदेश दिया है, वह हृदय को सीधा छूता है। पृष्ठ ४५०। मूल्य २.५०, सजिल्द ३.००। उर्दू में भी प्राप्य मूल्य ३.००।